शेठ केशवलाल छगनलाल तरफथी भेट.

श्रीमद् धर्मसिंहजी

अने

श्रीमद् धर्मदासजी

[सामायिक, आयुष्यकर्म अने क्षायक सम्यक्त्वनी पर्यालोचना साथे]

लेखक

मुनिराज श्री हर्षचंद्रजी

(दरियापुरी संप्रदाय)

प्रकाशक

शेठ नागरदास केशवलाल

कलोल (उ. गुजरात)

प्रथम आवृत्ति संवत १९८०

प्रत ५०० इ. स. १९२४

श्री वीरशासन प्रींटींग प्रेसमां केशवलाल बुलसुखभाइये छाप्युं. ठे. हाजापटेलनी पोळ-अमदावाद.

अमूल्य.

शाणा सज्जन सर्व प्रेम करशो वेत्ता तमो तत्त्वना,
आपे कोई लखी निबंध करथी, सारा करे सुमना;
याञ्चा शीद करुं यदि गुण नथी ? जो सत्त्व छे वस्तुमां,
तो थाशे सहज प्रसिद्ध जनमां कीर्त्यर्थता इष्ट ना.

प्रस्तावना.

मुनिराज श्री हर्षचंद्रजी स्वामी कलोलमां १९७९ नी सालनुं चातुर्मास रह्या हता त्यारे उपाश्रयनी अंदर एकांतमां खंतपूर्वक कांई लखता करता हता. ज्यारे मारा जाणवामां आव्युं के एटला ध्यानपूर्वक ते जे कांई लखता हता ते श्री धर्मसिंहजी तथा श्री धर्मदासजीना जीवनचरित्र विषे तथा सामायिक, आयुष्यकर्म अने क्षायक सम्यक्त्व विषे लोकोमां पेसी गएला केटलाक अनिष्ट विचारोने यथेष्ट दिशाए परिवर्तन करवा माटेनो लघु ग्रंथ लखता हता त्यारे ए ग्रंथ प्रसिद्ध करीने कृतार्थ थवानो मने अभिलाष थई आवेलो, ते आजे पूरो पडे छे.

आ पुस्तक गुजरात तथा माळवा, मारवाड, पंजाब वगेरे स्थळना जैन भाईओने उपयोगी थई पडे तेटला माटे गुजराती भाषा छतां शास्त्रीय लिपिमां छाप्युं छे.

पुस्तक अधिकारीना हाथमां ज जवा पामे एवी खात्री राखीने तेनुं वितरण करवानो मारो संकल्प छे. तेनुं कांई मूल्य राख्युं नथी पण जो आ पुस्तक योग्य वाचकोना हाथमां जईने कांई पण सारी असर करनारुं थशे तो हुं मने कृतकृत्य थएलो मानीश.

शेठ नागरदास केशवलाल.

उद्देश.

नाना नाना लेखवाळुं आवुं एक नानकडुं पुस्तक जन समाज आगळ मूकुं ते पेहलां तेनो शुं उद्देश छे, ए कहेवुं कंईक आवश्यक होवाथी अत्र कांईक जणाववा इच्छुं छुं.

विक्रम संवत् १९७८ ना वर्षमां आठ मासना समय दरम्यान काठियावाडना केटलाक भागोमां लेखकनुं विचरवुं थयुं हतुं, ते वखते श्रीमान् धर्मसिंहजी ने श्रीमान् धर्मदासजी विषे वार्ता निकळतां बन्नेमां प्रथम कोण ए विषे विचारो भिन्न भिन्न व्यक्तिओ पासेथी सांभळवामां आव्या. केटलाको एम कहेवा लाग्या के तेओ परस्पर विरोधी हता, ज्यारे बीजाओ एम कहेवा लाग्या के धर्मसिंहने स्थान न मळ्युं एटले तेमणे जुदा पडी आठ कोटि चलावी; एटले के धर्मसिंह ए नामनी एक सामान्य व्यक्ति हती तेना विषे विशेष एवुं कांई जाणवा जेवुं छे नहि. आम सामान्य किंवा सुज्ञ व्यक्तिओ तरफथी विविधता के अनेकता लेखकना सांभळवामां आवी. उपरांत एम पण सांभळवामां आव्युं के सामायिक आठ कोटिए थाय छे एवुं क्यांए सूत्रमां नथी, ने छ कोटिए थाय छे एवुं तो घणां स्थळे छे; तेम बधा लोको सामायिक छ कोटिए करे छे पण आठ कोटिए करता कोईने सांभळ्या नथी. आम गच्छ बाह्य अनेक व्यक्ति रूप समाजपर अज्ञानानो अंधकारपछेडो ओढायेलो जोई कोने लाग्या विना रहे ?

आथी आ विषे सत्य हकीकत शुं छे, ए बहार मूकवानी इच्छा लेखकने स्फुरी आवी हती, पण त्यारपछी केटलोक

वखत एम ने एम वीती गयो. पुनः ए वार्ता हमणां कांईक प्रसंग विचारमां उपस्थित थतां स्फुरी आवी, ने विचार्युं के ए संबंधी विशेष नहि तोपण यत्किंचित् जनसमाजना हित खातर लखाय तो सारुं.

आथी श्रीमान् धर्मसिंहजी ने श्रीमान् धर्मदासजी विषे ऐतिहासिक दृष्टिए जे वस्तु उपलब्ध थई हती ते आमां प्रथम दाखल करी छे. त्यारपछी सामायिकनी ने प्रसंगोपात्त आयुष्यकर्मनी ने क्षायक सम्यक्त्वनी समीक्षा दाखल करी छे. आ समीक्षा करवानो आशय ए छे के भिन्न भिन्न गच्छ वा व्यक्तिओ परंपराद्वारा मळेली हकीकतने अविचार असमजणथी पकडी राखे छे, ने आग्रह ममत्व करी सत्य वस्तुपर तेओ आववा इच्छता नथी, तेओने आ वस्तु पसंद पडे तो तेओ अवश्य आ मूकेला विषयपर ध्यान खेंचे एम इच्छुं छुं.

सामायिक विषयनी समीक्षा करतां पूर्ववादी तरफथी परंपर मानी लीधेला विचार ए ज प्रमाण, ए सिवाय बीजुं कांई प्रमाण न मळवाथी, मूकवामां आव्युं छे. उत्तरवादी तरफथी मात्र एकज प्रमाण मळतां तेने आ स्थळे मूक्युं छे. आयुष्यकर्म ने क्षायक सम्यक्त्व विषे तो पूर्व पक्षना पुष्कळ पुरावा छे. ए संबंधी विवेचन विशेष आवश्यक, कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, कर्म ग्रन्थ विगेरे घणां पुस्तकोमां छे. तोपण कर्मप्रकृतिमां अने पंचसंग्रहमां ए संबंधी विशेष व्याख्या होवाथी ने बीजाओए तेओनां प्रमाण लीधेलां होवाथी अत्र तेमांथी केटलाक खास मुद्दासर मूळ—वृत्ति के अर्थमांथी केटलोक भाग लेवामां आ-

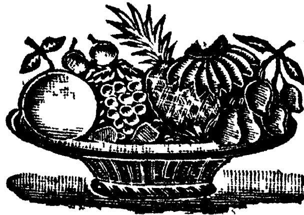
च्यो छे. आनी सामी बाजुनां प्रमाणो आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, प्रज्ञापना, उत्तराध्ययन विगेरेमांथी लेवामां आव्यां छे.

वाचको ! तमोने आ वस्तु प्रमाणभूत लागे वा ना लागे ए तमारी बुद्धिनो विषय छे. लेखके तमारी समक्ष बन्ने बाजुना रदीया आप्या छे. ए रदीया ग्रन्थोना के आगमोना मूल वृत्ति के अभिप्राय—अर्थमां जेम हता तेम मात्र तमारी समक्ष मूक्या छे. तेमांथी यत्किंचित् पण फेरफार करी समजणपूर्वक के धृष्टतापूर्वक मूकवा प्रयत्न कर्यो नथी. वाचकोने खात्री आपी कहुं छुं के लेखक एक गच्छबद्ध व्यक्ति होवाथी गमे ते बाजुनो छे, तथापि ईरादापूर्वक असत्य पथपर पग मूकवा प्रयत्न न थाय तेने माटे तेणे पूरती काळजी राखी छे; तोपण वाचको ! उपर जणावेलां पुस्तकोमां नोंधेल पत्र के अध्ययन के भाग तपासी जवा ए इष्ट छे. छतां लेखकनी ईरादापूर्वक भूल थयेली लागे, वा अनुपयोगथी भूल थयेली जणाय तो लेखकने जणाववामां आव्येथी भविष्यमां ते संबंधी ते योग्य खुलासो करशे, ने पोते पोताने उपकृत थयेल मानशे.

वाचको ! आ उपरांत तमो पूर्व बाजुनां के उत्तर बाजुनां वधारे प्रमाणो मळी आववानां बहार मूकशो तो अवश्य जनसमाजने लाभकारक थशे.

मुनि हर्षचंद्रजी.

अनुक्रमणिका.



शुद्धि.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१२	आ काममां	आ काळमां
५	१८	स्नानक	स्नातक
७९	५	जेम गजसुकुमारने मदद करनार पुरुष मळ्यो, तेम तमोए (कृष्णने कहे छे) पेला इंट उपाडनार पुरुषने मदद करी ने	जे अरिष्टनेमिए कृष्णने कह्युं के इंट उपाडनार पुरुषने जेम तमोए मदद करी तेम गजसुकुमारने मदद करनार पुरुष मळ्यो ने तेथी
१००	१०	कहे छे	कहे छे के
१००	११	इच्छता	तेम इच्छता
१०४	८	पूव	पूर्व
१०४	१२–१३	सेढि	सेढिं



श्रीमद् धर्मसिंहजी
अने
श्रीमद् धर्मदासजी.

[सामायिक, आयुष्यकर्म अने क्षायक सम्यक्त्वनी पर्यालोचना साथे]

प्रकरण पहेलुं.

श्रीमद् धर्मसिंहजी अने श्रीमद् धर्मदासजी.

श्रीमद् धर्मसिंहजी अने श्रीमद् धर्मदासजी आ बे महान व्यक्तिओने थई गयाने लगभग आजे त्रण सैकाओ थवा आव्या छे. ते बे महान व्यक्तिओ कोण ने केवा सामर्थ्य-वाळी हती, ते जाणवाने आजनी जनता तैयार न होय एम जणाय छे. केटलाको कहे छे के धर्मसिंहजी ते ज धर्मदासजी, वा धर्मदासजी ते ज धर्मसिंहजी, एटले आ बे व्यक्तिओ जुदी हती, तेम केटलाको धारता नथी. केटलाको कहे छे के ते बे व्यक्तिओ जुदी तो खरी, पण तेओ गुरु-शिष्यपणे हता, वा तेओ बन्ने परस्पर गुरुभ्रातापणे हता, एटले तेओए बन्नेए मळी

धर्म कहाड्यो, अथवा कोई एम पण कहे छे के धर्मसिंहजी करतां धर्मदासजी समर्थ व्यक्ति हता, तेमणे धर्म कहाड्यो, तेमां धर्मसिंहजीने मान न मळ्युं एटले तेमणे धर्म जुदो कहाड्यो. आम परस्पर जनता पोतपोतानानी प्रति अनुकूळता ने सामा-प्रति असंबद्धता साचवती होय एम जणाय छे. पण कोई सत्यविचारक सुज्ञ पुरुष ऐतिहासिक दृष्टिए वस्तुस्थिति खरी शुं छे ए जाणवाने इच्छतो होय एम जणातुं नथी. जनतानो आ स्थिति जोई कया सुज्ञने खेद थया विना रहेशे?

आ स्थितिनो ख्याल लावी हृदयचक्षु आगळ जे वस्तु-स्थिति तरी आवी छे, ते जनतानो समक्ष मूकवा इच्छा राखुं छुं.

श्रीमद् धर्मसिंहजी ने श्रीमद् धर्मदासजी आ बे व्यक्तिओ तद्दन जुदी हती. ते बे जुदां जुदां क्षेत्रमां जन्म पाम्या हता. धर्मसिंहजीनुं जन्मस्थान जामनगर हतुं. धर्मदासजीना जन्मस्थान माटे माहिती नथी. धर्मसिंहजी ज्ञातिए दशा श्रीमाळी वणिक हता अने धर्मदासजी भावसार हता. धर्मसिंहजी १५ के १६ वर्षनी वयमां लुंकागच्छमां यति थया हता. धर्मदासजी (परंपर पुरुषना सांभळवा प्रमाणे) एकपात्रीय संप्रदायमां साधुसदृश वेशमां बारव्रतधारी श्रावक हता. श्रीमद् धर्मसिंहजी लुंकागच्छमां यति थया पछी केटलांक वर्ष रह्या. (पण केटलां वर्ष रह्या ए चोक्कस वार्ता हजुसुधी नीकळी नथी.) त्यां अभ्यास घणो सारो प्राप्त कर्या पछी 'यतिता' पोतामां नथी, वा यतिपणुं–मुनिपणुं केम पाळी

न शकाय एवो ख्याल लावी लुंकागच्छमांथी गुरुश्रीनी रजा-आज्ञा लई स्वतंत्रपणे दीक्षित थया. ते वखते तेओनी साथे १६ के १७ यतिओ पुनःदीक्षित थया, एटले के श्रीमद् धर्मसिंहजी लुंकागच्छमांथी निकळी दीक्षित थया ते १६८५ नी सालमां थया. दीक्षित थया पछी तेओ केटलां वर्षे धर्मदासजीने मळ्या, ते वार्ता स्पष्ट जणाती नथी; पण ज्यारे तेओ मळ्या त्यारे श्रीमद् धर्मदासजी एकपात्रीय संप्रदाय (संस्था) मां सरखेज मुकामे (अमदावादथी छ माइल दूर छे त्यां) हता. एम समजाय छे के श्रीमद् धर्मसिंहजी विहार करी सरखेज गया, त्यां बन्नेने परस्पर मळवुं थयुं हतुं ते घणा स्नेह ने विवेकथी भरेलुं हतुं. बन्नेने शास्त्रीय वार्तालापनो मोको (योग) सारो मळी आव्यो. बन्ने व्यक्तिओ मळ्या पहेलां परस्परनी ख्याति सांभळी, मळवाने इच्छती होय एम कां न समजीए? बन्नेने आ जग्याए शास्त्रीय विषय उपर विचार ने चर्चा करवानो घणो वखत मळ्यो हतो. बन्नेए घणी घणी बाबतोपर चर्चा करी छे एम परंपर पुरुषथी समजाय छे.

घणी बाबतोमां प्रथम एक ए बाबत हती के, धर्मदासजी आ पंचम काळमां साधुता जाळवी रखाय छे एम धारता नहि हता. श्रीमद् धर्मसिंहजी तेथी सामा विचारना हता, एटले तेओ धारता हता के आ काळमां इच्छा होय तो साधुता पाळी शकाय छे, एमां कांई शंका जेवुं नथी. आ संबंधी

बन्नेनी वच्चे चर्चा चाली हती. आ विषे वृद्धो कहेता हता के श्रीमद् धर्मसिंहजीए श्रीमद् धर्मदासजीने दीक्षा लेवा विषे कह्युं हतुं. तो पछी आ प्रमाणे तेओनी वच्चे वार्ता कां न थई होय ?

श्रीमद् धर्मसिंहजीए श्रीमद् धर्मदासजीप्रति कह्युं के 'अहो धर्मदासजी ! तमो अत्यारे बारव्रतधारी श्रावकपणुं पाळो छो, तो पंचमहाव्रतधारी साधु कां न थाओ ' कारणके आरंभ ने परिग्रहथी छूटा रही शकाय तेवो साधुवेष तो तमोए स्वीकार्यो छे. ' श्रीमद् धर्मदासजीए कह्युं के ' अहो महानुभाव ! आ पंचम दुःषम काळमां साधुता होय ए वार्ता संभवती नथी.' श्रीमद् धर्मदासजी प्रभुमार्गना सन्मुखी हता, साधु होवानी उत्कट इच्छा धरावता हता, पण मानता हता के आ काळमां साधुता पाळी शकाती नथी; तेथी तेओ साधु थवाने ना कहेता हता.

श्रीमद् धर्मसिंहजीए कह्युं के ' आ काळमां साधुता होय छे, ए वार्ता महावीरे सिद्धान्तमां खुल्ली जणावी छे, तेमां तमोने शंका होय तो ते खरेखर भ्रम छे; पण सत्य तो नथी. आ काळमां यथाख्यात (जेम सूत्रमां कह्युं छे तेम) चारित्र पाळी शकातुं नथी ए वार्ता खरी, पण तेथी कोई पण चारित्र पाळतुं नथी–तेम मानवाने कांई पण कारण नथी. जिनागममां श्री महावीरे आ पंचम आराना छेवटसुधी चारित्र ने चारित्रना पाळनार रहेशे तेम कह्युं छे; एटले आ काळमां सामायिक चा-

रित्र ने छेदोपस्थापनिक चारित्र आ बे २१ हजार वर्ष सुधी चालशे. तो आजे लगभग २१ सो वर्ष हजी गयां छे. आवो दुःषम काळ चाले छे, तेमां पण छ निर्ग्रंथमांना त्रण निर्ग्रंथ (नियंठ), भगवती सूत्रोक्त प्रमाणे ज्यांसुधी पांच चारित्रमांनां बे चारित्र रहेशे, त्यांसुधी तेओ पण रहेशे. बुकस निर्ग्रंथ, प्रतिसेवना निर्ग्रंथ, कषाय–कुशील निर्ग्रंथ, आ त्रण निर्ग्रंथो जे छे, तेमनो स्वभाव आ प्रमाणे छे. बुकस निर्ग्रंथ–ते संयमने अर्धदग्ध करे एटले अर्ध चारित्रने सारुं राखे, ने अर्ध चारित्रने खराब करे. प्रतिसेवना कुशील निर्ग्रंथ–ते मुनि भाव–चारित्रने दोषोथी दूषित करे. कषाय कुशील निर्ग्रंथ–ते कषायथी मुनिभावने खराब करे. आवा त्रण निर्ग्रंथो के मुनिभावो के संयम जोके छे, तोपण मुमुक्षु जीवोने मोक्षमां जवा माटे ए शरुआतमां अगत्यनां सोपान (पगथीयां) समान छे. आजे वर्तमान काळमां मुनिओ–निर्ग्रंथो पोतानो प्रकृतिनी कुटिलतानी स्थितिने लई, ने शरीरना यथासंहनन (संघयण) ना अभाव–अप्राप्तिने लई वीतराग संयम पाळी शकता नथी. तद्भव मोक्षगामी जीवो होय, तेओ यथाख्यान चारित्रमां के स्नानक (शुद्ध) निर्ग्रंथमां आवी जाय छे, पण जेओने हजी प्रथम शरुआत छे, वा जेओने घणा भव हजी करवाना छे, तेओने आ चारित्र के निर्ग्रंथमां आववुं पडे छे. जेओ यथाख्यात चारित्रमां जवानी सीधी इच्छा राखे छे तेओ एकडा बगडा घूंट्या सिवाय के

पहेली बीजी चोपडी फाडया सिवाय पंडितनी परीक्षा आपवा इच्छे छे. मोटा भागे जीवो एक भवमां संस्कारी थई मोक्ष–छूटकारो मेळवी शकता नथी. मनुष्यो उच्च लक्ष्यनी (इच्छित वस्तुनी) वार्ता करे, पण क्रमेक्रमे आगळ चाल्या सिवाय के एकदम पण आगळ वध्या सिवाय ते स्थानपर तेओ पहोंचो शकता नथी. आ संबंधी सर्व खुलासो तमारे जोवो होय तो ते भगवती सूत्रना पंचविंशमा शतकना छट्टा–सातमा उदेशकमां जणाव्यो छे, ते जोई जशो. आथी हुं तमारी आगळ एम कहेवा इच्छुं छुं के आ पंचम आरामां चारित्र छे, ने तमारा जेवा समर्थ जो लेवा इच्छे, तो पाळी शके, तेमां कांई संशय नथी. '

आ प्रमाणे शास्त्रना पूरावा साथे घणो वार्ता थई, ते उपरथी श्री धर्मदासजी समजी गया के पंचम आरामां चारित्र तो छे, ने ते लेवुं ते वधारे सुखावह–इष्ट छे. कारण ए हतुं के ए आत्मा मोक्षप्रति वृत्तिवाळो हतो; मात्र विचारमां साधुता होवानो ते संशयी हतो, जे संशय आटली वार्ता थवाथो चाल्यो गयो, ने साधु थवानो श्री धर्मदासजीए निश्चय कर्यो. पंचमहाव्रत स्वीकारवाने श्री धर्मदासजीए पोतानो विचार श्रीमद् धर्मसिंहजी समक्ष बताव्यो के ' हवे हुं दीक्षा लेवाने तैयार छुं.' श्रीमद् धर्मसिंहजीए कह्युं के ' बहु खुशीनो विषय छे. ' श्री धर्मदासजीने श्री धर्मसिंहजी पासे दीक्षा लेवा इच्छा हती, पण श्री धर्मसिंहजीए विचार्युं के तेओ पोते

स्वतंत्रपणे दीक्षा ले ते इष्ट छे कारणके श्री धर्मसिंहजी जाणता हता के तेओना ने मारा विचारमां सहज पण अंतर रह्या करे छे, ने ते अंतर प्रयत्न करतां पण मटशे नहि.

श्री धर्मदासजीए स्वतंत्रपणे दीक्षा लीधी. श्री धर्मदासजी भिक्षा माटे गृहीकुलमां गया. भिक्षा लेवा जतां कोई गृहमां मीजाज खोई नांखेल कोई स्त्रीए पात्रमां भस्म–राख प्रतिलाभी–वहोरावी. राख कांईक उडी, ते वार्ता श्री धर्मसिंहजी आगळ श्री धर्मदासजीए जणावी. त्यारे श्रीमाने कह्युं के 'श्री धर्मदासजी ! तमारो शिष्यसंप्रदाय वद्दु थशे.' आ वार्ता ते संप्रदायना परंपर वृद्धो सारी रीते जाणे छे. श्री धर्मदासजीना शिष्य–प्रशिष्यनी पट्टावलिनी बहार पडेली नोंधोमांनी छेल्ली नोंध प्रमाणे श्री धर्मदासजीए १७१६ नी सालमां दीक्षा लीधी. श्री धर्मसिंहजीथी उपर्युक्त नोंध प्रमाणे लगभग त्रीश-एकत्रीश वर्षने अंतरे श्रीमद् धर्मदासजी दीक्षित थया, तोपण बन्ने समसामयिक (एक वखतनी) व्यक्तिओ गणाय. आजे परंपरगत सांप्रदायिक ममत्वथी जे मनुष्यप्रकृतिमां विकार जणाय छे, ते ते वखते ते बन्ने व्यक्तिओमां नहि होय एम आ परिचित प्रेमाळ विचार उपरथी जणाय छे. श्री धर्मसिंहजी पासे घणा विचारनी आप–ले तेओने थई हती, जोके तेमां घणा स्थळे मतभेद रह्यो हतो; पण तेथी असंतोष तो नहि हतो. आथी समजाय छे के बन्नेनो आत्मा उच्च कोटिनो हतो. उज्ज्वल आचार पाळवामां ने बने

तेम पुरुषार्थ करवामां बन्नेनुं पूर्ण लक्ष्य हतुं. बन्ने धर्मना महान् योद्धाओ हता, बन्नेए धर्मनी उज्ज्वल प्रभावना करी हती, बन्ने व्यक्तिओए आर्यभूमिपर दीक्षित थया पछी घणुं अटन करी धर्मतत्त्वनुं अंजन करी घणा लोकोने देखता कर्या हता. श्री धर्मसिंहजी करतां श्री धर्मदासजीए विशेष प्रदेशमां विहार कर्यो हतो. श्री धर्मसिंहजी शरीरमां दर्द (सांभळवा प्रमाणे सारणगांठ)ना लीधे विशेष विहार करी शक्या नहि हता. एटले श्री धर्मदासजीने गुजरात, मारवाड, माळवा वगेरे घणा प्रदेशमांथी एक मोटो शिष्यवर्ग थयो (दीक्षित वर्ग थयो) तेम श्रावकवर्ग पण बहु मोटो थयो.

श्री धर्मसिंहजी साथे श्री धर्मदासजी कदाच केटलोक वखत रह्या होय. बन्नेने शास्त्रीय विचारोनी आप-ले करवामां घणो उत्साह वा उमेद हतां, पण तेओ घणी वखत जुदा पडी जता; एटले विचारनी एकता करवामां शास्त्रीय शैलिथी, रीतिथी, नयथी, प्रमाणथी समाधान तेओ करता हता. पण एकता केटलीक वखत केटलीक बाबतोमां तेओने आवी शकती न्होती. आम थवानुं कारण ए हतुं के जुदां जुदां स्थळे तेओ बन्ने उछर्या हता. केळवणी जुदी जुदी जग्यामां भिन्न भिन्न रीत्या तेओने मळी हती. अभ्यासमांने अभ्यासथी उत्थित विचारोमां पण तेओमां भिन्नता हती. एटले के बन्नेनुं दिल सामान्य रीत्या जुदुं नहि हतुं, पण सिद्धान्तप्रदर्शित वस्तुस्वरूप समजवामां बन्नेनी

दृष्टि मात्र जुदी हती. मुनिधर्म ने श्रावकधर्मनी व्याख्या करवामां ने मुनिधर्मनुं पालन करवामां ए बन्ने विचारोमां बेउ संमत हता, पण पुस्तककारोए भिन्न भिन्न स्थळे भिन्न भिन्न वस्तुने समजवामां जे जे अपेक्षा–नय ने प्रमाणथी व्याख्याओ करी छे, ते ते नय ने अपेक्षा वगेरेने समजवामां तेओमां मतभेद ने आग्रह थई पडतो. जेम जेम अभ्यासनी विशाळता तेम तेम विचारनी उदारता, जेम जेम अभ्यासमां अल्पता तेम तेम समजवामां संकुचितता आवे छे, ए एक जाणीती बाबत छे.

जिनागममां श्रद्धा–सम्यक्त्व तत्त्वने माटे बहु भार आप्यो छे, एटले श्री महावीरे सिद्धान्त वगेरेमां जे कह्युं छे, ते ने विश्वासपूर्वक मानवुं ते सम्यक्त्व छे, ने तेथी बीजी रीते मानवुं ते मिथ्यात्व छे. हवे आ लक्षणने समजी–बांधी चालनार व्यक्तिने सिद्धान्तमां जुदे जुदे स्थळे जुदुं जुदुं मळ्युं. परिणाम ए आव्युं के एक स्थळनी वस्तुने एक व्यक्तिए पकडी, बीजा स्थळनी वस्तुने बीजी व्यक्तिए पकडी, तेथी बन्ने एक बीजाना त्यागे एक बीजाने सम्यक्त्वी–मिथ्यात्वी कही रह्या छे. संप्रदायगत व्यक्तिओ एवा संकुचित विचारमां प्रवेश करवा लागी के तेओ जे वस्तुने समजी शक्या, ते सत्य छे, एटलेके ते सम्यक्त्व छे, ने इतर (बीजी) व्यक्तिओ जे समजी छे, ते मिथ्यात्व छे, पछी ते इतर व्यक्तिओनुं कथन गमे तेटलुं विशाळ होय, वा हेतु नय ने प्रमाणपुरःसर होय,

पण तेओ बीजा संप्रदायना छे एटले तेओ मिथ्यात्वी छे, ने ते मिथ्यात्वीओनुं मानवुं ते मिथ्यात्व छे; एटले जिनागमोक्त वस्तुने सांभळतां–समजतां, पण जे संकुचित हृदयी व्यक्ति होय छे तेने मिथ्यात्वनो भास थतां ते तेनाथी नासभाग करे छे. शास्त्रकारोनो आशय जे भयथी जैन दर्शनने बचावी लेवानो हतो, ते भय आखरे जैन दर्शनरूप पर्वतना मध्य भागथी फाटी निकळ्यो, ने ते दर्शनना टूकडे टूकडा उडी पडेला आजे ज्यां त्यां जणाय छे. एटले जैन दर्शनतत्त्वो जमीन साथे दोस्ती करतां होय तेम सेळभेळ थवा लाग्यां छे. आ वस्तुस्थितिथी कयो सुज्ञ अज्ञान हशे ?

श्री धर्मसिंहजीए एक महान् कार्य ए कर्युं के तेमणे जैन सूत्रोपर स्तबको (टबाओ) पूर्या. आ कार्य सामान्य बुद्धिमान् कोई पण करी शके, ए वार्ता तद्दन असंभवित छे. ब्राह्मण* दर्शनमां आचार्यपदपर आवनार शंकर रामानुजादिए जेम ब्रह्मसूत्रोपर महान् भाष्यो कर्यां तेम श्री धर्मसिंहजीए (एक अन्यदर्शनी विद्वानना कहेवा प्रमाणे कहीए तो) सूत्रोपर अर्थरूप भाष्यो लख्यां. ए वस्तु ए महापुरुषमां रहेली अगाध शक्तिनी अत्यारे ओळखाण करावे छे ने कहे छे के

---

* कवि नानालाल श्री धर्मसिंह जयंतीने दिवसे अमदावादमां बोल्या हता के पश्चिमना धर्ममां सुधारक जेम महान् ल्युथर थयो, तेम अहीं पूर्वमां महान् सुधारक लोंकाशाह थयो. शंकरादि आचार्योए जेम भाष्यो लख्यां तेम श्री धर्मसिंहे सूत्रोपर स्तबको लख्या.

ए महान् पुरुष हतो. जेम ए ब्रह्मसूत्रोपरनां भाष्यो लोकोमां मोटा भागे फेलाई रह्यां छे, तेम आ स्तबको (टबाओ) जैन दर्शनना मोटा भागे फेलाई रह्या छे, एमां कांई कोई ना कहे तेम नथी. समाजना मोटा भागपर ते समयमां उपकार कर्यो होय तो तेमणे ज आ अर्थो लखी उपकार कर्यो हतो.

अत्यारे केटलाक विद्वानो एम कही रह्या छे के युरोपमां ख्रिस्ती धर्ममां जेम महा गोटाळो चालतो हतो, तेवामां ते वस्तु सुधारनार एक महान् नर ल्युथर थयो, तेम जैन दर्शनमां तेवी स्थिति सुधारनार थयो होय तो ते महान् नर लुंकाशाह थयो. तेमने गयाने लगभग दोढ सैको थयो के तुर्त ज ते यति संप्रदायमां शिथिलता आवी पहोंची. ते वखते आ महान् नर श्री धर्मसिंहजी सूत्रोपर अर्थो भरी जैन समाज आगळ बहार आव्या. त्यारपछी श्रीमान् लवजी ऋषिजी, छेल्ली नोंध मळवा प्रमाणे कहीए तो, १६९२ मां यतिसंप्रदायथी मुक्त थई जैन समाज आगळ बहार आव्या, ने त्यारपछी श्री धर्मदासजी १७१६ मां दीक्षित थई बहार आव्या. आ त्रणे नरोए धर्मनुं संस्थापन करवामां जीवननो मोटो हिस्सो आप्यो हतो. श्वेतांबर जैननो एक भाग—जे मूर्तिपूजक नथी ते—ते पुरुषोनो आजे आभारी छे.

श्री धर्मसिंहजीए मुनिधर्मनो सुधारो जेम वर्तनमां कर्यो हतो तेम श्री लवजी ऋषिजीए ने श्री धर्मदासजीए पण वर्तनमां सुधारो कर्यो. श्री धर्मसिंहजीना विचारो सैद्धान्तिक साहित्य

भणी–प्रकरण साहित्य करतां विशेष वळता हता, तेम तेटला विचारो बीजाओना वळता नहि हता. एटले तेओना विचारो परंपर पुरुषोथी प्राप्त थएल साहित्य भणी–सैद्धान्तिक साहित्य भणी वळवा छतां रह्या. प्रकरण साहित्य ने सिद्धान्त साहित्य वच्चे विचारोनो मतभेद छे तेमां तो शक नथी.

श्री धर्मसिंहजीने सूत्रो आकंठ हतां. एना उपर निर्युक्ति, वृत्ति, अवचूरि विगेरे होवा उपरांत कार्मग्रंथीय विशाळ साहित्य हृदय ने चक्षु आगळ तरवरी रह्युं हतुं. परंपराथी प्राप्त थयेल–वा प्रकरणोमां प्रदर्शित थयेल–वस्तुने स्वीकारतां सिद्धान्त-दर्शित वस्तुने पहेली स्वीकारवी ए तेओना दिलने इष्ट लागतुं हतुं. सिद्धान्तकारे जे वस्तुने समजावी होय, ते वस्तुने परंपर पुरुषो कोई बीजे प्रकारे समजावी रह्या होय छे, तो हवे तेमांथी कया प्रकारने हृदय साथे मेळवी लेवो, ए संबंधी तेमणे विचार कर्यो. त्यारपछी तेमणे जनता आगळ कंई कंई बाबतो-पर चर्चा करी हती. तेमांनी कोई कोई हकीकत चर्चित मळी, एटले के कर्णद्वारा प्राप्त थई ते अत्र यत्किंचित् स्वरूपे मूकवा इच्छा राखी छे.

जे हकीकतो ते वखते चर्चाई हती, ते हकीकतो प्राज्ञ ने ऋजु पुरुषने ज्ञातव्य ने आवश्यक हती, पण ए चर्चा ते वखते केटलीक संप्रदायगत व्यक्तिओने समजवाने इष्टरूपे थई ने केटलाकने न थई. यथातथ्य स्वरूपने समजवुं ए कांई सामान्य विषय नथी. सत्य वस्तुने समजवामां मनुष्य

जातिने बुद्धिनी अनिर्मलता तेम ममत्व आडे आवे छे. आनुं परिणाम ए आवे छे के मानव प्राणी सत्य वस्तुथी आघे ने आघे जतो जाय छे. ऋजु–प्राज्ञ मनुष्य कोई पण अंशथी सत्यने पकडी पाडे छे, कारणके सत्य देखाडनार गमे ते जातनो वा गमे ते भूमि के पंथनो होय, पण सत्य तेनी मालीकीनुं के तेनुं होतुं नथी, ते (सत्य) तो सार्वीय (सर्व कोईनुं) छे, एवुं ए समजो जाय छे. पण कुदृष्टिमान् ने वक्र व्यक्तिने ते सत्य सत्याभास (असत्य) लागे छे, कारणके ते बतावनारने ते मनुष्य विरूप व्यक्ति (मिथ्यादर्शी) धारी ले छे, एटले तेनाथी सहजे भडके छे. मनुष्यप्रकृतिमां एवी एक विविधता छे के जेथी जनता भ्रमित थतो सत्य वस्तु उपर आवी शकती नथी. आजे तकरारो चालती होय, तो तेनुं कारण अप्राज्ञता के वक्रता छे.

वाचको ! तमारी आगळ श्री धर्मसिंहजी ने श्री धर्मदासजी विषे यत्किंचित् वस्तु मळी ते मूकी. आ उपरथी तमोने ख्याल आवशे के उभयमां प्रथम कोण, ने पछी कोण थया हता. श्री धर्मदासजी दीक्षित थई बहार आव्या, ते पहेलां श्री धर्मसिंहजी क्यारनाए बहार आवी गया हता. श्री धर्मदासजीए धर्मक्षेत्रने खेडवा प्रारंभ कर्यो, ते पहेलां श्री धर्मसिंहजीए अघोर कष्ट वच्चे कांटा कांकरा कहाडी नांखी, विशाळ क्षेत्र करी मूक्युं हतुं. श्री धर्मदासजीए काठियावाड, मारवाड, मेवाड विगेरेमां फरी विशाळ धर्मप्रभावना करी ते पहेलां

श्री धर्मसिंहजीए गुजरातमां अघोर पुरुषार्थ करी धर्म दिवालो नांखी हती. उपर कह्या प्रमाणे केटलांक वर्षने अंतरे उभय मळ्या हता, पण ते पहेलां ऐतिहासिक नोंध के तेमना जीवन-वृत्तान्त प्रमाणे श्री धर्मसिंहजी स्वतंत्रपणे लोकोपयोगी कार्य करी रह्या हता.

वाचको ! तमोने योग्य लागे ते दृष्टिथी उभय प्रत्ये जोशो; प्रिय दृष्टिथी के अप्रिय दृष्टिथी, सत्यना राहथी के अस-त्यना राहथी, तेओने मळेली वस्तुस्थितिथी के अवस्तुस्थि-तिथी तमोने योग्य लागे ते रस्ते तमो वर्तजो; पण एटलुं तो चोक्कस छे के उभयमांथी एकने पण अवगणना के खुशाम-तनुं स्थान रहेतुं नथी.

श्री धर्मसिंहजीए बीजुं कार्य एक ए कर्युं के भिन्न भिन्न संप्रदायगत परंपरागत ग्रंथोना आधारे श्रद्धा ने विचारो चालता हता, ते उपर सूत्रोथी आवश्यकीय घणा खुलासा बहार मूक्या हता, तेमांथी केटलोक आशय सामायिकादि प्रकरणमां लीधो छे.

प्रकरण बीजुं.

सामायिक तथा पौषधोपवास.

हवे आ जग्याए सामायिक पौषधोपवास केटली कोटिए थाय ए संबंधी चर्चा करवानी छे, ते पहेलां केटला प्रकारे

प्राणीओ पाप करे छे, ते संबंधी विचारणा करीए.

जैन दर्शन प्रमाणे नव प्रकारे (मार्गे) प्राणीओ पापने मेळवे छे; ते मनथी, वचनथी, शरीरथी. आ त्रण योगथी जीव पाप करे छे. एकेकने त्रण त्रण करण मळतां नव प्रकार थाय छे. मनथी–करवुं, कराववुं, ने अनुमोदवुं. वचनथी–करवुं, कराववुं, ने अनुमोदवुं. तेम शरीर (काय)थी–करवुं, कराववुं, ने अनुमोदवुं. आम नव प्रकार थाय छे.

जीवने सावद्यनी प्रवृत्ति करवामां त्रण योग ने त्रण करण साधन–निमित्त–रूप छे, एटले ए साधनथी जीव प्रवृत्ति करे छे. जीव शरीरथी–हाथ, पग, अंगुली, नख–थी जीवनी हिंसा करे छे, चोरी करे छे, खराब कार्य पण करे छे, तेम जीव वचनथी, असत्य, खराब, निंदा विगेरे बोले छे, हिंसा विगेरे पण करे छे. ते ज प्रकारे जीव मनमां हिंसा, असत्य विगेरेनो विचार करतो होय छे–जेम के हुं मारुं, चोरुं, नाश करुं विगेरे पापनी चिंतवना करे छे. जेम जीव मन वाणी ने शरीरथी पाप करे छे, तेमज बीजाने पाप करवामां जीव मन वचन ने शरीरथी प्रेरणा करे छे. शरीरना अवयवथी जीव बीजा प्राणीने प्रेरे छे के–एने मार, लूंट, संग्रह कर, असत्य बोल इत्यादि. तेम वाणीथी मनुष्य बीजाने हिंसा करवा, असत्य बोलवा, कोई पण खराब कार्य करवा प्रेरे छे. तेम ज मनद्वारा मनुष्य बीजाने विचारमां प्रेरणा करी शके छे. अनुमोदनथी ए प्रकारे जीवो पाप करे छे. शरीरनां अवयवोथी–चेष्टाथी

कोई पण मनुष्यने पाप करतो जोई–सांभळो जीव पोते खुशी थाय छे, जेमके मुंगो मनुष्य बीजाने जोई आंखथी, चहेराथी, हास्यथी पोतानो खुशाली बतावे छे. वाणीथी तो जीव घणी खुशी बतावे छे, कहे छे के तमोए कर्युं ते तो बहु सारुं थयुं एमां हुं घणो खुशी छुं. तेमज कांई जाणी जोई मनुष्य मनमां खुशी थाय छे, के ए काम बहु सारुं थयुं–ठीक थयुं.

उपर्युक्त नव प्रकारे मनुष्य पापनो बंध पोतानी साथे करतो होय छे. आथी मनुष्य लघु–हळवो थतो नथी, पण भारे ने भारे थतो जाय छे. श्री महावीरे जीवोने–मनुष्योने उंचे आववा माटे ए पापना मार्गो बंध करवा बताव्या छे. जे जे मार्ग बंध थाय ते ते मार्गे पापना आववाना रस्ता बंध थवाथी जीव निर्भय थाय छे, पापथी हळवो थाय छे.

आ नव मार्ग बंध करी शक्या होय तो ते मात्र आरंभ ने परिग्रहथी सर्व प्रकारे मुक्त थएला साधुओ छे के जेओ ए नवे प्रकारे पापने रोकी शके छे, पण गृहभावमां वसनार गृहस्थो पापना ए नव रस्ताने सर्व प्रकारे रोकी शकता नथी. ज्ञानीओए जोयुं के तेओ गृहभावमां रहेतां कोई कोई रीते पापने रोकी शके खरा. गृहनो संबंध, मोह, ने प्रवृत्ति राखवा छतां कोई जीव मुमुक्षु होय तो ते कोई कोई अंशे पाप करतां अटकी रहे छे. मुनिओ सर्व प्रकारनी हिंसाने त्यजी शके छे, त्यारे गृहस्थो मोटा जीवनी हिंसा बंध करी शके छे, ते पण छ प्रकारे (मार्गे) हिंसा रोकी शके छे. गृहनो संबंध

होवाथी विशेष त्याग तेओ करी शकता नथी. मन वाणी ने शरीरथी निरपराधी बेइंद्रियथी ते पंचेंद्रिय जीवोने ते गृहस्थो (श्रावको) मारता नथी; तेम ज बीजाने ते जीवोने मारवा तेओ कहेता पण नथी. आ प्रकारे गृहमां रहेवा छतां हिंसाने रोकी शके छे. मोटा असत्यने ते गृहस्थो मन वाणी ने शरीरथी बोलता नथी, तेमज ए त्रण योगथी बीजाने बोलाववा तेओ प्रेराता नथी. आ ज प्रमाणे मोटा चौर्यने तेओ त्यजे छे. स्त्रीपुरुषना मोह संबंधमां तेओ अन्य स्त्री-पुरुषथी एक ज योग ने करणथी बची शके छे, कारणके गृहमां ने तेनी साथे रहेला संबंधमां तेओ रहेला छे. तेम त्यां मोहनी वृत्तिमां विशेष अनुकूळता होय छे, तेथी विशेष कोटिए ए वस्तुने (मोहने) तेओ त्यागी शकता नथी. धन धान्य मिल्कत वगेरेमां गृहस्थो पोतानां मन वाणी ने शरीरथी इच्छा उपरांत सुवर्ण, रौप्य, मणि, मौक्तिक, माणिक्य उपर संयम राखी शके छे. एथी विशेष निग्रह तेओ करी शकता नथी, एटले त्रण कोटिथी विशेष तेओ पाळी शकता नथी. ते ज प्रकारे मर्यादा उपरांत कोई पण दिशामां जवाने तेओ पोतानां मन वाणी ने शरीरने रोकी शके छे. बीजाने प्रेरणा करवामां—मोकलवामां वस्तु वगेरेने मंगाववामां तेओ संयम राखी शकता नथी. (आ संबंधमां सांप्रदायिक चोपडीओमां—समजणमां घणी भूल छे. ते भूल परंपराथी चाली आवेली असमजण—देखादेखीथी थई आवेल छे छतां आजे तेना नायकोने विचार करवानो

अवकाश नथी, पण ममत्व-आग्रहनो अवकाश पूरेपूरो छे. नवी कडाकूट मूकी, जुनां दफतरो कोण तपासे ?) उपभोग-परिभोगनी वस्तुमां तथा व्यापार विषयमां श्रावको त्रण कोटिथी संयम राखी शके छे, करावावानी ने अनुमोदननी प्रवृत्ति बंध करता नथी. अनर्थदंड, सुज्ञ ने विवेकी श्रावको मन वचन ने कायथी सेवता सेवरावता नथी. जेओ सम्यक्‌दृष्टिपूर्वक आ व्रतोने स्वीकारी रह्या छे, तेओ गृहमां गमे त्यां रह्या छतां ए व्रतोने साचवी रह्या होय छे.

सामायिक, दिशावकाशिक, पौषधोपवास, आ व्रतो घणा उच्च प्रकारनां छे. ते व्रतो हमेशां चोविसे कलाक श्रावकोथी पाळी शकातां नथी. गृहसंबंधथी छूटा थई जो श्रावको पौषधशाळा-उपाश्रयमां रही पाळवा इच्छा राखे तो पाळी शके छे. सामायिकादि तो ओछामां ओछी बे घडी-अंतर्मुहूर्तना काळमां थाय छे, एटले अहोरात्रिना चोविसे कलाकमां जेटलो अवकाश लई शके, तेटला अवकाशमां श्रावको करी शके. दिशावकाशिक पौषधोपवास व्रत लगभग अहोरात्रिनां होय छे, तेथी मासमां, पक्षमां एक बे त्रण जेटलां करवा धारे तेटलां श्रावक करे, पण ते व्रतो श्रावकोने केटली कोटिए करवानां होय छे, ते संबंधी मतभेद ऊभो छे.

कोईक जिज्ञासुने आ संबंधी सारुं समजवा इच्छा थती हशे. जोके घणा आग्रहीओने बहुधा आग्रह ज पसंद होय

छे, तोपण जेओने इच्छा होय, तेओने माटे नीचेनो खुलासो आवश्यक–ज्ञातव्य छे.

सामायिक पौषधोपवास संबंधी विचार.

श्रावक लोको सामायिक शिक्षाव्रत करे छे, ते केटली कोटिथी थई शके ए संबंधी सांप्रदायिक पुरुषोना विचारो भिन्न भिन्न छे एम समजाय छे. एटले ज्यारथी ए विषय विषे विमर्श (विचार) थवा लाग्यो, त्यारथी आजसुधीमां ए विचारोनी आप–ले चालु छे. ए विषय खास श्रद्धाळु पुरुषने के विवादवाळा पुरुषने चर्चास्पद थई पड्यो छे. मध्यम बाजुनो वर्ग ए बाबतने अर्थशून्य के निरुपयोगी गणी कहाडे छे; पण ए संबंधी तथ्य आशय क्यां छूपायो छे वा कई रीते लपाई रह्यो छे, ते सुष्ठु सुज्ञ शुं कोई जग्याएथी शोधी कहाडवा प्रयत्न करशे के ? आजे आ जग्याए केवी रीते समाजमां ते विषय चर्चाई रह्यो छे, ते ज मात्र कथनीय छे.

जैन दर्शन प्रमाणे जीव नव मार्गे पापने मेळवे छे, तेम पापने रोकवाना पण ए नव मार्गो छे. जो ते मार्गो खुल्ला राखे तो पाप आवे, ने एने रोके तो पाप रोकाय. सामायिक व्रत बार व्रतमांनु एक व्रत छे, जेने नवमुं व्रत कहेवामां आवे छे, अथवा ते एक शिक्षाव्रत पण छे. पहेलां आठ व्रत गमे तेटली कोटिथी करता होय, तो तेनी तकरार के चर्चा कांई नथी, पण नवमा व्रतनी के तेनी माफक दशमा-अगियारमा व्रतनी तकरार चर्चा चालु छे, एटले ए त्रणे

व्रतो-ए त्रण शिक्षाव्रतो उपर्युक्त पापना नव मार्गमांना केटला मागना पापने रोकवाथी थई शके छे, ए संबंधी भिन्न भिन्न विचारो छे. केटलाक कहे छे के ए व्रतो-शिक्षाव्रतो छ मार्गे पाप रोकवाथी (छ कोटिथी) थई शके छे, केटलाको कहे छे सात कोटिथी, आठ कोटिथी, थई शके छे; त्यारे केटलाको कहे छे के नव कोटिथी कां न थई शके? आम भिन्न भिन्न मत छे, तो तेने पूर्व-उत्तरवादीना रूपमां मूकीए, तो ते संबंधी कांईक समजाशे.

पूर्ववादी कहे छे के "सामायिकादि शिक्षाव्रतो छ कोटि-छ मार्गे पापने आवतां रोकवा-थी थई शके छे, पण एथी विशेष कोटिथी थई शकतां नथी."

उत्तरवादी कहे छे के "शिक्षाव्रतो छ कोटिथी थई शके एम पण शा आधारे कही शको? हुं एम इच्छुं छुं के एक कोटिथी, त्रण कोटिथी, चार कोटिथी, पांच कोटिथी ते व्रतो केम न बने?"

पूर्ववादी कहे छे के "शिक्षाव्रतो एटली ओछी कोटिथी तमो करावबा मांगो छो, पण एम तो बने ज नहि. अनुव्रत-स्थूल जीव अहिंसाव्रत वगेरे छ कोटिथी थई शके छे, एटले ए व्रतो छ कोटिए आदर्यां छे, एवुं चाल्युं छे, तो पछी शिक्षाव्रतो छ कोटिए थई शके; एथी न्यून (ओछी) कोटिए नहि ज थाय."

उत्तरवादी कहे छे के "हुं एम पूछुं छुं के जेम अनुव्रतो

छ कोटिए आनंदादिए अंगीकार्यां छे, एम सूत्रमां चाल्युं छे, तो आनंदादिए शिक्षाव्रतो केटली कोटिए अंगीकार्यां छे के जेथी तमो छ कोटिए थवा कहो छो ? "

पूर्ववादी कहे छे के " आनंदादि श्रावके शिक्षाव्रत स्वीकार्यां छे, पण त्यां कोटिनी वार्ता कांई चाली नथी."

उत्तरवादी कहे छे के " जो नथी चाली तो शा आधारे तमो ' छ कोटिए थाय ' एम कही शको ? "

पूर्ववादी कहे छे के " छ कोटिसुधी व्रत आदर्यां छे, तेथी विशेष कोटिए आदर्यां होय एम जणातुं नथी, तो समजाय छे के छ कोटिए कोई पण शिक्षाव्रत घणी खुशीथी थई शके. "

उत्तरवादी कहे छे के " जो तमो एम कहेता हो के एम थई शके तो हुं कहुं छुं के तेथी विशेष कोटिए कोई करे तो कां न थाय ? "

पूर्ववादी कहे छे के " एम तो बने ज नहि, कारणके सूत्रमां एथी विशेष कोटिए कोईए कर्यां होय तेम छे ज नहि."

उत्तरवादी कहे छे के " शिक्षाव्रतो केटली कोटिए थाय ते संबंधी ज्यारे कांई वार्ता नथी, तो पछी ' ना ' शा आधारे कही शकाय ? ' शिक्षाव्रतो विशेष कोटिए थतां नथी ' आम जो जणाव्युं होत तो तमारी धारणा सत्य छे एम कही शकाय, पण ते तो कांई छे नहि. शिक्षाव्रतो छ कोटिथी न्यून कोटिए न थाय तेम विशेष कोटिए न थाय तो भले, पण ते

छ कोटिए थाय एम शा आधारे थाय ए समजातुं नथी."

पूर्ववादी कहे छे के "ते व्रतो छ कोटिए करवां एम सूत्रोमां खुलासो नथी, पण परंपर पुरुषोथी चालती आवेली आ परंपरामां जैनना सघळा फांटामां तेमां पण आपणा पहेलां चाली आवता मूर्तिपूजक श्वेतांबर संप्रदायमां ते व्रतो–सामायिकादि व्रतो छ कोटिए करता जणाय छे. तो एथी सिद्ध थाय छे के ते व्रतो छ कोटिए करवां. एथी विशेष कोटिए कोई तमारा सिवाय कहेतुं होय वा सूत्रोमां खुलासो होय तेम समजातुं नथी. एटले आपणी पासे आ परंपरा सिवाय बीजुं कोई प्रमाण नथी."

उत्तरवादी कहे छे के "तमो परंपराने मान आपवाने तैयार छो ए ठीक, पण परंपरानो आधार क्यारे लेवो ए विषे विशेष जाणवुं ए आवश्यक छे. परंपरा ए एक व्यवहार छे, एटले प्रवृत्ति करवामां ते व्यवहारने मान अपाय छे, पण ए व्यवहार क्यारे स्वीकार्य छे के ज्यारे तेनी उपरना चार व्यवहार आपणी पासे न होय, त्यारे पछी ते (परंपरा) व्यवहार प्रमाणने मान आपवुं. स्थानांग सूत्रमां, व्यवहार सूत्रमां, पांच व्यवहार चाल्या छे. प्रथम आगम व्यवहार, बीजो सूत्र व्यवहार, त्रीजो आज्ञा व्यवहार, चोथो धारणा व्यवहार, ने पांचमो परंपरा व्यवहार छे. आ पांच व्यवहारनां प्रमाण–आधार लईने मुनिओए चालवुं एम सूत्रकारो कहे छे. आगम व्यवहार होय त्यांसुधी सूत्र व्यवहार मान्य नथी. सूत्र व्य-

वहार होय एटले ज्यांसुधी सूत्रो खुलासा आपे, प्रमाण आपे, त्यांसुधी नीचेना व्यवहारना आधार प्रमाण लेवां ते अर्थरहित छे. एम ज्यांसुधी आज्ञा के धारणा व्यवहार प्रमाण मळे त्यांसुधी परंपर पुरुषोने प्रमाण मानवा ते अर्थ-शून्य छे. आपणने ज्यांसुधी उपरना व्यवहारनां प्रमाण मळे त्यांसुधी नीचेनां प्रमाण व्यवहार शाने मानवां जोईए ? उपरना एक पछी एक बंध थाय तो पछी नीचेना व्यवहार मानवा; एटले आपणा सुभाग्ये सूत्र व्यवहार हजी मोजुद छे, तो ज्यांसुधी आपणने सूत्रो खुलासो आपे, त्यांसुधी तेमनो आधार लेवो ए आपणा माटे अत्यारे हितावह छे. तमो कहो छो के सूत्रोमां ए संबंधी कांई खुलासो नथी, पण हुं तमोने कहुं छुं के सूत्रोमां ए विषेनो खुलासो छे. जो तमो ए विषे विशेष तपास करशो तो तमोने दृष्टि आगळ ते वस्तु मळी आवशे. पण तमो जे दृष्टिथी जुओ छो ते दृष्टिमां हजी विशाळता नथी, एटले परंपराने जे दृष्टि—व्या-मोहथी जोई रह्या छो, ते दृष्टि बीजा सूत्र व्यवहारने जोई शकती नथी. एटले जेटलुं परंपराने मान आपो छो तेटलुं तमारुं दिल सूत्रोमां चोंटतुं नथी. ज्यां त्यां तमो सूत्रोने आगळ करो छो, पण ज्यां परंपरा आवी एटले बस थई रह्युं ! शिक्षाव्रतो केटली कोटिए करवां ए संबंधी मूळ प्रवृत्ति शुं चालती हती, ते समजाती नथी, पण वच-मांना कोई पण पुरुषे ते व्रतोने छ कोटिए करवानी प्रवृत्ति

शरु करी, पाछळनी जनताए ते प्रवृत्तिने वधावी लीधी, एटले बस ए प्रवृत्ति शुं साची ठरी ? खरेखर, आम अंधारामां भटकवुं केम दिलने गमे छे ? शुं कहुं ! आ जग्याए कहेतां हृदयने एक प्रबळ आघात थाय छे के समाज सूत्रने नामे ज्यां त्यां मोटी भारे भारे वार्ता करे छे, पण ज्यां परंपर दंतकथा आवी पहोंची के तुर्त ज अमूल्य प्रवचनरूप सूत्रोने फेंकी दई ते परंपर विचारने प्रेमथी भेटतां साथे पकडोने वधावी ले छे. समाज जेटलो कचराने पसंद करनारो छे तेटलो तत्त्वथी आघे जनारो छे. आ जग्याए कथ्य ए छे के जो आपणे आ हृदयने संकुचितताना पाटामांथी मुक्त करीए, ने विशाळ वाचनना मेदानमां दोडावीए ने परंपराना आग्रहनी वाडने उल्लंघीए तो आ संबंधी खुलासो जोके यत्किंचित् छे, तोपण आपणी आंख तळे जरुर आवशे."

पूर्ववादी कहे छे के "आवी लांबी विवेचना करी तो भले, पण एवो स्पष्ट खुलासो छे ज क्यां ? जो खुलासो होय तो पछी हा–ना केम रहे ?"

उत्तरवादी कहे छे के "आपणी आंखतळे ए खुलासो मळी आवे, पण आपणुं वाचन एटलुं सारुं–विशाळ नथी के जेथी ते एकदम आपणी दृष्टिमां आवी जाय. तमोने जाणवानी तीव्र इच्छा होय तो आ रह्यो खुलासो. जुओ ! सूत्रकृतांग (सूयगडांग) ना त्रेवीशमा अध्ययनमां, ज्यां उदक (पेढालपुत्र) साथे भगवान् गौतमे संवाद कर्यो

छे, त्यां जीवहिंसा विषे केटलीक चर्चा कर्या पछी पापने रोकवा विषे कृत कारित अनुमति (करवुं–कराववुं ने अनुमोदन करवा) संबंधी वार्ता थई छे. त्यां सूत्रकारे श्रावकना मुखमांथी निकळेला शब्दो जणाव्या छे, एटले त्यां श्रावको एम बोल्या छे के 'पाप–सावद्य प्रवृत्तिने न करो, न करावो, मन वाणी ने शरीरथी, तेमां पण अनुमोदन करवाना प्रत्याख्यान करीशुं.' आ शब्दोथी तमोने खात्री थशे के पौषधादि शिक्षाव्रतो श्रावकोए छ कोटि करतां विशेष कोटिथी कर्या छे. तेमां शंकाने स्थान जणातुं नथी. सूत्रकारना कथन प्रमाणे छ कोटि करतां विशेष कोटिए थाय छे, तेमां उंडाण–रहस्य छे. गृहमां रही एटले गृहना कामकाज साथे संबंध राखवाथी कोई पण व्रत छ कोटिथी विशेष कोटिए थतां नथी, छतां आ जे सामायिकादि पौषधोपवास श्रावकोए विशेष कोटिए कर्या छे, तेनुं कारण संसारना सर्व कार्यथी मुक्त थई पौषधशाळा–उपाश्रयमां रही धर्मवृत्तिमां श्रावको चित्त चोडे छे, तेथी घणी खुशी साथे श्रावको ए व्रतने पाळे छे."

पूर्ववादी कहे छे के "तमोए सूत्रनी साक्षी बतावी, पण श्रावकने अनुमोदन करवानी वृत्ति रहे छे, तेथी तेओ पाळी शकता नथी. कोई श्रावक सामायिक के पौषधोपवास करीने धारो के उपाश्रयमां रह्यो, त्यां तेणे पोतानी जाते सावद्य–पापप्रवृत्तिने करवानुं बंध कर्युं; बीजानी पासे ते करावता पण

बंध कर्युं, मनथी–वाणीथी ने शरीरथी; एटले शरीरथी वचनथी ने मनथी पाप करुं नहि, पाप करावुं नहि, आम छ कोटिए तेणे धार्युं, तो ते पाळी शके एम स्पष्ट समजाय छे. पण पछी त्रण भंग–प्रकार अनुमोदन करवाना रह्या ते बंध करी शकाता नथी, कारणके तेनी वृत्ति अनुमोदन करवा माटे रहे छे. श्रावक व्रतमां बेठो छे, त्यां तेणे खबर सांभळी के–' गृहमां–बजारमां आम थयुं. ' ते सांभळी तेने हर्ष के शोक थाय त्यारे ते श्रावक शरीरनी चेष्टाथी के वाणीथी भलुं के भुंडुं कही नांखे, तो ते अनुमोदननो भंग–प्रकार के कोटि साचवी शकाती नथी; एटले अनुमोदन मननुं तो रह्युं पण शरीरथी ने वाणीथीए करी नांखे छे. ''

उत्तरवादी कहे छे के " सज्जन ! जो तमो आम छ कोटि–प्रकारथी पाप बंध करी शकाय छे, एटलुं समज्या हो तो अनुमोदन बंध थाय छे, ते वार्ता जलदी समजो शकशो. जे व्यक्ति पौषधशाळामां रही पापनी प्रवृत्तिने बंध करवा इच्छे, ते व्यक्ति व्रतमां रही अनुमोदननो शाने प्रवृत्ति करे? अनुमोदननी प्रवृत्ति संसारमां–गृहमां होय त्यां रही शके छे, कारणके त्यां सर्व प्रकारनो संबंध छे, पण ज्यारे पौषधादिमां होय, त्यारे अनुमोदननी प्रवृत्ति स्वल्प वखत–बे घडीथी पछी एक अहोरात्रि सुधी–बंध रही शके छे; एटले ते वखते ते श्रावकने कांई पण संबंध राखवानो होतो नथी. श्रावके पिता, माता, भगिनी, स्त्री, पुत्र, सुवर्ण, रौप्य, मा-

णिक्य, मौक्तिक विगेरे गृहमां मूकी धर्मध्यान करवा उपाश्रयमां आवी पौषधोपवास स्वीकार्यो छे; ते वखते उपर्युक्त वस्तुमांनी कोई पण प्रियमां प्रिय—स्त्री पुत्र के सुवर्ण माणिक्य वस्तुने कोई लई जाय, वा बाळी नांखे के खलास करे, तोपण पौषधमां रहेनार श्रावक जाणे के मारी ए स्त्री अत्यारे नथी, तेम ए माणिक्य मौक्तिक मारां नथी. आम खुशीथी ते व्रतमां रहेनार श्रावकोए ते वखते जतुं कर्युं छे. हवे कहो के अनुमोदन करवानो प्रश्न—अवकाश क्यां ऊभो रहे छे? आ वखते मारे कहेवुं जोईए के, तमारो छ कोटिए ज थाय एवो आग्रह, ममत्व,—जो तमो सूत्रमां ध्यान खेंचो तो—विचार करो तो—हवामां एकदम उडी जाय, ऊभो रही शके नहि. पण न करे नारायण, मनुष्यमां एवी—विचार करवानी उच्च शक्ति आवे, वा पोताना आग्रह सामे मनुष्य पोतानो वरडो फेरवे. आ स्थळे आटलुं ज कथ्य हतुं के श्रावको अनुमोदन करवुं बंध करी शक्या छे, ते जुओ उपासक दशांगमां एक एक श्रावकनी धर्मचर्याना अधिकारे. ”

पूर्ववादी कहे छे के “ तमो कहो छो तो ठीक, पण अनुमोदनना त्रण प्रकार छे. मनथी अनुमोदन थाय छे, वाणीथी थाय छे ने शरीरथी थाय छे; तो अत्र (आ विषयमां) त्रणे अनुमोदन बंध थाय छे के बे बंध थाय छे, के एक बंध थाय छे? शुं समजवुं? ”

उत्तरवादी कहे छे के "हुं अत्यारसुधी जे वार्ता करी रह्यो छुं ते मनस्वीपणे करी रह्यो नथी, पण श्रुतना आधारे वार्ता लंबावी रह्यो छुं. हुं जे कहुं तेमां तमने प्रमाण लागे, ते पण सूत्र-श्रुतनुं प्रमाण तमारी आंख तळे आवे, तो हे सज्जन! ते वार्ताने स्वीकारजो, नहितो जती करजो. छ कोटि करतां विशेष कोटिए पौषधादि थाय छे, ते संबंधे अत्र प्रमाण मूकुं छुं. तेमां पण केटली विशेष कोटिए थाय ते वार्ता संशयात्मकता साथे आवे छे, तेमां तमने जे खुलासो मळे ते तमे पकडी पाडजो.

सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध बीजे, अध्ययन सातमे, उदकना अधिकारे (भीमसिंह माणेकना छापेला सत्तरमा आलापकमां) श्रावकना शब्दोमां मात्र मुद्दाना थोडा शब्दो टांकुं छुंः—

दुविहं, तिविहेणं, माखलु ममठाए किंचि करेह वा करावेह.

त्यां शीलांकाचार्य सूरि टीकामां लखे छे के-पौषधित एवो हुं (जे श्रावक) तेना माटे रखे पचन पाचनादि करो, करावो, मनथी वाणीथी ने शरीरथी; एटले मन वाणी ने शरीरथी करवानो करावानी प्रवृत्तिनां प्रत्याख्यान कर्यां. ते उपरांत प्रत्याख्यान शी रीते करे छे, ते सूत्रनो ककडो नीचे जुओः-

तथ्थवि पच्चक्खाइस्सामो.

श्रावक एम कहे छे के तेमां पण (शीलांक सूरि

लखे छे के) [१]अनुमति करवामां पण (तत्राप्यनुमतावपि सर्वथा यदसंभवति तत् प्रत्याख्यास्यामः) जे संभावना करवी पण बीलकूल संभवती नथी तेनां प्रत्याख्यान करीशुं. श्रावक एम कहे छे के अमोने पौषधमां अनुमोदन करवामां जे संभवतुं नथी—एटले व्रतमां वाणीथी के शरीरथी (स्पष्ट तो नथी—समजो ते खरुं) जे संभावना थई शके नहि तेनां प्रत्याख्यान करीशुं. आवुं सूत्रकारे स्पष्ट समजाव्युं छे, तोपण तमो कहो छो के 'एवुं साफ क्यां छे ?' तो हुं कहुं छुं के जरुर तीणी बुद्धि ने तीणी दृष्टिथी जुओ ! आ जे कहुं छुं 'ते मारुं छे' तेवुं तमो समजशो नहि. ते सर्वकोईनुं छे, ने तेमां सर्वकोईनो हक्क छे. आमां ए बाबत स्पष्ट करवी हजी रही जती लागे छे के शरीरथी, वाणीथी ने मनथी आ त्रणमांथी केटलो अनुमोदना बंध करी समजवी ? आ प्रश्न, हे पूर्ववादी ! तमारुं छे, पण ते संबंधी उपर कह्युं छे तेमां स्पष्टता निकळती नथी."

पूर्ववादी कहे छे के "त्यारे शरीरनी एक अनुमोदना बंध थाय छे, तेम आपणे धारीए तो केम ?"

उत्तरवादी कहे छे के " शरीरनी अनुमोदना बंध थाय तो वाणीथी पण बंध थई शके; एटले शरीरनी आकृति करी (चेष्टा करी) हर्ष—शोक बतावबो बंध थाय छे, तो वाणीथी उद्‌गार, हर्ष—शोक बतावबो, करवो ते पण व्रतमां थई शके

१ आ अर्थ पार्श्वचंद्र सूरि स्तबकमां गलत थयो जणाय छे.

नहि, एम उपर टीकाकारना आशयथी समजाय छे."

पूर्ववादी कहे छे के "त्यारे एम कही नांखोने के मनथी पण अनुमोदना बंध थई शके छे."

उत्तरवादी कहे छे के "मनथी अनुमोदनवृत्ति बंध थई शकती जणाती नथी. ते जो बंध थती होत, तो सूत्रकार 'तथ्थवि' (तेमां पण), ने टीकाकार 'अनुमतिमां पण' आवो शब्द अर्थ शामाटे टांकत? एटले जेम शरीर ने वाणीथी बंध थाय छे तेम मनथी जो बंध थतुं होय तो त्रिविध-त्रिविधेन एम कहेत, पण 'तथ्थ'–तत्र एम पाठ न कहेत. एटले 'तथ्थवि पच्चखाइस्सामो' ए सूत्रपरथी ए चोकस थाय छे के छ उपरांत विशेष कोटिए सामायिकादि थाय छे, ते सात कोटिए थई शके, ने आठ कोटिए पण थई शके, एमां हवे संशय रही शकतो नथी."

पूर्ववादी कहे छे के "केटालाक नव कोटिए सामायिकादिनी पण प्रवृत्ति करी रह्या होय एम जणाय छे, तो शुं नव कोटिए न थाय?"

उत्तरवादी कहे छे के "नव कोटिए पाळी शकाय तो घणुं सारुं, पण गृही भावमां प्रवर्तन ज्यांसुधी जे श्रावक राखे छे, त्यांसुधी तेनाथी नव कोटिए व्रत पाळी शकातुं नथी. मननुं अनुमोदन–जोके सूत्रकारे स्पष्ट कर्युं नथी तोपण समजाय छे के–रही जाय छे, एटले मनथी अनुमोदना (जे दिलमां गुप्त छे, जाहेरमां जणाय नहि) पण थया विना रहेती नथी,

एम होवामां कारण गृहसंबंध छे. गृह—संबंध न होय तो एटली अनुमोदना पण न रहे. श्रावक ज्यारे संल्लेखना—ते अपश्चिम मारणांतिक संल्लेखना करे छे, ते वखते ते खुशीथी नव कोटिए पण थाय छे, कारणके ए कार्य हवे छेवट मृत्युसुधीनुं छे, मृत्यु आव्ये पूर्ण थवानुं छे, तेथी तेने गृहमां भाव न होवाथी ते नव कोटिए थाय छे. संल्लेखनामां श्रावक सर्व प्रकारनी हिंसाथी उपरत (निवृत्त) थाय छे. एम सर्व प्रकारना असत्यथी—एम सर्व प्रकारना अकरणीय कार्यथी मुक्त थाय छे. त्यां सहज नव कोटिए त्याग थाय छे. श्रावको नव कोटिए कांई व्रत करता होय तो ते संल्लेखना मात्र करे छे, ते सिवाय कोई पण व्रत नव कोटिए करता नथी. तेनो खुलासो उदकाधिकारे तेना पछी छे."

उपसंहार.

उत्तरवादी कहे छे के "मारो हेतु एटलुं ज कहेवानो हतो के परंपरा प्रवृत्तिने परिचित थई सूत्र-आज्ञाने (सूत्रमां प्रदर्शित वस्तुने) समजवामां आपणे भूल्या छीए, एटलुं ज नहि पण ए संबंधी सारुं मनन करवाने ने विचार करवाने आपणे जतुं करीए छीए. सूत्रोक्त भले आपणे एक बाजुए रहेवा दईए, पण आ संबंधी विचारनी मात्र आप—ले करीए, तो सहज हृदयने गम्य थाय छे के शिक्षाव्रत जो छ कोटिथी पाळी शकातां होय तो आठ कोटिए घणी खुशीथी पाळी शकाय छे. तेनुं कारण प्रथम ए छे के त्याग जेवा प्रसंगमां अनुमोदनाना

बे भंग—वाणीथी ने शरीरथी अनुमोदन—इच्छा ने समजण होय तो सहज जाळवी शकाय छे, ने ते पण थोडो वखत छे, तेथी सचवाय छे. बीजुं कारण ए छे के छ कोटि प्रत्याख्यानमां मनथी करवुं ने मनथी करावबुं, ए भंग सूक्ष्म (मनोगत) छे, तेथी ते पाळवा जेटला कठण छे तेटला अनुमोदनना बे भंग पाळवा कठण नथी, कारणके ते देखाय तेवा स्थूल छे, ने रोकी शकाय तेवा छे. अत्यारनी जनताने मनोगत विषय जेटलो कठण लागे छे, तेटलो स्थूल अनुमोदन विषय कठण लागतो नथी, पण ज्ञानीए व्रतपालन करवामां जे अपेक्षा के विधि समजाव्यां छे, ते समजी शकाय तो ते विषय सुगम ने सुकर थाय. आ उद्देश केवळ ऋजु ने सुज्ञने माटे छे. जेओने एक कोटिए पाळवानी पण ईच्छा नथी वा समजण नथी, तेमने माटे आ उद्देश नथी."

वाचको ! छ कोटि ने ते करतां विशेष कोटि संबंधी हकीकत वांची तमारामांना कोईने पण एम ख्याल कदाच आवे के छ कोटि करतां विशेष कोटिए (आठ कोटिए) सामायिक पौषधोपवास आदि शिक्षाव्रतो करवां ते तो श्रीमान् धर्मसिंहजीनी ने तेमना संप्रदायनी श्रद्धा वा धारणा छे, वा ते सिवाय एवी श्रद्धा कच्छना केटलाक भागमां हशे, पण ते बहु विशाळ प्रदेशमां नथी; आम तमोने तमारा विचारो के कोई पण व्यक्ति संकोचावे, तो जणाववानुं के छ कोटि करतां विशेष कोटिए सामायिकादि थई शके छे एवा विचारो अहींथी

आगळ मारवाड तरफना केटलाक भागमां ने क्यांसुधी फेलाया छे, ने कोने कोने एवी श्रद्धा हती ते जाणवाने माटे एक पत्र नीचे मूकुं छुं. आ पत्र आटलो विषय लखी रह्या पछी एक जणनी साथे वार्तालाप थतां तेमणे मेळवी आप्युं छे. ते पत्र १८६५ नी सालमां लखायुं छे.

पत्र जेवुं छे तेवुं ज—ते ज भाषामां अने ते ज लेखनपद्धतिमां अक्षरशः आप्युं छे अने तेमां लखनारनुं तथा जेना पर ते लखवामां आव्युं छे तेमनां नाम वगेरे पण जोवामां आवे छेः—

॥ तमे लीख्यो छे जे दलपतरायजीना प्रसनना उत्तर नेमीदासजी तपसीइं करी मुक्या हता ते दलपतरायजी मान्या हता ५ अनुव्रत थूलग कह्या ते भाइजीए ५ अनुव्रत थुल पोसामां मांन्ये स्यो तमारो हेतु छे अमने हजी सुधी ए प्रसननो संदेह छे एतलुं जांणीइं छे जे दुवीहं तिविहेणं कह्यो छे ते ते ६ कोटी ५ अनुव्रतनी कही छे एमां तो तमारे अमारे ने ८ कोटीवालाने एक सरषो छे जे ते झगडो तो सांमाएक पोसानी ६ कोटी आठ कोटीनो छे ते तमे एम कहो छो श्रावकनें सामायक व्रत छ कोटी थकी अधीक कोटीए न थाए अने आठ कोटीवाला कहे छे जे आठ कोटीए सुषे थाए अने दलपतरायजो तो ८ कोटीए समांयक करता ते पूज दोलतरांमजी सांमीए अमने कइउं छे तथा दोलतरांमजीनें पण छ ॥ ८ कोटीनी २ सरधा हती ते सरधा प्रमाणें लींबडीमां अमरखीभाइ पण हजी आठ कोटीए सामायक करे छे अने अ-

मारे पण ६ । ८ कोटी २ साची सरधीए छे तेवारे तमे केसो जे आठ कोटीनो मुलगो आंक बतावो ते देवाणुपीया मुल आंक होवे तारे जघडो स्यांनो संदेह स्यांन्यो हेतु प्रषि स्याने जोवी पडे जे समवायंगे सुत्रें कह्यु जे ५० दीनें चोमासाथी छंमछरी करवी ते संवछरी थकी ७० दीने चोमासो उत्तरे उतारवो ए तो ठीक कह्यु पण अधीक मासो थाए तारे झगडो थाय छे तारे भसीष्य सुत्रथी संमाधी थाए छे तेम ८ कोटी उघाडो आंक नथी तारे झगडो थाए छे पण वीरती वधती जांणीने ८ कोटी करे छे एमां अटकाव तो नथी जणातो ते उपर तमने १५ कर्मादांननो पचषांणनो पाठ ३ कर्ण ३ जोगनो देखाड्यो तारे तमे कहो छे जे ए तो ३ कर्ण कह्या छे पण जोगनुं नाम नथी ए वात तमे ममत तांणीनें कीधी छे स्यामाटे जे सुयगडांग वैताली २ अध्ययने कहीउं छे जे तीवीहेणवी पाण माहणे आयहीए अनीयाणसंवुडे एम इहां ३ कर्ण प्रांण हणवां ते कह्या पण जोगनें तीवीहेणं न कह्यो ते माटे इहां जोग ३ मांनो छो के नही कर्ण तीहां नीयमां जोग होवेज जोग होवे तीहां कर्ण पण नीयमा होवेज ते माटे १५ कर्मादानना पचषांण ९ जोगें करे तो श्रावकने थाये मुलगुण ६ कोटी थाए पीण उतरगुण ए लेखे ९ कोटी थाता जणाए तो छे १ ॥

तिवारें तमे लीषीउं छे जे ४९ भांगामां ए ८ कोटीनो भांगो कर्यो नथी ते पण पेहेला तमनें लीष्यो छे जे भगवती

१२ मे ४ उदेशे महुलना पंथ वीषरे तिहां ९ प्रदेशो वीषरता २२५ ए भांगो नथी लीष्यो १० प्रदेशो पंथ वीषरे तिहां २२६ तथा १२२५ ए बे भांगा नथी लीष्या ए ३ भांगा मुल सुत्रे न कह्या पण ए पढम गुरुहीड ठाणे ल....इयापरीठ-पसरीसयापंतीइ भांगा करवानी मुल आमना छे दलपतरायजी अंक लहारी पोते जोडी छे तेमां १० प्रकारना भांगानी मुल आंमना गाथाबंध कीधी छे ते लेषे ए ३ भांगा थाये छे ने पाठमां नथी कह्या तेमांनो छे के नथी मांनना २ ॥ तथा तमें लष्युं छे जे ४९ भांगा तो अणुव्रत आश्री छे तारे अणुव्रत एकवीहे एकवीहेणं पण थाए जावतीविहं तीवीहेणं पण थाए तारे अणुव्रतमां तो तेत्रीसना आंकनो पचषांण आव्यो तारे सुगडांग २३ मे दुवीहं तीवीहेणं अणुव्रत कह्या ते पाठ केम ग्रहो छो ७ सीष्यात्रत तेमां पण कोक ७ मो वरत ११ ने आंके १२। १३। २१। २२। २३। ३१। ३२। ३३। नें भांगे करे तो थाए के न थाय ८ मु व्रत ए ४९ भांगामां गमे ते भांगे करे तो थाए के न थाये जो ७। ८ मुं गमे ते भांगे थाए तो ९। १०। ११ मुं स्ये अटके ते जोज्यो सुग-डांग २३ मे पोसो दुविहं तीविहेणं कह्युं तिम अणुव्रत पिण दुविहं तिवीहेणं कह्युं जे अणुव्रत ४९ भांगे सरवे भांगे थाए तारे सीष्यावरतनें सुं अटके इम करतां सुंत्रपाठ वीना न म-नाइं तो सामायकनो काल मुहूत्री प्रमांणें कहो छो ते कीहां सीद्धांतनी साष थकी कहो छो ३ ॥ सीद्धांतमां वरत वरत

उपर आंक आंक भांगा भांगा वेहीची तो नथी आप्या जे झगडो थाएज नही वरतनें भांगा साधारण जेहवा जणाए छे पछे सक्ति प्रमाणे थाए तीम करे कोइ अणुव्रत ११ मां आंकथी करे तो थाए के न थाए जो सुत्रपाठ जोइए तो सुगडांगनें लेषे न थाए इम तो घणा जणाने अटकाव थाए ने थाए इम कहो भगवतीना भांगाने लेषे तो तां अणुव्रतना भांगा नुन्याधीक थाए तो सिष्यावृतमां कोटी वधारे तेमां सुं अटके छे ४ ॥

तथा तमें लिष्यो छे ममत भावे पूणसे अपरिणाए श्रावकनें संथारामा लागतो लिष्यो छे ते सुंन्य उपीओगे लष्यो छे ते देवाणुपीया अमे तो उपीओगथकी ज लष्यो छे ने वली लीषुं छूं ते नीरधारजो तमे लिष्यो आगल श्रावकें संथारा कर्या तेमां सेवा माटे ग्रहस्थने राष्यो नथी ते वात षरी छे पण केइ श्रावक तथा साधूए तिवीहारो संथारो कर्यो तो ते पण कहुं नथी नें महा सक्तीवंत पादोपगमन संथाराना करणहार थया तेणे चोवीहार जे पचष्या छइं पण हमणां भक्तपरीज्ञा संथारो तीवीहार करे छे के नथी करता तिम महा शक्तिवंत थया तेणे सेवा न करावी पण हमणा श्रावक संथारो करे छे ते अल्प सत्व माटे सेवा वांछे छे के नथी वांछता संथारावालो श्रावक वृद्ध श्रावकनें वांदे छे एतलो संभोग ग्रहस्छ साथें रह्यो छे तारे संथारावाला श्रावकनी वेयावच ते साधु करे के श्रावक करे साधू तो न ज करे

श्रावक पण न करे तारे एहनी वेयावच कुंण करे संथारावालो श्रावक ते साधूने संभागी कहोए के श्रावकनु संभोगी कहीए पडीकमणुं साधू नों करे के श्रावक नों करे ९ कोटाए आहांर सरीर अढार पाप वोसराव्या तो छे ते माटे साधू कहोए के श्रावक कहीइं जे साधू नहो कहीए ते स्यो कारण एटलो ग्रहस्था साथे विवहार छे ते माटे ग्रहस्तनो संभोगी कहीए एहने पूर्व संयोग एतलो रह्यो छे तेतलेज अपरोनायपणुं छे बीजुं नथी ते जांणजो तथा ममत्तभावे ते सुं कहीए अने केटला गुणठाणा लगे लागे ते वीचारी जोजो महानुभाग ममत्त भावे तो जीहां सुधी मोहनी कर्म वदे तेनला १० मा गुणठाणा लग छे भगवती १।३।३ कंषा मोहेणी कर्म मिथ्यातीने लागे छे ते चोवीस दंडके छे ते पण ममत्तभावे अपरीनायमां छे तथा बीजे गुणठाणे मिथ्यात मोहणीने उदे मिथ्यात अभिमुष थयो ते पण ममत्तअपरी० चोथे गुणठाणे कंषा मोहिणी वेदे ते पण ममत्त० छे ५ मे गुणठाणे राष्या द्रव्य अवीरत सेवन रुप ममत० ६ गुणठाणे प्रमाद अवस्था ते पण ममत्त० ७।८।९ मे गुणठाणे वेदनो उदय छे ते पण ममत्त० १० समे गुणठाणे सुक्ष्म लोभनो उदय पण ममठभावी० जिहां लगे पूवतवेणं पूव संजमेणं कमीयाए संगीयाए पणुं छे ते ममत्तभावे अपरीनायमां जणाए छे पण गुणठाणा दीठ ममत भावे जुदी जुदी रीतनुं छे ते सुक्ष्म बुधी थकी वीचारी जोजो तम सरषा डाहा होवे ते समझे थूल बूधी तो

लोभनें ज ममत भावे जाणे एम करतां न मानो तो तमेज कहो ए ममत भावे छे ते केहा भावमां छे उदय उपसम षायक षउपसम परीणांमीकमा स्यामा छे जो उदय भावमां छे तो केहा कर्मना उदयमां छे ते वीचारी जोजो नीयंठो पडीवाइया १४ पूर्विपडीवाइ थाए ते पण ममत्तभावे थकी थाए ते स्या थकी थाए ज्यां लगें मोहेणीकर्मनो उदय होवे त्यां लगें ममत्तभ व कहीए ए अमे तो ए अनुसारं ममत्तभावे सर्वे ठामें ममत्तभावें कह्यो छे अने तमे तो आरंभ समारंभनी नेश्राए ममत्तभावे मानो छो ते माटे तमने ए वचन अपूर्व लागो पण देवाणुपीया ममत्तभावे तो उदय भाव छे ने मोहणीनी प्रकृति छे विषयकषाए आरंभसमारंभ सरागभाव संसारी जीवनो आलाप संलाप वोलवे विनय वीयावच नेश्राई वर्त्तवो ते सर्वे ममत्तभावो केहा के हलवो केहां के भारी केहां के झीणो केहां के जादो जेहवो गुणठांणो तेवो ममतभाव जांणवो जेटली संसारनी पूर्व प्रजाए छे ते सरवे ममतभावे छे पूवतवेणं प्रवसंजमेणं कमीयाए संगीयाए ए पण सुक्ष्म ममत भावे अपरीनाएमां छे जेटलो ज्ञान दर्शन चारीत्रने वाधीक भावे छे इतलो ममतभावे अपरीनाएमां छे ते सुक्ष्म बुधें करी विचारी जोजो ५ ॥ तथा तमें कहो छो श्रावक संथारामां अढार पाप ४ आहारने सरीर वोसराव्यो छे तेहनें ममतभावे स्यो हसे ते उत्तर देवाणूपीया १८ पाप तो साधूई पण पचषा छें पण वली अकृत स्थांनक सेवे छे सियामणोनिसंरइबहिधाए स्यु छे पो-

ताना वस थकी पाव दोष न सेवे पण पूर्व कर्म बलीष्ट छे तेणे करी दोष लागे ए रुप ममत्तभावे छे ते जाणज्यो तथा ४ आहार वोसराव्या छे ते उत्तर गुणें करी वध्यो पण नोसभावउत्ता तो न कहीवाए ए मोहणी समधीओ ममतभावे कीहां गयो छे साधू सरषा नोसनोवउता थया छे ते पण ७ । ८ । कर्मना बंधक थाए छे ते स्ये करी थाए छे मीथ्यातमोहणीकर्म वेदे छे ते स्ये करी वेदे छे तो श्रावकनु सुं कहीवुं एहवुं झीणुं ममतभावे छे ते जांणज्यो अनें तमें कहो छो आणंद श्रावके केहा श्रावक पासें सेवा करावी ते तो भाईजी अनी सामर्थपणे न करावी तेणे तो संथारो चोव्रीहार पचष्यो पण हवणा संथारो श्रावक करे ते तीवीहार करे छे तथा अनेरा श्रावक पासे सेवा पण करावे छे तेनें तमें पचषांण संथारो सरदहो छो के नथी सरदहता ते वीचारी जोजो ६ ॥ ९ कोटीए संथारो श्रावके कर्यो तेहनें गुणठाणो केहो छे पडीकमणो साधू श्रावकनो केहेनो करे तथा संभोगी साधूनें कहाए के श्रावकनो कहीए ९ कोटीमा हट ममतभाव न मांना तो साधू थकी स्युं घटे छे साधू तेहनी सिवा कीम न करे वि० ७ ॥ संथारावालो सेवा कोइनी वांछे नही सरीर वोसराव्या माटे तिम साधू पण संजम लीधो तिवारे सरीरनी सुसरषा वोसरावी छे पण छेवट संघएणी माटे सेवा बांछे छे कोइक कारणे संथारावालाने सेवा जोइएं छे ने साधूनें पण कारणेंज सेवा वांछवी पडे छे अने कारणे तो साधूनें ग्रस्छना सेवा वीयावच

कल्पे एम सुत्रमां कह्यो छे ए पाठ सीद्धांतमां छे अमने मुढे आवे छे पण ऋष्याना भाव नथी एतलुं तमे वाचस्यो तारे चमकसो आकरुं लागसे तांरे फीरीने पुछसों तारें कहिवानो भाव छे ते जांणजो एतली वात अर्थे घरा उपीओगथको लषी छे पण सुन्य उपीआगें नथी लषी ते जाणजो ८ ॥ तथा ममत भावे आश्रयी तो उत्तर घणाइ छे पण लीषता आलस थाए छे ते जाणजो बीजुं अजरामरजीनो हाथ अषरनो उतारो पोसो कोटी ८ लीष्यो छे ते तमें कहो छो जे दरीयापराना उतारा उपर उतारो छे एम करीनें समझा गणो छो पण भाइजी ए उतर साचा जांणीने लीष्या छे के झुठा जांणीनें लष्या छे के अजांणे लीष्या छे तथा कछी साधू थकी अजरामरजी संभोग कीधो भेलो तारे ८ कोटीनी सरधा हतो के न हती जो नहती तो केतलाक बोलनी वंधणी करी तीवारे ८ कोटी निषेधी केम नही तथा हवे षोटी जांणी छे तो पूर्वे ८ कोटी सरधी तथा करावी तेहनुं स्युं आलोयण लीधी हसे तथा इम जाणो जे अमारे ६ कोटीनुं प्रवतन छे पण आठ कोटी नीषेदता नथी षोटी केहेता नथी तिवारे एवडो ममत करवानुं स्युं कारण छे ९ ॥ तथा ८ कोटी पोमानो उतारों छे ते ८ कोटीवाले पत्र मंगाव्यो छे पण ममत वधे ते माटे अमे मुंक्यो नथी एतले तमारो सनेह छे ते माटे तमारी सरम राषवी पडे छे ते जांणवी १० ॥ तथा अणुव्रत तो ४९ भांगे सरवे रीत थाए इम तमे लष्यु छे ते भाइजी ५ अणुंव्रत ३३ नें

आके ३२ । ३१ । २३ । २२ । २१ । १३ । १२ । ११ ने आंके थाए ते तो तमे मांनो छो ते तो ठीक छे एमा तो अणुमोदवानु मन रोकाइं ममतभावे परोत्ताए पण थाए इम मानों छो तारे गुणवर्त्त ३ मां केतली कोटी केतले आंके पचषांण थाता मांनो छो १५ कर्मादान तो सुर्षे थकी ३ करणें पचषाण थाए ७ । ८ । ९ कोटी लगें अटके नही तारे सीव्यावृत केटली कोटीए केहे आंके थातां मानो छो अमनें ते जणावजो जे वारे समायक पोसो ६ कोटी थकी नुंन्याधीक नही मनाए तारे अणुव्रत सुगडांग २३ ना समायक पोसाना लवाजममां केम षटासे ए सका पडव्यानुं ठांम छे विचारी जोजो तथा जे वृत जेतले भांगे थाए तारे तेहना लवाजमनां पचषांण पण तेतली कोटीएज जोइए तारे समायक पोसो छ कोटीए मांनीए तारे अणुव्रत ४९ भांगे ३३ थी मांडी ११ लगें ४९ भांगे केम थासे संथारा वीन्या ते वीचारी जोजो तथा सावद्य जोग छ कोटीए पचषाए नें अनुव्रत ४९ भागे पचषाए एम जुदा २ वे पचषांण १ समे केम थाए सावद जोगने आश्रव ५ ए एकज छे जुदा नथी जेहां सावद्य व्यापार तीहां पांच आश्रवनी नीमा छे नें पांच आश्रव छे तिहां सावज जोगनी नीमां छे ए जुदा २ पचषांणने जुदी बे कोटी केम थाए ते विचारी जोजो १७ ॥ तथा तमे लीष्यु छे जे कोट १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ मुल गुंण पचषांण श्रावकने नीपजे पण कोटी ७ । ८ न नीपजे सुत्र माहें ए भांगो कह्यो नथी

ते माटे वली लष्युं छे जे कोटी ७ । ८ षोटी तो नथी केहेता तथा रष अजरांमरजी दोलतरामजी सांमीनें लेंबडी मध्ये कह्यो छे जे माडवीमां कोटीनों जघडो कछी साधू करे छे छ कोटी सांमायकनी आज्ञा देता नथी ने अमें तो सुषे थकी ८ कोटी सांमायकनी आगन्या दीजीए छइए एतनुं कहीहू तारे आज्ञा वस्तुनी के अवस्तुनी वस्तु मुल्गी न होवे तो आज्ञा स्यांनी ए लेषे आठ कोटी नीषेदो छो पण कांक साचा पण जाणता जणाए छे एम भासे छे अमरसीभाई ८ कोटी सामायक करे छे तेहने आज्ञा तो देवाए छे ते जांणजो बीजुं लेंबडीमां सा. पीतांबर मुलचींदजीनो हाथनुं श्रावक सुत्र भगवंतीनो जांण प्रेमजी पटेल तथा नानजीसाहाए । रुप वनाजीना वाराना ते तो ८ कोटी करना ते जाणजो तथा ६ कोटी सामायक पोसो करे तेहेने तो संग्राम त० चोरी त० छीनाली त० जेतला अकारज अनारजकर्म ते वचने करी वाहा वाहा कहे त० कायानी चेष्टाए अनुमोदे तो दोष लागे नही अनुमोदना छूटी छे ते माटे ते तो तमें नथी अनुमोदता तारे सुपे अनुंमोदनानी कोटो रांको तो सुं अटके छे सामुं बे कोटी व्रत वधे छे एमां गुण तो जणाए छे पछे तो जेम तमारा भाव त्यारे तमे केसो जे आनंद श्रावके आठ कोटी कीम न करी ते तो आनंद श्रावके स्नांन करवा राष्या छे ने कोइ श्रावक स्नांननां पचषांण करे तो सुं भुंडुं के सुं भलुं एमां आनंद श्रावकनुं सुं ओठुं लेवो आनंद श्रावके मासषमण नथी कीधो

नें तमथी थाए तो करो के न करो १२ ॥ तथा तमें लष्यु छे जे तमें पंडीत थइनें लालपाल राखसोमां जुगती मेलवसोमां ते भाइजी ए हूंतो तमनें परम स्नेही जांणुं छुं डाह्या जाणुं छूं जे तमे लीष्यो छो तारे हूं पण लीषु छूं तुम उपरे अमने स्नेह भाव छे पण द्रेष भाव नथी अने छ कोटी उथापतो नथी अमारे पण छ कोटीनी सरदा छे ६ कोटीए करावीए छइइं पण ८ कोटी षोटी नथी केता जो जांणपणुं होवे ने २ कोटी वरत वधारे तो भलुं छे पण भुंडो नथी अनें तमे अमनें लीष्यो छो हुं पण तमनें लिषुं छूं कोइ बीजो तो जांणतो नथी ए वातनी बीक राषसोजमां ८ कोटीवाला ममत करे छे तम थकी ते कांइ में तो सीषव्युं नथी पेहेलाज तमारे ममतो लागी रह्यो छे अनें ८ कोटी पोटो तो भासती नथी ते पोटो कीम केहीए अनें छ कोटीमां तो आपण भेलाज छइए ६ कोटी षोटी कहे तो ते लषजो तेहनें पण जवाब लीषीयें ते जाणजो १३ ॥ बीजुं तमें कहो छो जे ८ कोटीनों आंक देषाडे ते तो भाइजी आंक होवे तारे तो झगडो स्यो ते उपर तो तमनें पुद्गलना षंध वी-षरे भांगा थाये ते उत्तर लीष्यो छे तेहनो जबाप तमें मुल-गोज लष्यो नथी तथा गुरानृतमां १५ कर्मादांन ३ करणे पचषाए छे ते तमे कहो छो इहा जोग नथी कह्या एवा तो डाहा छो पण इम नथी जांणता जे करण जोग तो माहोमाहे नीयमा छे जोग वीन्या कर्ण होवेज नही सुगडांगें २३ तिवी-हेणं समाणमाहेणे ए गाथामां करण कह्या तो सजोग भेजा के

जुदा रह्या ते तथा उतराध्ययने २९ मे दीवमाणुमतोरीछे जो न सेवई मेहूणं मणसा कायवकेणं तंवयं बुममाहणं ए गाथा मांहे जोग कह्या छे तारे ३ करण आव्या के जुदा रह्या छे नेत्रि- हेणंतसेपाणे वियाणीता संगहेणय थावरे जो नहिसइं तिवोहेग तवयं बुमाहणं एमां ३ करण कह्या तारे जोग भेला आव्या के जुदा रह्या एटला दाह्या छो पण कोहांक मपतनो लेहेर आवी जाए छे ते वात तमें डाह्यानें जुगति नही १४ ॥ तथा तमे कहो छो जे ८ कोटीनो पाठ नथी ते भाइजी झाझो झगडो न करो तो सारु बीजुं घणी खरी वातमां अटकाव थासे तमे डाह्या छो सुत्तरथी अणमिलना बीजा पण घणा बोल चाल छे तेहनीज समझण करो तो सारु ते कहे छे ॥ १ साधूने नदी उतर्यानुं प्रायछत कोइ सुत्रमां नथो कह्यो ते हवणा साधू प्रायछित लेए छे तेहनो पाठ कीहां छे ॥ ॥

॥ २ ॥ श्रावकनी ११ पडीमानो काल ६६ मासनो केहेछे ते सुत्रमां नथी पेहली ४ प्रतीमानो काल तो जावजीव लगें सीद्धांतमा कह्यो छे ३ तथा ५६ अनरधीपा ४ दाढा उपर कह्यो छो ते दाढा कीहा सुत्रमां कही छे ४ तथा पडी- कमणुं करतो ५ पदने वांदोछो तेमां केवलीनें त्रीजे पदे कह्यो छो ए सुत्र विरुद्ध कहो छो केवली तो नमो अरीहंताणंमां छे ठाणंग ३ । ४३ । खीणमोहसांणं अरहं ३ तउकमसा जुगवं- खिज्जंतीतिः नांणादस अंतराइयं इहां तो १२ मां गुणठाणाथी ज अरीहंत कह्या छे तारे तमे एक पदना बे पद किम कह्या

छे पोतानी मतथकी एक पदना वे पद कीम कह्या छे अने आयरीयाणं उवजायाणं ए २ पदनो एक चोथो पद कीम कर्यो ए पण पडीकमणामां मोटी भुल जांणजो इत्यादीक घणाइ प्रश्न छे तेहनोज निरणों करो तथा कोइना पडकमणामां संथारानो पाठ नथी केहेता नें साधू पण संथारानो पाठ नथी केहेतां ने आपणे श्रावक कहे छे ते कीहानी साष थकी कहे छे ए श्रावकनो पडीकमणो केहा सुत्र थकी करो छो केतलाक श्रावक समणसुत्र केछे ते केहा सुत्रनी साषे कहे छे तथा सुत्रमां पाठ पेहेला अणुव्रतनो एतलो छे जे थूलग पाणाइवायं पचखाइ ए लेषे अपराधी हणवो ते केहा सुत्रनी साषे कहे छे तथा अब्रह्मचर्यामां घात थाये छे ते अपराधी केइ अणअपराधी वली जाणी प्रीछीनें हणवा नही इम कहे छे ते केही सुत्रनी सार्षे कहे छे तथा बीजा पण बोल घणा छे ॥ तथा भाइ रतनसीजी एक प्रष्न तमनें जाणवा सारु लीष्युं छे तेहनो उत्तर अमने जणावज्यो तुंगीयाना श्रावकने अधीकारे कह्यो जे चाउदसठमउ दीठपुणिमासीसु पडिपूण पोसहं समं अणुपालमाणा तिहां ५ अनुव्रतना नाम सुगडांग २३ मानी परे पाठ नथी तथा सुगडांगे मीश्र पंक्ष वरणव्यो तिहां पण पोसाना पाठ छे तथा उववाइ मधे पण छे बीजे ठामे पण पोसाना पाठ कह्या छे तिहां पडीपुण पोसा कह्या तिहां थुलग शब्द नथी कह्या उमुक मणि सुवननिखित्तसथ मुसल इत्यादि बोल पोसाना लवाजममां कह्या छे तारे सुगडांग २३ मे पडीपुर्ण्ण

सइ एः छेहलो वोल तो कही चूका पछें थूलग पांच कह्या ते पोसाना लवाजममां केम षटासे ए तो अणुव्रत जे कहीए इम कोइ कहे तारे स्यो उत्तर देवो ते लीषीज्यो तथा पोसो तो ६ कोटीइं गणीइं अने अणुव्रत तो ९ आंके ने ४९ भांगे गणीए तारे सीष्यात्रतना पेटामां २३ ना आंकमां सर्व ९ आंक कीम पेसे तथा कइ इम कहे जे २३ मे अधेने पोसो कह्यो छे तेह श्रावकनें पहीला ५ अणुव्रत कह्या होत नें पछे पोसामां फरीने थूल पाठ कह्यो होत तो पोसाना लवाजममां जाणत पण ए तो एकज वारनों पाठ छे ते पोसो तो परीपूर्न थइ थइ चूको नें पछे ५ अणुव्रत कह्या छे तेमाटे एहनें पोसामां की जांणीये ते उत्तर लीषज्यो अमे तो ६।८ कोटीनी चरचामां झाझा नथी संमझता तमारे काम घणुं पडे छे ते माटे तमे लीषजो अमारा लिष्यामां भुलचुक होवे तथा तमे जांणो तथा कडुयो कठोर वचन होवे तो लषजो तमारा संजमपणाना गुण जाणीनें लीषीइं छै तथा तमो पण डाह्या छो ते उपीयोग देइने वांच-ज्यो समभावें रहेज्यो वलता पत्र तमारा भाव हो तेवो तो लषजो भाद्रवा सुद ४ लि. जेठमल ॥ तमारा लष्येवीला बोल घुरा घणा ते उत्तर लोषता आलस थाए छे ने वर्षारुत हती ते माटे विलंब थयो छे ते जाणज्यो ॥ ॥ बीजुं भाइजी सर्व कागलनो सरवालो ए छे जे तमो हवणां कागल लष्या ते देषी अमें जांण्यो जे तमे अणुव्रत तो ४९ भांगे सुषे मांनोछो अने ७ सीष्यात्रत ६ कोटी मांनोछो ते माटे २३ अधेननो पोसो

६ कोटी ठेरावबानें अणुव्रतनें पोसाना लवाजममां घणोछो तारें १० मुं व्रत के आके केतली कोटीए मांनो छो छठा वरत थकी १२ लगेंनी जुदी २ कोटी लीषज्यो एटलुं कांम करज्यो पेहेला कागल २१४ अमें मोकल्या हसे ते तमें राष्या हसे ते कुसलचंद साहथी परोक्ष राष्या हसे तारें कुसलचंद साहे हमणां अमने कागल लष्या छे पण भाइजी तमे तो मीत्र जेहवा छो अंतर नथी पण ममत घणु तमारे छे विद्यानुं बल पुरण अवस्था व्रद्ध पण घणी एटले ममत घणुं सुझे छे पण ए अध्यनमां पहीला समण थयानो सुत्रो छे पछे परीव्राजकनो सुत्रो छे पछे श्रावकनो सुत्रो छे ते इम छे भगवंचणं उदाहू संतेगइया समणोवासगा भवंती तीसिंचणं एवं वुत्तपुवं भवति णो खलु वयं संचाएमो मुंडे भवीत्ता आगाराउ अणगारीयं पहइत्तए वयणं चाउदसमुदीठ पुणिमासीणीसु पडीपूर्ण्णं पोसहं सम्मं अणुपाले पाणा विहरीम्मामो थूलग पाणाइवायं पचपाइसामो थूलग मुसावायं थूलगं अदीणं थूलगं मेहूणं थूलगं परीगाहं पचपाइसामो दुविहं तिवीहेणं मा खलु ममठाए किंचिवी करेहवा कारवेहवा तच्छवि पचखाइसामो तेणं अभोचा अपेचा असिणाइत्ता आसदीपेढीयाओ पचोरुभइत्ता तह कालगता किवतवंसियाए ५ अणुव्रत तो पोसाना लवाझममां गणियें तिवारें ए श्रावक देसमुलगुंण पचषांणीमां गणीइं के देस उत्तर गुंण पचषांणीमा गणीए ते लीषीज्यो तथा बीजो पाठ मुल गुंण पचषांणीनो श्रावकनो जोड नथी

मुल गुंण पचषांणी परीपाटी बध पचषाणनो धणी आणंद तथा तुंगीयाजीपरें तिवारें श्रावक गुणनो पाठ तो जे तें एही-जनें एहनें पोसानोज करणहार उत्तर गुंणी श्रावक कहीए के ए श्रावकनें मुलगुंण पचषांण छे जो मुलव्रतनो पाठ बीजो होवे तो कहो नहीतो मुलगुंणना पाठमांज ५ थुलग ठेहरसे अने पोसाना लवाजममां उमुक मणीसुवण्णनिषोत्त सथमुसल ए पाठ छे ते माटे वीचारी धारीनें अमनें पाछो उत्तर जणा-वज्यो तथा ममत्त भावे अपरिन्नाएमां मोहणीना उदयनी प्रकृती सर्व आवे छे मिथ्यात अव्रत प्रमाद कषाय जोग ए ५ आश्रवद्वार ते ममत भाव जाणज्यो तथा वुछिंदसिणेहमप्पणो गोतम सामीनो राग ए पण ममत भावे मां गण्या तथा चक्र-वर्त्ति वासुदेव अभय कुमार पदमोतरना अठम ए पण ममत-भावे मां ग....तथा नियाणा करे संसार काजें सथ करवानें धरम करणी करे ए पण ममत तथा श्रावक १२ मे देवलोक लगें जाऐ अनें अंबडजीवाला श्रावक धर्म करे तोपण ५ मा लगें जाए ए ७ देवलोकें घटचा ते स्यें करी मिथ्यातनो वेष हजी मुंक्यो नथी तेणे ५ मा देवलोक लगें हद थइ ए वेष ते पण ममत अपरीणाएमां जांणज्यो तथा १५ मे शतकें ५ सरीर ५ इंद्री ३ जोग करतां ५ क्रीया लागे तथा जीवनें २४ दंडके अपचषांण क्रीया लागे तथा प्रमादा साधू लबध फोरवे ए पण ममतमां तथा तमनें पूछोइं छे जे ए ममत भावे अपरिन्नाए पणुं ते केहा द्रव्यमां केह ममत बंध रुपी छे के अरुपी छे

आज्ञा मांहे छे के बारे छे ते लीषज्यो तथा तमे ते अरणक श्राव-
कना कुंडल आश्री लीष्यो तेमां अमे तो पूरो समझ्या नथी कां-
मदेवनें कांइ न आप्युं नें एहनें कुडल आप्यां ते तो देवतानी
जिम इछा थइ तीम कीधूं एमां ६ कोटी ८ कोटीनो हेतु तो
कांइ जणांतो नथी जे वेला कुंडल दीधा ते वेला पडमामां थका
पण एहना थइ चुका जिम ९ कोटीवाला साधूनें कोइ श्रावक
सूत्र वचनें करीनें कहे जे फलाणो सूत्र पुज........तमने फलांणे
दीने आपीस तो ते वचन थकी अण पांम्या द्रव्य उपर साधूनें
पण ममत्तभाव आवे आठे जे परत माहरी थइ चूकी तो एमां
स्युं ए तो ६--८ कोटी ९ कोटीवालाने सरषूं जणाए छे बीजुं तो
कांइ समझण पडी नथी जे तमे स्यामाटे लष्युं छे तथा सुयगडांगे
८ मे गाथा छे जे अवुधा महाभागा वीरा असमत्त दंसीणो
असुधं तेसिं परिकंत सफलं होइसवसो ? तेहनो उत्तर मिथ्या-
तीनुं जाणपणुं ने क्रीया ए २ दुपचषांण पीग सुपचषांण नही
ज्ञान ते पण अज्ञान जाणवुं जइविनगिणेकिसेचरे जइवियभुंजी-
यमासमंतसोजेइह मायावि मिज्जइ आगतागझायणंतसो सुग-
डांग २ अधयनें तथा मासे मासे उजोवालो उतराधयने तथा
भगवतीमां अन्यतीर्तिनो विकुर्वणा तेनो तहा भाव जांणइ अन्न-
हा भाव जांणई सेवंसणविवचासे कह्यो ते मिथ्यातनी नेश्राइं करी
निषेधो अनीनिर्जरा थाए छे ते तो होतीया कोतीया आर-
णीया आवसियामिय लुधग्ग हथीतावसा पंचाग्निदिसापोषी
एमां जेतले कायाकष्ट थयो ते करणी थकी निर्जरा पण थाए

अनतिर्यिना अनुष्टांन करतां पूर्व कर्मनी निरजरा थाय छे पण मिथ्यात सरधा थकी विशिष्ट निजरा नथी असुभ कर्मनी निर्जरानें सुभ कर्मनो बंध तथा सुभ कर्मनी नीरजराने असुभ कर्मनो बध ए तो रीत एकेंद्रीपणाथी मांडी २४ डंडके अनंत कालनी रीत चाली ज आवे छे एहनो वीस्तार घणो कर्व पर पूठे कागलमां लिषतां पार नावे मुढे मल्यो ज कइवाइं मांडवी मध्ये रुषै देवराजजी चोमासुं होवे तो अमारी वती सुषसाता पुछजो अने २३ अधेननो पोसानो उत्तर पूछजो जिम ए कहे तीम धारीनें लिषज्यो तथा हमणां गोपालजीनो समाचार पत्र कोइ आवतो नथी ते कीम कहां वसे छे सुं उद्यम करे छे प्रमादमां पड्या जांणा छे जे कांइ समाचार नथी लीषता एतलो ठपको अमारी वती भाइ गोपालजीनें केजो वीजुं तमें तो डाह्या छो घणाए षरा सुत्रसु वांच्या पण हसे तमारा देसमा सूत्रटवा दरीयापरा छे के परमपरानी छे ते लीष्यज्यो आचारं-ग टवो १ सुगडांग २ गिनाता ३ उववाई ४ रायपसेर्णी ५ जिवाभीगम ६ नंदी ७ सूत्र दरीयापराना उताराना होवे तो समाचार लीषज्यो वीजुं भाइजी दलपतरायजीना प्रसन १८० तो ठांम ठांम वीकानेर जोधपूर दिली आगरो लाहोर लगे पण गया छे पण कोइये उत्तर ठीकाठीक दीधा नथी अनें ए १८० प्रस्न अनें उत्तर रायजीयेना करेला अम पासे छे तेमां पांच अणुव्रत पोसामां ठेरावासारु तो रायजीए नथी लीष्युं एहोनो प्रश्न तो इम छे जे चोथा व्रतना २ नांम कीम दीधा

जे थुलगमेहूणं नें सदार संतोसी पाचमा व्रतना २ नाम कीम दीधा जे थूलगंपरीगहं अनें इछा परीमांणे तेमाटे लीष्युं छे ते जाणजो तथा भगवंतो ५ । ६ उ० धनुषधर बांण नांषे ते पूरषने धनुषनें ५ क्रीया लागे छे ते बांणमांहे जीव नथी चवी गयो छे ए बांणना जीवनां जो गमनादीक प्रांणव ६ क्रीयामां नथी ने एहे उदारक सरीरना मुके लगा थको ५ क्रीया लागे ते स्याथकी पूर्व प्रजोग ८ वीरतभावनें कर्मकर्णना जोग थकी लागी ए पण ममत भाव अपरीनायमां जाणजो पछे जेहवो गुणठाणो तेहवो अपरीनायपणुं जांणवुं जांहांलगे मोहनीकर्मनुं उदय छे वेदे छे तां लगें लारो छे अकषाय यथाक्षात संजमीनें लागे नही तथा कोइ इम पण कहे छे २३ अध्ययने पडीपूंनं पोसहं सम्मं अणुपाले वीहरीसामो ए सबंधे ७ सीष्याव्रत पेटामां आव्या सामायक देसावगासी प्रमुष थुलगमां ५ अणुव्रत आव्या तथावीपचषाइसामो ए शष्टमां पडीमा ११ अभिग्रह आव्या अनें अभोचा अपेचा असीणाइता आंसदी पेढीया उपचोरुहइता तथागता कीव तवंसिया एतले संबंध संथारो आव्यो एतले संपूर्ण श्रावकना गुण आणंदादिक जवो थयो इम हूवे तो मुलगुंग सहित ५ मां गुंणठांणानो धणी पूरो कहीए अने एज पाठ श्रावकनी कर्णीनो कह्यो छे वीजो पाठ मुलगुंणी पचपाणी श्रावकनो ए अध्ययने छे नही एने ५ थूलग पोसाना लवाजममां घालो तारे तो ए श्रावक उतर गुंणी कहीवाए अभीग्रह वीसेषनो धणी पण पूरो व्रतधारी न

कहीइं जेतलो काल पोसो राषे तेटलो काल थूकग रहे पछे अवर्ति पचपांणी थाय अन सदाकाल ५ थुलगनो धणी ए होवे तारे पोसाना लवाजममां केम ठेरे ते वीचारी जोजो. सवंत १८६५ ना भाद्रवा शुद ४ ॥

प्रकरण त्रीजुं.

आयुष्यकर्म.

आज काल आयुष्यकर्म संबंधी विषय ज्यां त्यां चर्चातो होय छे. ते पण बहुधा गुजरात–काठियावाडना प्रदेशमां विशेषे करीने चर्चातो जणाय छे. अयुष्यकर्म त्रूटे छे एम जैन दर्शनना केटलाक संप्रदायो मानी रह्या छे, त्यारे केटलाको ए विषेनी ना कही रह्या छे. केटलाको कदाचित् मध्यस्थ पण हशे. हवे आ संबंधी वस्तुस्थिति खरी शुं छे, ते कोई पण सामान्य बुद्धिमान्ने दृष्टिथी अगोचर थई पडी छे. उंडाण क्यां छे, ते सामान्य रीत्या कोईथी समजातुं नथी. सूत्रकारे आ विषे शुं खुलासो कर्यो छे, ते कोई जिज्ञासुने जाणवानी इंतेजारी थाय, पण ते गुंचवाडामां पडतो होय एम लागे छे. कारण ए छे के सूत्रकारे जे जे दृष्टिथी–अपेक्षायो वस्तु समजावी छे, ते ते अपेक्षा जिज्ञासुना मगजमां कांतो जई शकती नथी, के कांतो तेनुं मगज ते वस्तुरहस्यने पकडी शकतुं नथी. आनुं परिणाम आजे ए आव्युं छे के समाजमां मोटो गुंचवाडो–को-

लाहल जागृत थयो छे. सूत्रकारे सूत्रमां जे भाषा—शब्दो वापर्या तेने वृत्तिकारे—प्रकरणकारे वखत जतां वखतना रूपमां वहेवराव्यां, ने प्रकृत जनोए तेने अनुकूल रूपे बंधबेसतां कर्यां. वृक्षना थड (स्कंध) मांथी जेम शाखाओ फूटे तेम ए सूत्रकारना शब्दोमांथी भिन्न भिन्न अर्थो फूट्या. एकने एक अर्थ बंधबेसतो लाग्यो, बीजाने बीजे बंधबेसतो थयो. उभयनुं मूल एकज छतां उभय विचारकोए स्कंधमां रहेना विचारने छोडी शाखामां रहेल अर्थविचारने पकडी पाड्या. उभयने आग्रह ए थयो के अमूक अर्थ छे ते सत्य छे, ने बीजो अर्थ असत्य छे. आथी परिणाम ए आव्युं के शाखाओनुं मूळ जे स्कंध छे तेमां लांबी फाट पडी.

उभय विचारको हवे पोतपोनाना विचारने केवी रीते जनता आगळ मूकी रह्या छे, ते आपजे आ जग्याए जोवानुं छे. तेओ उभय एम कहे छे के अमे जे कहीए छीए ते ज सूत्रकारोनुं कथन छे, एटले तेओ पोतपोताना पक्षने प्रमाणभूत करवा नीचे प्रमाणे दलीलो आपे छे.

पूर्व पक्ष कहे छे के नेरयिक (नारक) थी आरंभी चोविश दंडक सुधीना जीवो आयुष्य कर्म बांधे छे, पण ते बांधनार जीवो बेप्रकारना छे. एक सोपक्रमी जीवो ने बीजा निरुपक्रमी. निरुपक्रमी जीवो जेवा के नेरयिको, देवो, युगल मनुष्य, ने तिर्यंच, ते सिवाय केटलाक मनुष्य तिर्यंचो, ए जीवो अपूर्ण आयुष्ये मरता नथी. आ विषे चर्चा के तकरार छे नहि,

पण जे रह्या दश औदारिकना जीवो ते विषे तकरार छे. तेओमां निरुपक्रमी जीवो छे, ते पण उपर प्रमाणे अपूर्ण आयुष्ये मरता नथी, पण जे सोपक्रमी जीवो छे, ते जीवो पूर्ण आयुष्ये मरे तेम समजवुं नहि, कारणके ते जीवो सोपक्रमी छे; एटले तेमने उपक्रम—प्लेग, कोलेरा, शस्त्र, विष, अग्नि विगेरे लागतां तेओ आयुष्य पूर्ण कर्या सिवाय शरीरथी चाल्या जाय छे. ते वस्तुने समजाववा आ प्रमाणे दृष्टांत आपे छे के कोई तैलथी पूरित दीपने लई जतो होय ने तेने पवननो सपाटो वागे तो जेम दीप ओलायाविना रही शके नहि, तेम आ मनुष्य तिर्यचना आयुष्यने शस्त्र, विष, अग्नि आदिनो सपाटो वागतां तेनुं आयुष्य पूर्ण थई जाय छे. दीप गमे तेटलुं तैल छतां पवनना धक्का आगळ टकी शकतो नथी, तेम सोपक्रमी मनुष्य तिर्यंचो आयुष्य कर्म गमे तेटलुं छतां विषादि साधनो (निमित्तो) मळतां मृत्युना अकस्मात्थी बची शकता नथी.

वळी विशेषे करीने पूर्व पक्ष एम कहे छे के सोपक्रमी जीवो काष्टना गृहनी जेम छे. काष्टगृह अत्यंत सुंदर ने मजबूत छतां अग्नि लागतां नाश पामी जाय छे, तेवां आ आयुष्यो छे. रज्जु—दोरडी लांबी होय ने तेने एक छेडे अग्नि लागे, तो ते धीमे धीमे बळे, पण एकत्र करवामां आवी होय ने पछी जो अग्नि लागे, तो साफ थई जाय छे तेवां आ आयुष्यो छे. वळी आयुष्यकर्म संवर्त थाय छे एटले आयुष्य दीर्घ होय ते संक्षेपमां आवी जाय छे, ते एवी रीते के वृक्षनुं फळ

परिपाक समये पाके छे, तेने जो शीघ्र पकववुं होय तो जेम घास तृणमां तेने राखवामां आवे, ने ते पाकी जाय छे, तेम आ मनुष्य तिर्यंचनुं आयुष्य दीर्घ होय तोपण घास तृण समान विघ्नो आवतां थोडा वखतमां ते खलास थई जाय छे. जेम कोई मनुष्य मुसाफरीए निकळ्यो, ते दररोज अमूक माईल कापे छे, पण जो ते विशेष माईल कापी नांखे तो शीघ्र पहोंची जाय छे, तेम मनुष्य तिर्यंचो पोताना आयुष्यने श्वासोच्छ्वास विशेष करी के जेम तेम जींदगीनो खोटो व्यय करी जलदी पूर्ण करे छे.

पूर्वपक्षनो आ वधी दलीलो अर्थरूपे कही, पण ए आशयवाळी ग्रंथकारोनी गाथाओ छे ते नीचे जणावीश.

पूर्वपक्षनी तरफेणमां जती जुदा जुदा स्थळे घणी व्याख्याओ छे. ए वधी एकत्र करी पत्रपर मूकतां घणो वखत जाय ए सहज छे; तोपण जेओने जोवानी इच्छा होय तेओने सूचना छे के विशेषावश्यक भाष्य, कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, वगेरे वगेरे मुख्य ग्रंथो छे,—जेओ सूत्रकारोथी सहज पण धीमे धीमे छूटा पडी चालु वातावरणने दृढ करी रह्या छे—ते जोई जवा. एटले पूर्व पक्षनी केटलीक रीते तरफदारी करती केटलीक दलीलो ग्रंथोमां छे, तेम सूत्रोमां पण छे. तो हवे सूत्रोमांथी ते दलीलो एक पछी एक तारवी पूर्वपक्ष नीचे प्रमाणे मूके छे.

(पूर्वपक्षना आशयवाळी गाथाओ नीचे जणावीश

एवुं जे कह्युं ते आ सूत्रनी वृत्तिमां जे छे, ते साथे साथे मूकीश.)

जुओ सूत्र स्थानांग–७ मुं स्थान–उद्देशक ३ जो–सूत्र ५६० (आगमोदय समिति)

सत्तविधे आयु भेदे पं. तं. अज्झवसाण निमित्ते आहारे वेयणा पराघाते फासे आणापाणु ॥
सत्तविधं भिज्जए आउं ॥
अध्यवसान–राग, स्नेह, भय रूप अध्यवसायथी.
निमित्त–दंड, कशा शस्त्रादिथी.
आहार–आहार–भोजन अधिक करवाथी.
वेदना–नयनादिनी पोडा थवाथी.
पराघात–गर्त्तादिमां पडवाथी.
स्पर्श–भुंजगादिनो स्पर्श–दंश थवाथी.
आणपाण–उच्छ्वास निःश्वासनो निरोध थवाथी.

एम सप्त प्रकारथी (आयुः भिद्यते) आयुष्य भेदाय छे. आ जग्याए तेनी नीचे टीकाकार विवेचन करे छे के, सोपक्रम आयुष्यवाळानुं आयुष्य भेदाय छे–बीजानुं नहि. वळी एम शंका थाय छे के एम होय तो कृत कर्मनो नाश थशे ने अकृत कर्मनो अभ्यागम थशे. जेमके–

" कम्मोवक्कमिज्जई, अपत्तकालंमिजई तओपत्ता;
अकयागम कयनासा, मोक्खाणासासओ दोसा. "

अप्राप्तकाले यदि कर्म उपक्रम्यते, ततोऽकृतागम

कृतनाशान् मोक्षेऽनाश्वासाः दोषाः ।

काळ नहि आव्या पेहेलां जो कर्म उदयमां आवे तो अकृतनुं आववुं ने कृतनो नाश थशे, तेथी मोक्ष थवामां दोष आवशे. समाधान—

"नहि दीह कालियस्स, विणासा तस्साणुभूइओ खिप्पं
बहु कालाहारस्स व दुय मग्गिय रोगिणो भोगो (१)"
" सव्वं च पएसतया भुज्जइ कम्ममणुभागओ भइयं
तेणावस्साणु भवे के कयनासादयो तस्स?" (२)
" किंचिदकाले वि फलं पाइज्जइ पच्चए य कालेणं,
तहकम्मं पाइज्जइ कालेण वि पच्चए कम्मं" (३)
" जह वा दीहा रज्जू, डज्झइ कालेण पुंजिया खिप्पं
वितओ पडो उसुस्सइ पिंडीभूओउ कालेणं (४)

संस्कृतमां अनुवादः—

अग्निरोगिणो बहुकालाहारस्यभोग इव दीर्घकालिकस्यापि
तस्य क्षिप्रमनुभूतितो नो कृतो नाशलक्षणो दोषः (१)
सर्वं च कर्म प्रदेशतया, भुज्यतेऽनुभागतो भक्तं
तेना वश्यानुभवे कर्मणः के कृतनाशादयस्तस्य (२)
किंचित् फलमकालेपि पाच्यतेऽन्यत् कालेन पच्यते
तथा कर्म पाच्यते अन्यत् कालेनापि पाच्यते (३)
यथा दीर्घा रज्जुः कालेन दह्यते पुंजिता क्षिप्रं,
क्षिप्रं विततः पटः शुष्यति पिण्डीभूतस्तु कालेन (४)

लांबा काळे पूर्ण थाय (खाई शकाय) तेवा आहारने

जेम अग्निरोगी व्यक्ति थोडा वखतमां साफ करी नांखे छे, तेमां नाशलक्षण दोष नथी. (१)

अनुभागथी भक्त थएलुं सर्व कर्म जेम प्रदेशथी भोगवाय छे, तेथी अवश्य कर्मना अनुभवमां कृतनाशादि क्यांथी होय ? (२)

अन्य काळमां पाकवानुं फळ अकाळे जेम पकवाय छे तेम अन्य काळमां भोगववानुं कर्म आगळथी भोगवी शकाय छे. (३)

लांबी दोरी-रज्जु लांबा काळे बळी शके, पण भेगी थवाथी जेम क्षिप्र-तुर्त बळी जाय छे. पट-कपडुं घडीबंध होवाथी लांबाकाळे सूकाय, पण पहोळुं करवाथी तुर्त सूकी जाय छे. (४)

उत्तराध्ययन-अध्ययन ४-गाथा १.

असंखयं जीविय मापमायए ॥

(शान्त्याचार्य टीका)-जीवितं (आयुः) न संस्कृतं वर्तते शक्रशतैरपि सतो वार्धयितुं त्रुटितस्य वा कर्णपाशवत् अस्य संधातुमशक्यत्वात ॥

अंतकृत दशांग-वर्ग-३, अध्ययन ८. गज सुकुमाराधिकारे.

ठितए चेव ठितिभेएणं कालं करिस्सति ॥

भेदेणं-आयुःक्षयेण.

उभो छतो आयुः कर्मने भेदीने (क्षय करीने) काल करशे.

"अकाले चेव जीविआतो ववरोविए"

अकाले–आयुष्यनो काळ आव्या विना जींदगीथी चाली गयो.

(आ पाठ घणां सूत्रमां घणी जग्याए छे. तेनो अर्थ उपर प्रमाणे करे छे.)

जुओ, सूत्रकृतांग अध्ययन १३ मुं, गाथा २० मी.

केसिं चि तक्काइ अवुज्झ भावं।
खुद्दं पि गच्छेज असद्दहाणे॥
आउस्स कालाइयारं वघाए।
लद्धाणुमाणे य परेसु अट्ठे॥

टीकार्थ एम छे के—

कोई पण मिथ्यादृष्टि–(कुतीर्थिक वासित) एटले पोताना दर्शनमां आग्रह छे जेओने, तेओ–मनुष्यना भावने, कोई साधु के श्रावक, पोतानी बुद्धिथी नहि समजी तेने, धर्ममां स्थापन करवा इच्छा राखतो, तिरस्कारना शब्दो वापरे, तो ते सांभळनार मिथ्यादृष्टि सारुं नहि मानतो पालक पुरोहितनी जेम क्षुद्र भावने करे, एटले घणी नीचता वापरे, ते वखते उपदेश आपनारना आयुष्यने–कालातिचारं दीर्घ स्थिति होय तेने–संवर्तयेत (टीकाकार कहे छे के) संकुचित–टूंकुं करे.

मतलब के वक्ताए पुरुषने समजी धर्मदेशना करवी. एटले आ पुरुष कोण छे, राजादि छे? वा कोण देवता वि-

शेषने नमन करनार छे ? जे पुरुष आ वस्तुने नहि समजी उपदेशमां विरोधवाळुं कथन करे तो ते आ भवमां के परभवमां मरणादि अपकारने पामे. मुनि जे कारण माटे पराभिप्राय जाणवाने अनुमान प्राप्त करी जे विषय कहेवानो होय तेने कहे. आ उपरथी स्पष्ट समजाय छे के आयुष्य होय तेने कोई अणसमजु–ओछुं करनार मळे तो आयुष्य ओछुं थाय छे.

आटला उपरथी पूर्व पक्ष कहे छे के आयुष्य कर्म त्रूटे छे ए अमारो सिद्धान्त अचल छे, तेमां शंका करवा जेवुं कांई नथी.

उत्तर पक्ष आयुष्य कर्म त्रूटे छे एम मानवामां अचकाय छे, एटले तेनुं धारवुं तेनाथी जुदी बाजुनुं छे. उत्तर पक्ष कहे छे के, पूर्व पक्ष ! आयुष्य कर्म त्रूटे छे ए विषेनी तमारी सघळी दलीलो हुं सांभळी गयो, ने तमारुं ए विषे जे कहेवुं छे, ते बराबर समजी गयो. तमारी दलीलो सर्व प्रकारे खोटी छे एम नथी, पण वस्तु शुं छे, ने ते क्यां ताणी जवाय छे, ए बराबर समजातुं नथी. मने पोताने मात्र सूत्रो–आगमो ज मान्य छे, ने प्रकरणग्रंथो मान्य नथी तेम आग्रह के ममत्व नथी; पण मारे कहेवुं जोईए के सूत्रमां जे वार्ता उपलब्ध थती न होय ते वार्ताने ग्रंथकारो कोई बीजी रीते दृढ करे तो ते ग्रंथने केटली हद सुधी मानवा ? तमोए सोपक्रमी निरुपक्रमी जीवोनी व्याख्या जे करी ते व्याख्या सूत्रमां क्यांए निकळती जणाती नथी; एटले तमोए कह्युं के निरुपक्रमी–उपक्रम रहित–जीवो अपूर्ण आयुष्ये मरता नथी, पण सोप-

क्रमी उपक्रम लागता-जीवो आयुष्य पूर्ण कर्या विना मरे छे, तो ते वार्ता प्रज्ञापनाना व्युत्क्रान्ति नामना छठ्ठा पदमां चाली छे. पण त्यां अर्थ तेवो कांई नथी. जेम तमोए दलीलो आपी तमारा अर्थ-आशयने मजबूत कर्यो, तेम मारा आशय-ने मजबूत करवा सूत्रोमांथी पूरावा आपवा इच्छा राखुं छुं. तमोए जे जे दलीलो आपी, ते खोटी छे के अयथार्थ छे, तेम कहेवा करतां सूत्रोमां ते विषे शुं कथन छे, ते कहेवुं बस छे.

हे पूर्व पक्ष! तमो सोपक्रमी आयुष्य एटले टीकाकार-ग्रंथकारना कहेवा प्रमाणे आयुष्य संकोच-संवर्त-थाय छे एम कहो छो, पण तेम प्रज्ञापनामां नथी. प्रज्ञापनामां व्युत्क्रान्ति पदमां आ प्रमाणे वार्ता करी छे के 'नेरयिकथी आरंभी यावत् स्तनित कुमार सुधीना जीवो-जेओ निरुपक्रमी छे तेओ-छ मास शेष आयुष्य रहेतां परभवनुं आयुष्य बांधे छे. पृथ्वी, जळ, अग्नि वगेरे मनुष्य तिर्यंचो सोपक्रमो छे, ने निरुप-क्रमी छे; तेमां जेओ निरुपक्रमी छे, तेओ आ भवना आयुष्य-मां त्रीजो भाग शेष रहेतां आवता भवना आयुष्यने बांधे छे. ने जेओ सोपक्रमी छे, ते तो त्रीजो भाग शेष रहेतां, आवता आयुष्यने बांधे; तेम न बांधे तो तेनो त्रीजो भाग शेष रहेतां; एम न बांधे तो त्रीजा भागना त्रीजा भागे भाग करतां छेवट अंतर्मुहूर्त रहेतां आयुष्यने बांधे. व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक देवो निरुपक्रमी छे, ते तो प्रथम नेरयिकनी जेम आयुष्यने बांधनारा छे.' आ जग्याए सूत्रकारे आयुष्य संवर्त-संकोच

पामे छे, एम शाने न जणाव्युं ? तेम छतां तमो कहो तेम कहीए, तो पछी ए शंका उपस्थित थाय छे, के कोई जीव सो वर्षनुं आयुष्य बांधी आ मनुष्य भवमां आव्यो, तेने एंशी वर्ष थई गयां, ने तेवामां तेने कांई अकस्मात् थयो; एटले तमारा कथन प्रमाणे प्लेग, कोलेरा, शस्त्र के विषनो उपक्रम थयो, ने ते मनुष्य मरी गयो. हवे तेना आयुष्यनां विश वर्ष जे बाकी रह्यां ते वर्षनुं शुं थाय ? वा ते जीव ते वर्षोने क्यां भोगवे ? कारणके साते कर्मो आयुष्य सिवाय जीव साथे जाय छे, तेम आ भवनुं आयुष्यकर्म आवता भवमां साथे जाय तेम समजातुं नथी. आ जग्याए तमो उत्तर एम आपशो के दोरी भेगी थई होय तेने अग्नि लागे ने जेम ते एकी साथे साफ थई जाय छे, शेष रहेती नथी, तेम मनुष्य के जीव पोताना आयुष्यने तेटलामां त्यां ने त्यां वेदी–भोगवी–ले छे, पण आयुष्य शेष रहेतुं नथी. मनुष्य पोताना हस्तने लांबो करी ऊभो होय, ने जेम खेंची ले छे, तेम ए विश वर्ष एंशी वर्षमां भळी जाय छे. एटले आवता भवमां ते जीवने ते वर्षो भोगववा रहेता नथी.

उत्तर पक्ष कहे छे के, जो तमो एम कहेता हो तो तमारो सिद्धान्त हुं जे कहुं छुं ते दाखला साथे मळतो आवशे के ? एक परोणाने एक गृहस्थे जमवा बेसाड्यो. त्यां तेणे तेने थाळीमां भोजन पीरस्युं. परोणो जमवा लाग्यो. ते जमतां जमतां घणो भाग जमी गयो. जमवामां तेने स्वाद लाग्यो,

पण थोडो भाग रह्यो के थाळीमां कृतरा-तूटी पड्या. परोणो जमवानुं अपूर्ण मूकी ऊभो थयो. एटले ए परोणो पूरेपूरुं जमी शक्यो नहि. हे मित्र! हवे ते परोणो ते भोजन पूरेपुरुं जम्यो छे, तेम धारशे, के बाकी मूकी उभो थयो छे, तेम धारशे? जमवामां बाकी रहेलुं भोजन तेना भाग्यमां होत तो ते शाने उभो थात? पण ते भोजन श्वानना नसीबनुं हतुं एम आपणने शुं नथी लागतुं? आ दृष्टांत साथे तमारो सिद्धान्त मेळवीए तो तमारो सिद्धान्त नासीपास थाय छे, के पछी आ दृष्टांतने नासीपास थवुं रह्युं?

उत्तर पक्ष कहे छे के, आयुष्य कर्म तूटे छे एवो जे तमारो सिद्धान्त छे ते आ उपरथी कोई रीते मजबूत थतो नथी.

पूर्वपक्ष कहे छे के, आयुष्य कर्म तूटे छे ते वार्ता कार्मग्रंथीय ग्रंथो-पंचसंग्रह, कर्मप्रकृति (शिवशर्मसूरिकृत) विगेरेमांथी कहाडी बतावुं. त्यां मोहनीय आदि आठे कर्मनी उद्वर्तना, अपवर्तना, संक्रमण विगेरे थाय छे, ते वार्ता चाली छे. ते उपरथी स्पष्ट समजाय छे के आयुष्यकर्म पण बीजां कर्मोनी जेम घटे छे. मारुं एम कहेवुं छे, के तमारे ए ग्रंथो जरुर वांची जवा जोईए. वांचवाथी तमो जरुर ए विषयने समजी शकशो. त्यां उद्वर्तन, अपवर्तन संबंधी घणी विवेचना चाली छे, तोपण तेमांथी यत्किंचित् व्याख्या कही बतावुं. कर्मप्रकृति संक्रमकरण प्रकरणनी ३० मी गाथामां ए प्रमाणे जणाव्युं छे के जीवो जघन्य स्थितिथी प्रारंभी उत्कृष्ट स्थिति

सुधीनां कर्मो बांधे छे, पण ते बंध पडेल स्थितिने जीव पूर्ण करे छे तेम कांई नथी. जेम के, मिथ्यादृष्टिमां वर्ततो जीव होय त्यारे उत्कृष्ट भावमां आवी जाय तो ते ७० क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी स्थिति बांधी ले छे; पण ते जीव अंतर्मुहूर्तमां विशुद्ध भावमां आवी जाय तो तेनी ते स्थिति पलटी जाय छे, एटले ते स्थितिनो संक्रम थाय छे. एटले ग्रंथकारना कहेवा प्रमाणे ते जीव मिथ्यादृष्टिमां अंतर्मुहूर्त रह्यो, पछी ते स्थितिना संक्रमथी ते जीव मिश्रमोहनीयमां के पछी सम्यक्त्वमां गयो. ते गाथानो आ आशय छे. (एटले जे कर्म प्रकृतिरूप परमाणुओ होय, ते अन्य प्रकृतिरूपे परिणमे छे. एटले के अंतर्मुहूर्त न्यून ७० क्रोडाक्रोडि सागरोपमनी स्थिति मिश्रमां अथवा सम्यक्त्वमां संक्रमे छे, अने संक्रमावलिका व्यतीत थया पछी उदयावलिकाथी उपरनी सम्यक्त्व स्थितिने अपवर्तना करणथी स्वस्थाने संक्रमावे छे. तथा मिश्र मोहनीयरूपे संक्रान्त स्थितिनी संक्रमावलिका व्यतीत थतां उदयावलिकाथी उपरनी मिश्रमोहनीयनी स्थितिने पण सम्यक्त्वमां संक्रमावे छे, अने स्वस्थानमां अपवर्तना करे छे.) (जे प्रकृति पोताना परमाणुओने अन्य प्रकृतिरूपे परिणमावे नहि, परंतु हीन वा अधिक स्थितिवाळा पोताना ज परमाणुओमां संक्रमावे ते स्वस्थान संक्रम छे.)

आ वार्ता मोहनीय कर्म विषे कही. पण आयुष्यकर्म विषे शी रीते संक्रम थाय छे, ते विषय तेनी २९ मी गाथा-

मांथी यत् किंचित् नीचे आपुं छुं.

'नरक द्विकनी २० क्रोडाक्रोडि सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति बांधीने बन्धावलिका व्यतीत थया पछी ते आवलिकाथी उपरनी सर्व स्थितिने मनुष्यद्विकमां बांधतो ते जीव मनुष्यद्विकमां संक्रमावे; अने मनुष्यद्विकमां पण संक्रम्या पछी आवलिका मात्र काल सुधी सर्व करणने असाध्य होवाथी संक्रमावलिका व्यतीत थये छते उदयावलिकाथी उपरनी सर्व पण स्थितिने फरी देवद्विकमां ते जीव बांधी त्यां (देवद्विकमां) संक्रमावे छे.'

पूर्वपक्ष कहे छे के, आयुष्यकर्म त्रूटे छे, तेमां उपर्युक्त पूरावो वधारो करे छे. एटले आयुष्यकर्मनी स्थिति बांधे छे तेम रही शकती नथी. तमो कहो छो के आयुष्यनो बंध पड्यो होय ते फरी शके नहि; पण आ उपरना कथनथी तमो जाणी जशो के तमारो सिद्धान्त—आयुष्यकर्म बंध पामेल फरे नहि ते—सत्य छे तेम नथी.

उत्तर पक्ष कहे छे के, मात्र आटला पुरावाथी जो तमो एम समजी गया हो के तमारो सिद्धान्त बराबर छे, तो ते उतावळथी बांधी नांखेलो जेम कोई विचार मनुष्यने भूलवे छे, तेम आ मात्र एक भूलवणी छे. जे ग्रंथनो तमो आधार आपो छो, तेनोज अत्र पूरावो आपी पछी सिद्धान्त—सूत्र-मांथी पूरावो आपीश. संक्रमकरणनी ३० मी, २९ मी गाथामांनो अर्थ तमोए कह्यो, पण तेमां एवुं कांई स्पष्ट जणातुं

नथी के आयुष्यनुं उद्वर्तन अपवर्त्तन थतुं होय. (आयुष्य अधिक न्यून थतुं होय.) संक्रम थाय छे एटले नरक आयुष्य मनुष्यमां जाय; मनुष्य आयुष्य पलटाई देव आयुष्य थाय एम कह्युं; पण तेथी आपणो जे विषय चर्चाय छे, तेनो कांई संबंध मळतो नथी. तोपण संक्रम थाय छे एम ज्यारे तमो कहो छो तो हुं कहुं छुं के आयुष्यकर्मनो संक्रम पण थतो नथी. तेने माटे नीचे जुओ, तेनीज ३१ मी गाथानो अर्थ.*

" अथ आयुष्यनी स्थिति शुं बंधोत्कृष्ट छे, के संक्रमोत्कृष्ट छे ? गाथाकार कहे छे के आयुष्य बंधोत्कृष्ट छे परन्तु संक्रमोत्कृष्ट नथी, कारणके 'मोहदुगाउगा मूल पगडीणं न परोप्परंमि संकमणं ' एटले मोहनीय द्विक ने आयुष्यनी मूळ प्रकृतिओनुं परस्पर संक्रमण थतुं नथी. " आ जग्याए एम कहेवानुं छे के जे प्रकृतिओनुं संक्रमण थतुं नथी, ते प्रकृतिओनुं तो उद्वर्तन पण थतुं नथी, एम ए ग्रंथमां अन्य स्थळे जणाव्युं छे. हे पूर्व पक्ष! तमोने आटला उपरथी एटलो तो ख्याल आव्यो हशे के ग्रंथकारो पोते केटली रीते अनिश्चयात्मक विचारो पुस्तकोमां मूके छे ? केटलीक रीते तेओ सूत्रकारो साथे मळता थाय छे, ने केटलीक रीते जुदा थतां पण अचकाता नथी. ग्रंथोमां आठ कर्मनो वधघट थाय छे तेम कह्युं, पछी एक पछी एक कर्मनुं विवेचन करी आयुष्य-

* आ जग्याए गाथाओ तेम सत्र अर्थ लखवामां आव्या नथी, कारणके सर्व लखतां बहु विवेचन थाय, माटे ग्रंथमां 1 वुं.

कर्मनी व्याख्या करतां तेनुं संक्रमण थाय छे एम कह्युं. पाछळथी जणाव्युं के ते आयुष्यकर्म संक्रमोत्कृष्ट नथी, पण बंधोत्कृष्ट छे. आटलुं छतां कोई एक जीव एक भवना आयुष्यनो बंध करी तेमांथी थोडां पण वर्षने अपूर्ण मूकी काळ करी गयो एवी वार्ता क्यांए पण निकळती नथी.

सूत्रकारे प्रज्ञापना सूत्रमां, जीवो केवा प्रकारे कर्मप्रकृतिने बांधे छे ते बाबत समजावी छे. त्यां एम कह्युं छे के, ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय ने अंतरायनी स्थिति उत्कृष्ट ३० क्रोडाक्रोडि सागरोपम सुधी जीवो बांधे छे. मोहनीयनी उत्कृष्ट स्थिति जीवो ७० क्रोडाक्रोडि सागरोपमनी बांधे छे. आयुष्यकर्मनी स्थिति नेरयिक देवो दश हजारथी ३३ सागरोपम सुधीनी बांधे छे. मनुष्य तिर्यंचो अंतर्मुहूर्तथी त्रण पल्योपम सुधी बांधता होय छे. सात कर्मनी दरेक प्रकृतिनी स्थिति जघन्य उत्कृष्ट सर्व गतिना जीवो आश्रयी समजावी छे. एटले के साते कर्मनी प्रकृतिओने जीवो जथाबंध बांधे छे, ने जथाबंध खलास करे छे. पण आयुष्यकर्मनी स्थितिने जीवो तेम जथाबंध बांधता होय तेवुं सूत्रकारे जणाव्युं नथी. तेम बांधेल एक भव आश्रयी आयुष्यनी स्थितिने जीवो खलास करे छे, ते पण जणाव्युं नथी. कहेवानो आशय ए छे के ग्रंथकारोए साते कर्मना उद्वर्तन अपवर्तन ने संक्रमण विषे हकीकत कही तेनी साथे आयुष्यकर्मने जेम भेळवी दीधुं, ने पाछळथी जुदुं पाड्युं, तेम सूत्रकारे समजाव्युं नथी; पण साते

कर्मथी भिन्न आयुष्यकर्मनी व्याख्या करी छे. जीव साते कर्मनी प्रकृतिने घटाडी शके छे, तेम वधारी शके छे. पण आयुष्यकर्मनी प्रकृतिने जीव तेम करी शकतो नथी, एटले के वधारी के घटाडी शकतो नथी. ए संबंधी तमो कहो तेटला सूत्रोथी पूरवा आपुं.

उत्तराध्ययन, अध्ययन २९ मुं, २२ मुं प्रश्न.

अणुपेहाएणं भंते जीवे किं जणयइ; अणुपेहाएणं आउयं वज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणीय बंधण बंधाओ सिढील बंधण बंधाओ पकरेइ दीह कालट्ठिइयाओ रहस्स कालट्ठिइयाओ पकरेइ, इत्यादि.

अनुप्रेक्षा—विचार करवाथी जीव आयुष्य वर्जी सात कर्मनी प्रकृतिओ दृढ होय तेने शिथिल (ढीली) करे, तीव्र होय तेने मंद करे, दीर्घ होय तेने ह्रस्व करे, ने बहुप्रदेशक होय तेने अल्पप्रदेशक करे, विगेरे. आ जग्याए जीव आयुष्य विना साते कर्मप्रकृतिने निर्बळ करे एम समजाव्युं. हवे प्रबळ करे ते विषे नीचे जणावुं छुं.

जुओ भगवती—शतक १२ ना पहेला उद्देशकमां शंखाधिकारे.

कोह वसट्टेणं भंते जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ, संखा कोहवसट्टेणं जीवा आउयं वज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ सिढिल बंधण बंधाओ धणिय बंधण बंधाओ पकरेइ रहस्स काल-

ट्ठियाओ दीहकाल ट्ठियाओ पकरेइ......एवं माणव-सट्टेणं मायावसट्टेणं लोहवसट्टेणं ॥

क्रोध करवाथी, मान करवाथी, माया करवाथी ने लोभ करवाथी जीव साते कर्मनी प्रकृतिओ शिथिल होय तेने दृढ करे, मंद होय तेने तीव्र करे, एम दीर्घने बहुप्रदेशक करे. एमज १२ शतकना २ जा उद्देशमां श्रोत्र इंद्रिय चक्षु इंद्रिय विगेरेना लोलुपी भावथी जीव साते कर्मने उपर प्रमाणे बांधे छे, ने तेमां वधारो करे छे, आयुष्यकर्मने घटाडवा के मंद करवा के वधारवा संबंधी कांई हकीकत आवी नहि. आथी शुं एम नथी समजातुं के आयुष्यकर्मनुं बांधवुं बीजां कर्मो करतां जुदी रीते छे? आयुष्यकर्म जीव जे गतिमां जाय छे ते गति साथे, जे जातिमां जाय छे ते जाति साथे, जे स्थिति होय छे ते स्थिति साथे, एवी रीते दृढ निधत्त बांधे छे, के पोते तेनाथी छूटवा चाहे तो पोते छूटी शकतो नथी. तो पछी बीजाओ शुं तेने (ते जीवने) आयुष्यथी छोडावी शके ? जीव पोते ते भवमां मोक्षगामी होय तो ते प्रशस्त विचार ने अघोर पुरुषार्थ—उद्योगथी साते कर्मने निर्बळ करे, पण आयुष्यने थोडुं-लव पण न्यून करी शकतो नथी.

पूर्व पक्ष कहे छे के, जो तमो आम कहो छो तो स्थानांग सूत्रमां 'सत्तविहं भिज्जइ आउं' आ सूत्र जे प्रथम हुं कही गयो छुं तेनुं तमो शुं कहो छो ? अद्यापि सुधी ग्रंथनी वार्ता हती, ते तमोने मान्य नथी, तो चाल्युं; पण आ सूत्र छे, एटले

तमाराथी ते विषे ना कही शकाय तेम नथी.

उत्तर पक्ष कहे छे के, ग्रंथो अमारे मान्य नथी एवुं अमोए क्यारे कह्युं ? महापुरुषोनां वचनो—सूत्रो साथे जे वचन मळतुं आवे ते तो अमारे मान्य छे, पण जे वचननी संधि न मळे, तेने केवी रीते मानवुं ? स्थानांगमां तमोए जे कह्युं ते सूत्र बराबर छे. ए सात कारणोथी मनुष्य ने तिर्यंचो मरे छे. मनुष्य तिर्यंचोने मरतां ए सात कारणो लागे छे. नेरयिक ने देवोने ए कारणो लागु पडतां नथी. टीकाकारे सूत्रनो वृत्तिमां अर्थ करतां 'सोपक्रमीनुं' एम वधारो कर्यो छे, एटले सोपक्रमी जीवोनुं आयुष्य ए सात कारणे भेदाय छे तेम कह्युं छे. पण सूत्रकारे सूत्रमां 'सोपकम्माणं' एम मूक्युं नथी. हवे तेनो अर्थ अभ्यासीओ जेम ठीक लागे तेम करे. पण आपणे अत्र तेनो अर्थ एटलो ज मात्र स्पष्ट करीए के 'सात प्रकारे आयुष्य भेदाय छे' ए बस छे. सूत्रकार कहे छे के जेम लोढानो घण काष्टपर मारतां काष्ट फट दई भेदाई जाय—फाटी जाय छे, तेम राग, स्नेह, भय विगेरेनो उंडो आघात हृदयमां थवाथी, चाबूकना प्रहारथी, दंडना प्रहारथी, शस्त्र विष विगेरेथी, अधिक भोजन लेवाथी, नयनादिने पीडा थवाथी, सर्पआदिना दंशथी, खाडामां पडी जवाथी, उच्छ्वास निःश्वासनो धक्को वागवाथी (प्राणीओनां) आयुष्य भेदाय छे, एटले आयुष्य खलास थई जाय छे : एम जे वस्तु जणावी छे, ते उपरथी कोनां आयुष्य खलास थाय छे एवो

प्रश्न उभो थाय छे. पण सूत्रकारे नेरयिक देव मनुष्य के तिर्यंच एम सोपक्रमी के निरुपक्रमी कोईनुं नाम आप्युं नथी. हवे आपणे विचार करीए के:नेरयिक के देवो ते सात कारणोथी मरता नथी, पण मनुष्य के तिर्यंच ते सात कारणोथी मरे छे. पछी ते मनुष्य तिर्यंचने सोपक्रमी कहो के निरुपक्रमी कहो. पण ए सात कारणोथी मनुष्य तिर्यंचो मरता होय एम आपणी आंख तळे स्पष्ट जणाय छे.

'भिज्जइ'नो अर्थ 'तुट्टइ' छे एम तमारुं (पूर्वपक्षनुं) धारवुं होय, एटले सोपक्रमी जीवो ए सात कारणो लागतां आयुष्य अपूर्ण मूकी चाल्या जाय छे एम तमो कहेता हो तो भले. पण प्रश्न ए उपस्थित थाय छे के ए सात कारणो सोपक्रमी जीवोने लागे के निरुपक्रमी जीवोने? निरुपक्रमी जीवोने ए कारणो न लागे एम कदाच तमो कहो, तो हुं पूछुं छुं के निरुपक्रमी जीवो कोण, के जेओने ए कारण न लाग्युं होय? पामर जीवो तो सोपक्रमी होय, पण चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, मांडलिक जेओ निरुपक्रम आयुष्यवाळा होय, तेओने ए कारणो लागतां नथी एम कहेशो, तो हुं कहुं छुं के सूत्रोमां एटली बधी आख्यायिकाओ चाली छे, तेमां एवो एक पण पुरावो छे के ए कारणोमांनुं कोई कारण मळतां कोई निरुपक्रमी जीव मर्यो न होय? जो तमो सांभळो तो हुं कही नांखुं के जुओ! श्रेणिक शा कारणथी मृत्युने पाम्या? कोणिकने मरवामां शुं कारण मळ्युं? सभूम, ब्रह्मदत्त,

कृष्ण, लक्ष्मण विगेरे विगेरे अनेक महानृपति वासुदेव चक्रवर्तिनां चरित्रो वांची ल्यो के तेओने मरवामां तेमांनुं एके कारण हतुं के नहि ? ज्यारे कोई पामर जीव ए कारणो मळतां मरी जाय छे, त्यारे तमारे एम कहेवुं पडे छे के बीचाराने ए शस्त्र विष के प्लेग विगेरे जे कोई लागु पड्या, तेथी ए मरी गयो. पण जेम तमो धारो छो के ए शस्त्रादि ते जीवने न लागु पड्या होत तो ते जीव मरत नहि, तो पछी तमो तेम चक्रवर्ति वासुदेवने माटे केम न धारो ? कृष्णने बाण वाग्युं ने ते मरी गया, श्रेणिके तालपुट विष चुस्युं ने ते मरी गया, एम जे कहेवाय छे ते तेओए तेम न कर्युं होत तो शुं तेम कही शकात ? ते वखते तमारे एम कहेवुं थाय छे के तेओनुं (निरुपक्रमी जीवोनुं) आयुष्य आवी रह्युं हतुं ने तेम थयुं. तो पछी सोपक्रमी जीवो मरी जाय छे, त्यारे तेओनुं आयुष्य शेष हतुं, ने मरी गया ते शा आधारे कही शको ?

चरम शरीरी जीवो के जेओ ते भवमां मोक्षमां जवाना छे, तेओने तमारा धारवा प्रमाणे के कोईना धारवा प्रमाणे अपूर्ण आयुष्ये मरवुं पडतुं नथी. एम छे, तोपण तेओने मरवाने सात कारणोमांनां कारणो मळ्यां छे. जुओ गजसुकुमार भिक्षुप्रतिमामां शिर्षपर अग्नियोग मळतां चाल्या गया. एमज स्कंधसूरिना शिष्यो (शास्त्रीय कथा प्रमाणे) मेतार्य, सुकोशल विगेरे विगेरे मोक्षमां जनाराओ ते कारणोथी बची शक्या नहि. तो हवे तेओने सोपक्रमी कहेवा के निरुपक्रमी-

कहेवा ? टीकाकार कहे छे के मात्र ए सात कारणो सोपक्रमी-ने लागे छे, तो ते वार्ता क्यां ऊभी रहे छे, वा कया टेकाथी हवे ए टकी शकशे ?

वळो अहो पूर्व पक्ष ! जो तमो एम कहेता हो के ए सात कारणो सोपक्रमी जीवोने लागे छे ने ते मरी जाय छे, तो पछी त्यां एक बीजी शंका उद्‌भवे छे के मनुष्य तिर्यंचने अग्नि, जळ, शस्त्र, प्लेग, कोलेरा, विगेरेमांथी कोई लागु पडे छे, तथापि तमो जोता हशो के ए लागेला निमित्तथी घणाओ बचता होय छे, तेमज विष पीधेला घणाओ उगय छे, तो तेनुं शुं समजवुं ? शस्त्र विष विगेरे एवां अद्वितीय (तेना बराबर बीजां थई शके नहि) निमित्तो छे, जे प्राणी-ओना प्राण एकदम लई ले छे तेवुं आपणे प्रत्यक्ष जोईए छीए छतां एवा निमित्तथी पण ज्यारे घणा बचे छे, त्यारे ए शुं ओछुं आश्चर्यकारक छे ? त्यां सात कारणोथी आयुष्य भेदाय छे (तमारा धारवा प्रमाणे त्रुटे छे)–खलास थाय छे, ए सूत्रनुं शुं थयुं ? एनो तमो खुलासो करशो ?

पूर्वपक्ष कहे छे के एज अमारुं कहेवुं छे के ते जीव निरु-पक्रमी छे माटे ते मर्या नहि.

उत्तरपक्ष कहे छे के ए तमारुं कथन जो सत्य होय, तो कृष्ण, सभूम, श्रेणिक, कोणिक विगेरे जेओ शास्त्रकारना कहेवा प्रमाणे निरुपक्रमी गणाया छे, तेओ शस्त्र, जळ, तालपूट विगेरे निमित्तो लागतां मरी गया, तेओ सोपक्र-

મીમાં ગણાશે, ને જેઓ નિમિત્તથી બચી શક્યા તેઓ નિરુપ-
ક્રમીમાં ગણાશે. એટલે જે સોપક્રમી ને નિરુપક્રમીની ગણના
થાય છે, તે ગણનામાં ગોટાળો થશે, ને સમજી શકાશે નહિ
કે સોપક્રમી કોણ ને નિરુપક્રમી કોણ ? આશય એ છે કે
જેમ સોપક્રમી નિરુપક્રમીની વ્યાખ્યા કરો છો, તેમ ઉપર
પ્રમાણે અર્થ વિચાર કરતાં સંધિ મળતી નથી. સૂત્રકારના કથન
પ્રમાણે અર્થ કરીએ તો પ્રાણીઓ—મનુષ્ય તિર્યંચો સાત કારણો-
થી મરતાં જણાય છે, પછી તે સોપક્રમી હો કે નિરુપક્રમી હો.

હવે 'ભિજ્જઇ' શબ્દનો અર્થ કદાચ 'તુટ્ટઇ' કરીએ
તોપણ ભલે. 'તુટ્ટઇ'નો અર્થ તમો કદાચ એમ કરશો કે દોરી
જેમ વચમાંથી ત્રુટી જાય છે, કપાઇ જાય છે, તેમ આયુષ્ય
વચમાંથી ચાલ્યું જાય છે, તેથી 'તુટ્ટઇ' શબ્દ વપરાયો છે. તો
કહેવાનું કે સૂત્રકારે 'તુટ્ટઇ' શબ્દ સૂત્રકૃતાંગમાં ને કેટલેક સ્થળે
વાપર્યો છે, પણ ત્યાં તેનો અર્થ તેવો કર્યો નથી.

જુઓ સૂત્રકૃતાંગ, અધ્યયન ૨ જું, ગાથા ૨ જી તથા
ગાથા ૬ ઠી.

(ગા. ૨)

સેણે જહ વટ્ટયં હરે એવમાઉ ક્ખયંમિ તુટ્ટઇ.

શ્યેન (સીચાણો) જેમ ચકલીને હરે, એમ આયુષ્ય ક્ષય
થતાં—આયુષ્ય પૂર્ણ થતાં ત્રુટી પડે છે.

(ગા. ૬)

તાલે જહ બંધણ ચ્ચુએ એવમાઉ ક્ખયંમિ તુટ્ટઇ.

ताल–ताड जेम बंधनथी छूटे छे, तेम आयुष्य क्षय थतां-पूर्ण थतां त्रुटी पडे छे.

आ स्थळे 'तुट्टइ' शब्द वापरवा छतां अर्धथी–वचमांथी कपाई जाय छे, तेवो अर्थ नथी. सूत्रकार पोते ज एम कहे छे के क्षय थतां त्रुटे छे. हवे कहो के त्रटे छे एनो अर्थ वचमांथी-अपूर्णमांथी त्रुटी जाय छे एवो क्यां निकळे छे ? 'तुट्टइ' शब्दनो अर्थ ज्यारे त्रूटे छे एम नथी निकळतो तो पछी 'भिज्जइ' नो अर्थ त्रूटे छे एम शामाटे करवो ?

पूर्वपक्ष कहे छे के अंतकृतदशांगमां अरिष्टनेमि प्रभुने वंदन करतां, गजसुकुमार पोताना प्रिय नाना भाईनी हकीकत पूछतां, श्रीकृष्णने प्रभुए जणाव्युं के गजसुकुमारने मोक्षमां जवामां मदद करनार तमोने रस्तामां मळशे ने तमोने जोतां ते सोमिल 'ठितए चेव ठिति भेएण कालं करिस्सति' 'उभाज स्थितिनो भेद करी काळने करशे' आम जे प्रभुए कह्युं छे तेनुं शुं कहेशो ?

उत्तरपक्ष कहे छे के आ जग्याए तमो कदाच एम कहेवा इच्छता हशो के कृष्णने देखी सोमिल कंपी उठयो, ने मरी गयो. त्यां तेणे आयुष्यने संवर्त करी (सकोची) लीधुं एटले आयुष्य अपूर्ण हतुं ने तेने (सोमिलने) जवुं पड्युं. आम शंका करी उत्तर इच्छता हशो, पण ए विषे हवे कहेवुं ते बस छे, कारणके उपर सात कारणोमां ते विषे वार्ता थई गई छे.

पूर्वपक्ष कहे छे के सूत्रकृतांगमां १३ मा अध्ययनमां २०मी गाथा आगळ आपी छे, त्यां सूत्रकारे उपदेश आपनार व्यक्तिने सूचना करी छे के श्रोताने समजी, हे मुनि ! तुं उपदेश आपजे, नहितो तारा आयुष्यनो नाश करनार (टीकाकार कहे छे के संवर्त–टूंकुं करनार) ते व्यक्ति थशे, तो तेना विषे श्रो तमारो शुं उत्तर छे ?

उत्तर पक्ष कहे छे के—हे पूर्व पक्ष ! तमो कहो छो ते ठीक छे, पण ते सूचना जे उपदेशक प्रति करी छे, ते आयुष्य त्रुटे छे एम बतावबानो सूत्रकारनो आशय होय तेम समजातुं नथी, पण साधुए के कोई व्यक्तिए द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव जोई उपदेश आपवो जोईए, ने ते तेम न समजे तो पोताना आयुष्यना विघ्नरूप पोते (उपदेशक) थाय, कारणके मिथ्या दृष्टि–अनार्य मनुष्य खराब स्वभावथी उश्केराई तेने दुःखी करे–मारी बेसे, उपदेशके परिषद् जोई उपदेश आपवो एम हकीकत त्यां सूत्रकारे ने टीकाकारे जणावी छे; पण आयुष्य त्रुटे छे ए बतावबानो उद्देश त्यां सूत्रकारनो नथी. जेम कोई व्यक्ति कोईने सलाह आपे के भाई ! तुं नीचे जोईने चालजे नहि तो तने ठेस लागशे, अथवा एम पण कहे के तुं जाय छे, त्यां जोईने रेहजे, नहितो तने त्यां मुश्केली पडशे. आ जग्याए कहेनारनो आशय ए छे के व्यवहारदृष्टिए बहु ख्याल राखी बहु चोक्कसाई करी जनार व्यक्तिए वर्तवुं, नहितो (गफलत राखी तो) भराई पडाय

एवी संभावना छे. पण तेथी ते भराई ज पडशे, मरशे, ठेस लागशे, ए कांई चोकस नथी. केटलीक वखत चोकस रहेनार फसाई पड्या छे, ने गफलत करनार सलामत रह्या छे. एटले आ ' चेतता नर सदा सुखी ' सम व्यवहारु उपदेश छे.

पूर्व पक्ष कहे छे के तमोए एक पछी एक केटलीक संदिग्ध बाबतना खुलासा कर्या, पण एक संशयात्मक सूत्र एवुं छे जे तमो तेमां माथुं मारी शको ज नहि, ते तमोने कहुं. सूत्रमां घणे स्थळे 'अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए' अकाले (काळ आव्या विना) जीवितथी छूटी गयो-नाश पाम्यो, आवुं वाक्य छे–तो तेनो शुं खुलासो करशो ? नहि काल–ते अकाल, आवो जे पाठ छे, तेनो तमे गमे ते खुलासो करो पण बीजो खुलासो छे ज नहि.

उत्तर पक्ष कहे छे के, हे आर्य ! तमो जे शब्द वापरो, ते तमारी मरजी, पण मने मारा हृदयमां जे सत्य लागे छे, ते तमारी आगळ जणावुं छुं. तेने तमारे मानवुं के न मानवुं ए तमारी पसंदगीनो विषय छे. तमो कहो छो ते वाक्य एवा विषय परत्वे घणा स्थळे छे, पण त्यां वाचक वांचवामां भूल करे छे, कारणके वांचनारे जाणवुं जोईए के ए वाक्यनो उपयोग करनार कोण छे, ने ते कोनी अपेक्षाथी बोलाय छे ? आ वस्तुने नहि समजवाथी कोई पण उपर टपके वांचनार ज्यां त्यां भूल करे छे, ने हुं कहुं छुं के तमो पोते फरीथी ए हकीकतने तपासी जुओ, तो तमोने मालूम पडशे. ज्ञाता

धर्मकथांग सूत्रमां तमो पोते ध्यान आपो. धर्मघोष स्थविरथी धर्मरुचि अणगार भिक्षा लेवा गया. अतिशय कडवी तुंबडीनुं भोजन ते व्होरी लाव्या. गुरुश्रीए तेमने तेना परिष्टापननी आज्ञा आपी. त्यां गया पछी ते महानुभाव विचारीने भोजनने वापरी–खाई गया. त्यां तेमणे संल्लेखना करी, ने काळ कर्यो. साधुओ तपासवाने आव्या, ते जोई बोल्या के, अहो ! आ मुनि अकाळे जीवितथी चाल्या गया. गुरुश्रीनी पासे आवी तेओ तेमज बोल्या. गुरुश्रीए पूर्वगत उपयोगथी सर्व (मूळथी नागश्रीने त्यांथी आहार प्रतिलाभ्यो, ने गतायुः थया त्यांसुधी) तपास्युं, ने बोल्या के काळना अवसरे काळ कर्यो, ने सर्वार्थसिद्ध महाविमाने गया. हवे तमो समजी जाओ के बन्ने स्थळे ए भिन्न भिन्न शब्दो सूत्रकारना छे. तमने एम लागशे के सूत्रकारे शामाटे आम भूल करी हशे ? पण भूल नथी. सूत्रकारे तो तेमना अभिप्राय हता तेम रचना करी छे. पण त्यां धर्मघोष स्थविरनी दृष्टि पूर्ण–चोकस जोनारी हती, ने शिष्योनी दृष्टि वर्तमान (व्यवहार) स्थितिने जोनारी हती. जोनारनो आशय जे अपेक्षानो हतो, ते अपेक्षाना सूत्रकारना शब्दो छे. वांचनार समज्या विना गमे तेम अर्थ करे, तेमां सूत्रकारनो शो दोष ? गोशालक ने नागश्रीना जीवो भव करतां दरेक वखते शस्त्र अग्निथी मर्या छे, तोपण त्यां काळना अवसरे काळ कर्यानुं कह्युं छे. त्यां ए सर्व वार्ता करनार केवलज्ञानी छे, तेणे

तटस्थ आपेक्षाथी जोयुं तेम कह्युं. सामान्य (व्यवहारकुशळ) व्यक्तिओ वर्तमान स्थितिने जोता होय छे, ज्ञानीओ—अतींद्रिय व्यक्तिओ—आसपासनी वस्तुस्थितिने जोता होय छे. सोमिल स्थितिना भेदे करी काळ करशे ए वाक्य पण कृष्णने जनतानी अपेक्षाने लईने हतुं. जेम गजसुकुमारने मदद करनार पुरुष मळयो, तेम तमोए (कृष्णने कहे छे) पेला इंट उपाडनार पुरुषने मदद करी ने ते व्हेला व्हेला मोक्षे गया, ते पण कृष्ण आदि श्रोतानी अपेक्षाने लईने हतुं. गजसुकुमारने मदद करनार न मळयो होत तो मोक्षमां न जात वा विलंब थात, आम अर्थ कहाडीए तोपण निकळे पण तेमनो तेवो आशय न हतो. धर्मरुचिए ए भोजन वापर्युं न होत तो ते अवश्य उपाश्रये पाछा आवत, ने जीवत एम मनुष्यनी धारणा थाय. श्री महावीरे काळ न कर्यो होत तो भस्म ग्रह न बेसत. आम थयुं न होत तो आम न थात. पण थवुं हतुं के नहि ए कोण कही शके ? मनुष्यनी धारणा प्रमाणे थतुं होत तो महावीर मोक्षे गया न होत, ने आजे हिंद स्वराज्य भोगवतुं होत !

मनुष्यमां एक एवी पण धारणा छे के मनुष्य मरी गयो, पण संभाळ राखी होत तो तेम न थात. कोई बनाव धारणानी व्हार जाय छे, त्यारे मनुष्य तेने अकस्मात् कहे छे. एक स्टीमरने नाखुदो सपाटाबंध विशाळ दरियामांथी बंदर तरफ हंकारी लावे छे. बंदर नजीकमां थोडा माईलने अंतरे रह्युं छे. नाखुदो

स्टीमरने लाववानी तैयारीमां छे. प्रेक्षको बंदरपर राह जोईने तैयार उभा छे. बंदर पासे आवेल दरियामां डुंगरीमां एक तटस्थ मनुष्य बेठो बेठो स्टीमरने जुए छे. नाखुदाने ख्याल नथी, पण ते व्यक्ति जुए छे के स्टीमर खडकपर चाली गई छे, हमणां जशे, ने जवा साथे स्टीमरना फुरचा थशे. आम जोतां ज ते खडकपर स्टीमर गई. हा हा घोंघाट साथे स्टीमर भांगी पडी. लोक बोलवा लाग्या, नाखुदो ने खारवाओ कहेवा लाग्या—अकस्मात्, एकदम, ओचिंतुं, अणधार्युं आ शुं थयुं? डुंगरीपर बेठेल व्यक्ति कहेवा लागी के ते स्टीमर अवळा रस्ते निकळी, खडकपर गई ने भांगी पडी. तेणे अकस्मात् न कह्यो, कारणके तेनी दृष्टिमां शरुआत नथी. ते धीमे धीमे प्रथमथी जाणतो हतो, पण जेओनी दृष्टिमां जाणवानी शरुआत थई, तेओने अकस्मात्—अकाल लागे छे. आथी ज्ञातव्य विषय ए छे के सामान्य जनतानी दृष्टिमां अकस्मात्, अकाल, एकदम लागे छे, ते सत्य छे—पण ते व्यवहार सत्य छे. संपूर्ण ज्ञानीनी, तटस्थ जनतानी दृष्टिमां अकाल, एकदम, अकस्मात् कांई लागतुं नथी. ते तो एम कहेशे के तेम थवानुं हतुं ने थयुं. गुप्त तत्त्वने जाणनार जाणे छे के जगत्मां जे कांई थाय छे, ते तेना नियमपुरःसर थया करे छे, पण आ वस्तुने अज्ञान जनता जाणी शकती नथी.

हे आर्य! हजी तमारी केटलीक शंकाओ आ उपरांत

रही जाय छे, जेवी के नेरयिक देवो यथायुष्यने पाळे छे पण मनुष्य तिर्यंचनां आयुष्य संवर्त थाय छे; तथा उत्तराध्ययनना चतुर्थ अध्ययने आयुष्य असंस्कृत छे, पण अर्थकारे तेनो खुलासो स्पष्ट कर्यो छे एटले ए सर्वेनो निर्णय उपर्युक्त विवेचनमां आवी जाय छे, तेथी तेनो खुलासो हवे विशेष करवा जेवो रहेतो नथी.

उत्तर पक्ष कहे छे के, हे पूर्व पक्ष! 'आयुष्य कर्म त्रुटे छे' एवो तमारो पक्ष हृदयने हचमचावी मारनारो ने आत्माने गभरावी नांखनारो मने तो लागे छे, कारणके ज्यारे एक पछी एक पुस्तको मारा हाथमां आववा लागे छे, ने तेमां काई ने कांई वांचवानुं ज्यारे दृष्टिने मळे छे, त्यारे तमारा आशयथी सामी बाजुनां प्रमाणो के तमारी विरुद्ध बाजुना पूरावा एकदम तरी आवे छे. ए पूरावाने प्रमाणरूप मानो के न मानो ते तमारी खुशीनो सोदो छे, पण ए पूरावो कया पुस्तकनो वा कया महापुरुषनो छे ते जाणवानुं आवश्यक लागतुं होय ने इच्छा होय तो नीचे जणावुं छुं:-

श्रीमत् कुंदकुन्दाचार्य रचित "समयसार" नामक पुस्तकमां बन्धाधिकार प्रकरणमां जीवो जीवे छे मरे छे तेमां कोण निमित्त छे ए प्रसंगे श्रीमत् कुंदकुन्दाचार्य लखे छे के-

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं
आउं ण हरेसि तुमं कह ते मरणं कयं तेसिं (२४८)

(आयुःक्षयेण मरणं जीवानां जिनवरैः प्रज्ञप्तं आयुर्न हरसि त्वं कथं त्वया मरणं कृतं तेषाम्)

जिनेश्वरे जीवोनुं मरण आयुष्यनो क्षय थवाथी थाय छे एम कह्युं छे. तुं पोते कोईनुं आयुष्य लई शकतो नथी, तो पछी केवी रीते तेओनुं मरण तें कर्युं ?

आत्मख्याति वृत्तिमां श्रीमद् अमृतचंद्राचार्य लखे छे केः—

मरणं हि तावज्जीवानां स्वायुः कर्मक्षयेणैव तद्-भावे तस्य भावयितुमशक्यत्वात् ॥ स्वायुःकर्म च नान्येनान्यस्य हर्तुं शक्यं, तस्य स्वोपभोगेनैव क्षीय-माणत्वात् । ततो न कथंचनापि अन्योऽन्यस्य मरणं कु-र्यात्, ततो हिनस्मि हिंस्ये चेत्यध्यवसायो ध्रुवमज्ञानम्।

खरेखर, जीवोनुं मरण पोताना आयुष्यकर्मना क्षयथी थाय छे; पोताना आयुष्यकर्मनो क्षय न थयो होय तो मरण थवुं ए अशक्य छे. पोतानुं आयुष्यकर्म कोईथी पण लई शकातुं नथी. पोताना उपभोगथीज ते आयुष्य क्षीण थाय छे. आथी खुल्लुं समजाय छे के कोई कोईनुं मरण करी शकतुं नथी. माटे कोई पण व्यक्ति एम कहे छे के ' में तेने मार्यो एटले मरी गयो' (व्यवहार दृष्टिमां तेम गणाय ते सहज छे) अथवा ' तेणे मने मार्यो तेथी हुं मरी जाउंछुं' ए अध्यवसाय खास अज्ञान छे.

हे पूर्व पक्ष ! उपर्युक्त गाथापरथी तमो समजशो के जि-नवरोए जीवोनुं मरण तेओना आयुष्यकर्मनो क्षय थवाथी कह्युं छे, पण आयुष्यकर्म क्षय थवा सिवाय—कोईए कोईने मार्यो एटले—अपूर्ण आयुष्ये मरी गयो—ए वार्ता असिद्ध छे. एटले के कोई पण जीव आयुष्यकर्म क्षय कर्या सिवाय अ-

पूर्ण आयुष्ये मरतो नथी ए वार्ता सिद्ध थाय छे.

उदीरणा.

आयुष्यकर्म त्रुटे छे, एम कहेनार पूर्व पक्ष कहे छे के मारा तरफनी एक आवश्यक मुद्दासर हकीकत जे छे, ते तो कहेवी साव रही जाय छे, ने ते हकीकत कहेवी ते मारा लक्ष्य बहार रही गई छे. पण मारे कहेवुं जोईए के जीव आठ कर्मनी उदीरणा करे छे, तो तेमां आयुष्यकर्मनी उदीरणा आवी गई एटले जीव जेम सात कर्मनी उदीरणा करी तेने उदयमां लावे छे, तेम आयुष्यकर्मनी उदीरणा करी तेने उदयमां लावे छे. उदीरणा एज कर्मनी हानि करवानो मार्ग छे, एम मारुं धारवुं छे. तो पथी एम कहुं छुं के आयुष्यकर्म त्रूटे छे, ए निर्विवाद छे.

आटलुं सांभळी विचार लावी, आयुष्यकर्म नथी त्रुटतुं एम कहेनार उत्तर पक्ष कहे छे के अहो मुज्ञ ! तमो जे कहो छो के जीव आठ कर्मनी उदीरणा करे छे, ते वार्ता बराबर छे. पण उदीरणा ते शुं, वा उदीरणा केम थाय, एटले शी रीते करे छे, ए रहस्यने यथातथ्य तमो जाणता नथी. तमो उदीरणानुं नाम लई असमजणथी भारे भारे वार्तानो फणाटोप करो छो, पण ए विषे विशेष सारुं जाणवुं होय तो कर्मप्रकृति विषे डूबकी मारवी. कर्मप्रकृतिनां आठे करणो- बंधनकरण, संक्रमकरण, उद्वर्तनाकरण, अपवर्तनाकरण, उदीरणाकरण, उपशमकरण, निधत्तिकरण, निकाचनाकरण- उदय ने सत्ता ए विगेरे विषे वार्ता घणी सारी समजावी छे.

जोके मूळ आगमोथी केटलेक स्थळे, केटलेक अंशे, आ विषयो मतभेद राखे छे, पण ए विषयोनुं सारुं विवेचन त्यां करवामां आव्युं छे. एटले के जे विषे तमो वार्ता करो छो ते वार्ता त्यां तेवी समजाती नथी. आयुष्यकर्म नथी उदतुं ए संबंधी उपर विवेचन हुं करी गयो छुं, एटले ए संबंधी बहु कहेवा इच्छा नथी, तथापि उदीरणा एटले शुं ने जीव ते शी रीते करे छे ए संबंधी कर्मप्रकृतिकारनो विचार तमारी आगळ मूकुं छुं.

कर्मप्रकृतिकारे ए ग्रंथमां घणुं गहन ने विचारशील विवेचन कर्युं छे. सामान्य रीतया कोईने पण ए विषय गम्य थाय ए असंभवित छे, तेम ए संबंधी लखवुं ते पण घणुं उत्कट कार्य छे. एम छे तोपण पूर्व पक्षना प्रश्न—शंकाना विचारनी खातर के वाचको यत्किंचित् वस्तुतत्त्वने पकडे तेनी खातर तेमांनो गाथाओ मूकुं छुं:—

जं करणेणो कड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा ॥
पगइ ठिइ अणुभाग प्पएस मुलुत्तर विभागा (१)

अर्ध गाथामां उदीरणानुं लक्षण कह्युं, ने अर्ध गाथामां तेना भेद कह्या. परमाणुरूप दळने जे करणे करी—कषाय सहित वा कषाय रहित एवा योगसंज्ञक आत्माना वीर्य करी उदयमां नथी आवेलो एवो बहारनी स्थितिओमांथी आकर्षी खेंचीने उदयमां मूकाय, ते उदीरणा कहवाय छे. कह्युं छे के—

" उदयावलि बाहिरिल्ल ठिइहितो कसाय सहिएणं असहिएणं वा जोगसन्नेणं करणेणं दलिय

माकड्डिय उदयावलियाए पवेसणं उदीरणा ”

ते उद्दीरणा, प्रकृति स्थिति अनुभाग ने प्रदेशे करी चार प्रकारे मूळ प्रकृतिनी, ने उत्तर प्रकृतिनी छे. मूळ प्रकृतिनी उद्दीरणा ८ प्रकारे छे,ने उत्तर प्रकृतिनी उद्दीरणा १५८ प्रकारे छे.

मूल पगइसु पंचन्हं तिहा दोन्हं चउविहा होइ ।
आउस्स साइ अधुवा, दसुत्तरस्स उत्तरासिंपि ॥

मूल प्रकृति एटले मूल कर्म आठ तेमां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र ने अंतराय, ए पांच प्रकृतिनी उद्दीरणा त्रण प्रकारे छे—अनादि, ध्रुव अने अध्रुव. ते आ प्रमाणे समजो—ज्यांसुधी क्षीणमोह जीवस्थानकनो समयाधिका आवलिका शेष रहे त्यांसुधी उपर्युक्त ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय ने अंतरायनी उद्दीरणा अवश्य प्रवर्ते छे, ने नाम गोत्रनी उद्दीरणा सयोगी जीवस्थानकना अन्त्य समय सुधी प्रवर्ते छे. तेथी ए पांच प्रकृतिनी उद्दीरणा अभव्यने अनादि-ध्रुव, ने भव्यने अनादि अध्रुव छे.

वेदनीय ने मोहनीय उद्दीरणा सादि, अनादि, ध्रुव, ने अध्रुव एम चार प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे जाणो—वेदनीयनी उद्दीरणा प्रमत्त जीवस्थानक सुधी ज होय छे,परन्तु आगळ नथी. मोहनीयनी उद्दीरणा सूक्ष्म संपराय जीवस्थानक सुधी छे, आगळ नथी. अप्रमत्तादि जीवस्थानकथी पडता जीवने वेदनीयनी अने उपशान्त मोहथी पडता जीवने मोहनीयनी उद्दीरणा सादि होय छे, पण ते स्थानने नहि पामेला जीवने

अनादि, अभव्यने ध्रुव ने भव्यने अध्रुव होय छे.

आयुष्यकर्मनी उदीरणा सादि अध्रुवज होय छे, ते नीचे प्रमाणे समजो–आयुष्यनी अन्त्य आवलिका रही होय, त्यारे अवश्य तेनी उदीरणा न होय तेथी अध्रुव छे. पण परभवमां उत्पन्न थता जीवने प्रथम समये आयुष्यनी उदीरणा चालु थाय छे, तेथी ते सादि छे.

प्रश्न करनार पूर्व पक्ष ! तमो के वाचको हवे समजशो के जीव जे जे कर्म बांधे छे ते ते कर्मनी उदीरणा कर्येज जाय छे, हमेशां करतो होय छे. एथी एम अर्थ नथी निकळतो के जीव ते कर्मने खलास करे छे, पण ते कर्मने उदयमां–भोगववामां लावे छे. एटले के उदीरणा एक एवी क्रिया छे के जीव जे क्रिया–करणे करी पोते जे कर्म बांध्यां छे, ते कर्मने भोगववा माटे पोतानी नजीकमां लाववामां होय छे, ते करण उदीरणा कहेवाय छे. (कर्मने वधघट करवामां उद्वर्तनाकरण अपवर्तना-करण छे, ने ते संबंधी विषय उपर यत्किंचित् कहेवामां आव्यो छे, पण उदीरणाथी कर्म घटे छे ए शंकाज अत्र अस्थाने छे.) दरेक प्रकृतिनी उदीरणा जीव शी रीते करे छे ते संबंधी वार्ता कर्मप्रकृतिकारे घणी कही छे. ए बधी हकीकत अत्र कही शकाय तेवी अनुकूळता नथी. पण तेमां कथेल उपरथी समजो शकाय तेम थोडा दाखला जणावुं छुं.

मिथ्यात्वनी उदीरणा सादि शी रीते कहेवाय ? ए विषयमां उदीरणा विषय पण साथे समजाशे. कोई जीव

मिथ्यात्वथी छूटी सम्यक्त्वमां गयो, त्यां मिथ्यात्वोदयनो अभाव छे, तेथी ते जीव मिथ्यात्वनी उदीरणा करतो नथी, कारणके मिथ्यात्वनो तेने अभाव छे, पण तेने त्यां सम्यक्त्व छे, एटले ते जीव सम्यक्त्वमां आगळ वधतो होय छे. सम्यक्त्व शुद्ध–निर्मळ वस्तु छे, एटले तेनी उदीरणा शुं होय ? उदीरणा हमेशां अशुद्ध भावनी–कर्मनी होय छे, पण ते जीव सम्यक्त्वथी पाछो मिथ्यात्वमां आव्यो, त्यारे त्यां तेने मिथ्यात्वनी उदीरणा शरु थई. (आ उदीरणा सादि कहेवाय.) एटले जे कर्मनो उदय होय छे, तेनी उदीरणा थाय छे. जेमके नेरयिक देवो वैक्रिय शरीरी वैक्रिय शरीर पाम्या, त्यां तेओ वैक्रिय शरीरना उदीरक छे एम समजवुं. ज्यां ज्यां जे जे गतिमां जीवो होय, त्यां त्यां जे शरीर, गति, पर्याप्ति विगेरे जे जे होय ते ते उदीरणा योग्य होय, ने जीव ते तेनो उदीरक थाय; जेमके–

उस्सासस्स सराण य पज्जत्ता आणपाण भासासु ॥
सव्वन्नूण स्सासो भासा वि य जा न रुज्झंति ॥१५॥

उच्छ्वास पर्याप्तिथी पर्याप्त थयेल सर्व जीवो उच्छ्वास नाम कर्मना उदीरक होय छे, ने भाषा पर्याप्तिथी पर्याप्त थयेल सर्व जीवोने सुस्वर दुःस्वर नाम कर्मना उदीरक जाणवा. सर्वज्ञने उच्छ्वास ने भाषा ज्यांसुधी निरोध थाय नहि त्यांसुधी उदीरणा प्रवर्ते छे, एटले के ज्यांसुधी ए बन्नेनो उदय भाव छे, त्यांसुधी तेमनी उदीरणा बंध थती नथी.

एम इंद्रिय पाम्या पछी जीव उदीरणा करे छे. ते कहे छे–

इंदिय पज्जत्तीए दुसमय पज्जत्तगाउपाउग्गा ।
निद्दा पयलाणं खीण राग खवगे परिच्चज्ज ॥ (१८)

इंद्रिय पर्याप्तिथी पर्याप्त थई जीव बीजा–अनंतर–समयथी निद्रा प्रचला प्रकृतिओने उदीरणा करवाने योग्य थाय छे, पण क्षीण मोह ने क्षपक श्रेणिना जीव सिवाय–एटले सर्व जीवो तेओना सिवाय ते प्रकृतिओनी उदीरणा करे छे, कारणके उदीरणा जे थाय छे, ते उदयभाव होय तेनी थाय छे, अन्यथा थती नथी. क्षीणरागी ने क्षपक जीवने ए प्रकृतिओनो उदय छे नहि. आम उदीरणा सर्व प्रकृतिनी समजावी छे. स्थिति उदीरणा शी रीते थाय छे, ते अत्र जणावुं, जे उपरथी ते संबंधी कांईक ख्याल विशेष थाय.

संपत्तिए य उदये पओगओ दिज्जए उइरणा सा ।
सेचीकाठिइहिं ता जाहिं ता तत्तिगा एसा ॥ (२९)

जे प्रयोगे करी असंप्राप्त उदयदलिकने संप्राप्त उदयदलिकमां मूकी शकाय, ते उदीरणा कहेवाय छे. सेचिका-ठिइहि एटले उदीरणा योग्य जेटली स्थितिओथी उदीरणा वीर्य करीने जे स्थितिओ उदयमां मूकाय छे तेटला भेदवाळी आ उदीरणा छे.

मूल ठिइ अजहन्ना मोहस्स चउविहा तिहा सेसा ।
वेयणीयाउण दुहा सेसविगप्पा उ सव्वासिं ॥ (३०)

मोहनीय कर्मनी स्थितिनी अजघन्य उदीरणा सादि,

अनादि, ध्रुव ने अध्रुव एम चार प्रकारे छे. कारण एम छे के मोहनीयनी जघन्य स्थितिनी उदीरणा क्षपक जीवने सूक्ष्म संपरायने अन्ते समय–अधिक आवलिका शेष रहेतां थाय छे. ते स्थान सिवाय अन्य स्थाने सर्वत्र अजघन्य स्थितिनी उदीरणा होय छे. फरी उपशान्त मोह जीवस्थानके उदीरणा सर्वथा होती नथी, परन्तु त्यांथी पडता जीवने होय छे; माटे अजघन्य स्थितिनी उदीरणा सादि छे. ते स्थानने नहि पाप्त करेल जीवने अनादि छे. अभव्यने ध्रुव छे, ने भव्यने अध्रुव छे.

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र ने अन्तराय, ए पांचनी अजघन्य स्थितिनी उदीरणा अनादि, ध्रुव ने अध्रुव छे. ते एम छे के ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तरायनी जघन्य स्थितिनी उदीरणा क्षीणकषायी जीवने स्वजीवस्थानकनी समय अधिक आवलिका शेष रहेतां होय छे. आ सिवाय अन्य काळमां अजघन्य स्थितिनी उदीरणा होय छे, तेथी पहेलां सर्वदा होवाथी अनादि ने ध्रुव–अध्रुव छे.

नाम गोत्रनी जघन्य स्थिति उदीरणा सयोगी जीवस्थानकना अन्त्य समये होय छे, तेथी ते सादि अध्रुव छे. आ सिवाय बीजे अजघन्य स्थिति उदीरणा छे, ते अनादि ने ध्रुव–अध्रुव छे.

वेदनीय अने आयुष्यनी अजघन्य स्थिति उदीरणा सादि ने अध्रुव बे प्रकारे छे. ते एवी रीते छे के सर्वाल्प स्थिति सत्तावंत एकेन्द्रिय जीवने वेदनीयनी जघन्य स्थिति उदीरणा

होय छे. तेथी तेज जीवने अन्य समये सत्ता वधवाथी अज-घन्य स्थिति उदीरणा होय छे. त्यांथी पुनः पण जघन्य स्थिति उदीरणा थाय छे. आथी वेदनीयनी अजघन्य ने जघन्य स्थिति उदीरणा सादि ने अध्रुव छे.

आयुष्यनी उदीरणा अन्त्य आवलिका शेष रहेतां थाय नहि, ने परभवमां उत्पन्न यतांनी साथे जीव प्रथम समयथीज उदीरणा शरु करे छे, माटे ते सादि ने अध्रुव छे.

आमां उदीरणा मात्र मूल प्रकृतिनी ने मूल प्रकृतिनी स्थितिनी कही. उत्तर प्रकृति–कर्मनी उत्तर प्रकृतिनी ने उत्तर प्रकृतिनी स्थितिनी उदीरणा त्यां घणा सारा विवेच-नथी समजावी छे. एमज अनुभाग उदीरणा ने प्रदेश उदी-रणा विषे व्याख्या घणी कही छे, पण अत्र लखवानी अनु-कूळता धारी नथी.

आयुष्य कर्म त्रुटे छे, एम कहेनार हे पूर्वपक्ष किंवा वा-चको ! कर्मप्रकृतिकारे आठ कर्मनी उदीरणा विषे जे विवे-चन कर्युं छे, तेमांथी यत् किंचित् तमारी समक्ष मूकी बताव्युं. हवे ते उपरथी आयुष्य कर्म त्रुटे छे, वा आयुष्य कर्म नथी त्रुटतुं, ए बन्नेमांथी गमे ते अभिप्राय बांधो तेने माटे वाचको तमो सहु स्वतंत्र छो. आयुष्य कर्म त्रुटे के न त्रुटे ए संबंधी मूळ आगमना ने पूर्वाचार्यो–ग्रंथकारो–ना बन्नेना अभिप्रायो नोंधी बताव्या. अर्वाचीन ग्रंथकारोना ग्रंथो हमणां हमणां केटलाक छपाई बहार पडी चूक्या छे. ते बधा ग्रंथोनां नाम

अत्र नहि आप्युं, (कारणके तेमनो आधार लेवो के न लेवो ने वजन आपवुं, तेना करतां प्राचीन आगम-ग्रंथनो आधार लेवो ने वजन आपवुं वधारे इष्ट छे) तोपण तेमनो शुं अभिप्राय छे ते जाणवा माटे लखुं छुं के ते मळेला बधा ग्रंथोनो एकज अभिप्राय होवाथी एकज रीते जणावुं छुं के, 'जीव सात प्रकारे-उपक्रम लागवाथी मरे छे, तेमां व्यवहार-दृष्टिए जनगण गमे ते बोले, पण निश्चयदृष्टिए जीवने आ-युष्यनो बंध निधत्त थती वखते ए सात कारणोमांनुं कोई पण कारण तेनी साथे निधत्त थाय छे तेथी तेना कारणथी जीव मरतो होय छे, पण तेथी आयुष्य अपूर्ण मूकी जीव मरी गयो एम समजवुं नहि.'

उपसंहार.

आर्य ! तमोने मुद्दासर एक स्वल्प हकीकत कही. हवे आ विषयने पूर्ण करीश. विशेषावश्यक, कर्मप्रकृति विगेरे कार्मग्रंथीय ग्रंथोना आधारे आयुष्यकर्म त्रुटे छे, एम तमारो सिद्धान्त भले हो पण सैद्धान्तिक अभिप्राय प्रमाणे ए वार्ता सिद्ध थती नथी. सूत्रोनी नीचे वृत्तिकारोए सूत्रकृतांगमां आयुष्य संवर्त थाय छे, एम कह्युं छे, पण तेवो साफ उल्लेख मूल सूत्रमां कोई जग्याए निकळतो नथी. आयुष्यकर्म सिवाय ज्यां त्यां सात कर्मनी वधघट कही छे, पण आयुष्यनी वध-घट क्यांए कही नथी. सूत्रकारना कहेवा प्रमाणे गति, जाति, स्थिति साथे आयुष्य निधत्त थाय छे, ने बंधाय छे, ते बंध

अडग ने अचळ छे. शिवशर्मसूरिकृत कर्मप्रकृतिमां पण ए प्रमाणे हकीकत छे. मूळ वस्तु साथे मूळ ग्रंथकारो घणी वखत मळता रह्या छे, कोई कोई जग्याए प्रसंग मळतां सहज रूपांतर करी गया छे. वृत्तिकारो तो घणी जग्याए महान् अंतर अनेक विषय परत्वे करी गया छे. वृत्तिकारोए सूत्रकारथी अलग रही केवडी केवडी भूल करी छे, ते विषे आजनो विद्वद्वर्ग सारुं जाणे छे एटले ते विषे कहेवुं कांई रहेतुं नथी.

मित्र ! आटलुं कही विराम पामुं छुं के मारी कहेली सैद्धान्तिक दलीलो तारा हृदयमां निर्मळ बुद्धिथी विचारतां इष्ट लागे तो स्वीकारजे, इष्ट न लागे तो मूकी देजे, पण असंतोष के विरुद्धताने जग्या आपतो ना.

प्रकरण चोथुं.



क्षायक सम्यक्त्व.

क्षायक सम्यक्त्वनी उत्पत्ति कया जीवस्थानके होय ए संबंधी यत्किंचित् लखवानी आवश्यकता छे.

मेहेलपर चडवाने निसरणीनां पगथीयांनी जेम संसारी जीवोने रेहवाने चौद (जीव) स्थानको छे. ते पगथीयां क्रमवार गोठवायां होयनी तेम ए जीवस्थानको एक पछी एक उपर चड रह्यां छे. तेमां संसारी जीवो पोतपोताना

कर्म–स्वभाव प्रमाणे बधां स्थाने गोठवाई रह्या छे. मूळ पग-
थीये अनंत जीवो रह्या छे. ए स्थान छूटये केटलाक जीवो चोथा
जीवस्थानके आवे छे. (आ जग्याए बीजा त्रीजा स्थानकनी
वार्ता लीधी नथी). त्यां आवेला जीवो शुद्ध मार्गमां दृष्टि करे
छे. त्यां आववा जीवो मोहनो ग्रंथिभेद करे छे. वीतरागना
शुद्ध मार्ग प्रति जीव विश्वासु थाय छे. मोक्षनगरमां जीवने
जवाने मार्गदर्शक मूळ आ सोपान छे. आ स्थानके आव-
वाथी जीवने सम्यक्त्व–समकीत प्राप्त थाय छे, वा अहीं
जीव सम्यक्त्वी गणाय छे. अहीं जीवनी वस्तुस्थिति पल-
टवी जोईए ते पलटाय छे. दर्शन मोहनां घन अभ्रपटलो
(वादळांओ) अहीं खसे छे, त्यारे जीव वीतराग मार्गनी
श्रद्धा–प्रतीतिरूप सूर्यने देखे छे. आकाशमां स्थित सूर्य स्पष्ट
छे, तेम जीव द्रष्टा ए कर्म आवरण खसतां सूर्यने जोई शके
छे; पण ए आवरण–वादळांओ तद्दन खसतां नथी, एटले के
पाणीनां भरेलां घनघट वादळांओ होय, तेवां आवरणो खसे
छे, पण पातळां–पाणी विनानां जेम जेवां तेवां होय के धोळां
होय तेवां कर्म आवरणो खसतां नथी. वळी घन वादळांओ
खसे छे, ते पाछां हवामां संयोगीकरण थतां जेम मळी जाय
छे, तेम जीवने दर्शन मोहरूप कर्म आवरण खसी जतां पाछां
हवारूप मोह मळतां ए सूर्यदर्शन बंध पण थाय छे. वस्तु ए
छे के आ स्थानके जीव श्रद्धासूर्यने जोवा भाग्यशाळी थाय
छे, पण ए स्थिति चोक्कस रहेती नथी. जो जीव ते स्थानके

दृढ—स्थिर रहे वा उपर वधे, तो सूर्य देखातो बंध थाय नहि, पण त्यांथी जीव नीचे जाय तो सूर्य देखातो बंध थाय.

चोथा जीवस्थानके सम्यक्त्व थाय छे, ए सम्यक्त्व कयुं—ए अत्र चर्च्य विषय छे. सम्यक्त्व उपशम, क्षायक, क्षयोपशम, वेदक, सास्वादान, विगेरे छे; पण अत्र उपशम, क्षायक, ने क्षयोपशम ए त्रण सम्यक्त्व संबंधी विषय छे. चोथाथी सातमा जीवस्थानक सुधी आ त्रणमांना केटला सम्यक्त्व छे, ए संबंधी ज्यारे जाणवाने इच्छा थाय छे, त्यारे वस्तु ए उपस्थित थाय छे के एक कहे छे के त्रणे छे; बीजा कहे छे के एक सम्यक्त्व छे. आम थवामां कारण ए छे के एक ग्रंथपक्षी छे, बीजो सिद्धान्तपक्षी छे.

ग्रंथपक्षी कहे छे के उपशम स्थिति प्राप्त थाय तो जीव उपशम सम्यक्त्व प्राप्त करे छे. क्षपक स्थिति प्राप्त थाय तो जीवने क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे, ने जो क्षयोपशम स्थितिमां होय तो जीव क्षयोपशम सम्यक्त्वी थाय छे. वळी ते कहे छे के आ जग्याए—चोथा जीवस्थानके—क्षायक सम्यक्त्वी जीव आयुष्यनो बंध न कर्यो होय तो सात प्रकृतिनो क्षय कर्या पछी मोक्षे जाय छे. आयुष्यनो बंध पड्यो होय तो ते सम्यक्त्वी एक बे त्रण भव करी मोक्षे जाय छे. एटले क्षायक सम्यक्त्वी भव न करे एम कांई चोकस होतुं नथी. ते जीव आयुष्य बांधे तो देव नेरयिक के युगलनुं आयुष्य बांधे छे. देव—नेरयिकनुं आयुष्य बांधे तो देव के नेरयिक ने मनुष्यनो भव करी मोक्षे

जाय. युगलनुं आयुष्य बांधे तो युगल देव ने मनुष्यनो भव करी मोक्षे जाय. कृष्ण श्रेणिक विगेरेने केटलाको क्षायक सम्यक्त्वी कहे छे, कारणके तेओनुं सम्यक्त्व घणुं शुद्ध ने उच्च हतुं.

सिद्धान्तपक्षी कहे छे के कार्मग्रंथीय अभिप्राय ए प्रमाणे भले कहं पण तेम सैद्धान्तिक अभिप्राय नथी. चोथाथी सातमा जीवस्थानक सुधी स्थित जीवो एकला (केवळ) उपशम भाव के क्षपकभावने मेळवी शकता नथी ते स्थानको उद्योग–पुरुषार्थवाळा छे. त्यां रहेला जीवो सामान्य रीत्या क्षणे क्षणे उतर चड करे छे. एटले प्रकृतिने (अनंतानुबंधी चतुष्क ने दर्शन मोह त्रीकने) जीवो सर्वथा प्रलय–नाश करी शकता नथी, तेम उपशमावी शकता नथी. जो त्यां नाश थाय, वा उपशम थाय तो जीव औपशमिक के क्षायिक भावने मेळवा शके एटले के प्रकृति उपर विजय मेळववा जीवो त्यां बहु प्रयत्न करे छे, पण सर्वथा मेळवी शकता नथी. ग्रंथ पक्षी कहे छे के त्यां सर्वथा सात प्रकृतिनो उपशम के क्षय थाय छे.

सिद्धान्त पक्षी कहे छे के, जीव प्रथम स्थानकमां रहेल जे गाढ मिथ्यात्वनां अखूट पटलो हतां तेने मूकी चोथा जीवस्थानके आवे, पण तेथी मिथ्यात्वनी झांखी छाया त्यां नाश पामती नथी. ए स्थिति जीवने वधघटपणे सातमा जीवस्थानक सुधी होय छे. एटले त्यांसुधी अनंतानुबन्धी चतुष्कने दर्शन मोहनी त्रीक–ए सात प्रकृतिनो उदय–अनुदय वाराफरती ताप छायानी जेम जीवने रह्या करे छे. सातमा जीव-

स्थानकने छोडी जीव आगळ निवृत्ति बादर जीवस्थानक (अपूर्वकरण)मां प्रवेश करे छे, त्यां तेने ए सात प्रकृतिनो सर्वथा नाश थाय छे, वा उपशम थाय छे. आठमा जीवस्थानके क्षपक भाव–श्रेणि–तेम उपशमभाव शरु थाय छे, पण ते स्थिति चोथाथी सातमा सुधी आववी नथी. आठमा जीवस्थानके जीव क्षपक भावमां प्रवेश करे तो ते जीव ते भवमां अवश्य मोक्षमां जाय. उपशम श्रेणिमां प्रवेश करे तो तेनो मोक्ष ते भवमां थाय ए चोक्कस नथी, पण क्षपक भावमां आवे तो ते जीवने ए मार्ग (मोक्षमार्ग) नजीक छे. एटले क्षपक भाव त्यां क्षपक श्रेणिने क्षायक सम्यक्त्व क्षायक चारित्र छे. पण तेओ क्षपक–(क्षायक) भाव सिवाय आवता नथी.

ग्रंथपक्षी क्षपक–उपशम भाव चोथाथी शरु थवानुं माने छे, पण त्यां ए उभय भावो भिन्न भिन्नपणे नथी, पण मिश्र (ऐक्यमां) भावमां रह्या छे. जेम वृक्षने मूळ स्कंध ने शाखाओ होय छे, तेम आ चौद जीवस्थानकरूप वृक्षने मूळ स्कंध ने शाखाओ छे. मिथ्यात्व जीवस्थानक मूळरूप छे, स्कंधरूप चोथाथी सातमा सुधीनां जीवस्थानको छे, आठमाथी अगियारमा सुधी जीवस्थानको, उपशम क्षपक भावरूप बे श्रेणिओ रूप बे शाखाओ छे. जेम स्कंधमांथी डाळीओ निकळे, तेम आ बे श्रेणिओ चोथाथी सातमा जीवस्थानकरूप स्कंधमांथी निकळी छे. डाळीओनुं मूळ स्कंध छे, तेम आ बे श्रेणिओनुं मूळ, स्कंधरूप ए जीवस्थानको छे. एटले स्कंधमां शाखाओ-

नो भाव रहे छे, तेम आ उपशम–क्षपक श्रेणिओनो मिश्रभाव त्यां (ए जीवस्थानकोमां) रह्यो छे. एटले त्यां उपशम–क्षपक एम बे भावो गणाय खरा पण पृथक् रीत्या रह्या नथी. एटले ए स्कंधरूप चार जीवस्थानकोमां एकलो क्षयोपशम–मिश्र–भाव छे. तेथी त्यां क्षायोपशमिक सम्यक्त्व क्षायोपशमिक चारित्र शास्त्रकारो कही रह्या छे.

ग्रंथपक्षी कहे छे के ग्रांथीय अभिप्रायो तमारा कथनथी भिन्न थाय छे. (शिवशर्मसूरिकृत) कर्मप्रकृतिमां सत्ताप्रकरणमां ए संबंधी शुं कहे छे ते तमो जुओ.

गाथा ५ मी.

बिइय तइएसु मिस्सं नियमा ठाणनवगम्मि भयणिज्जं
संजोयणा उ नियमा, दुसु पंचसु होइ भइयवं ॥ (५)

(अर्थ) बीजा त्रीजा जीवस्थानके मिश्रमोहनीयनी सत्ता निश्चयथी छे, ने मिथ्यादृष्टिथी आरंभी (बिजा त्रिजा सिवाय) उपशांत मोहनीय जीवस्थानक सुधी (ए नव)मां मिश्र मोहनीयनी सत्ता विकल्पे छे. (एटले ए सत्ता कोई जीवने छे ने कोईने नथी). हवे उत्तरार्ध गाथामां शुं कहे छे ते जुओ. संयोजना–अनंतानुबंधी चार प्रकृति पेहला बे जीवस्थानके चोक्कस छे, कारणके ए स्थानवर्ती जीवो अनन्तानुबंधी चतुष्कने अवश्य बांधे छे. त्रिजाथी अप्रमत्त–सातमा जीवस्थानक पर्यंत–पांच स्थानकमां अनन्तानुबन्धीनी चारनो सत्ता (संयोजना) विकल्पे होय छे. एटले जो जीवे उद्वलना (आ

शब्द त्यांनो छे) करी होय तो ए सत्ता न होय; पण जो न करी होय तो (क्षयोपशम के उपशम भावमां वर्तंतो होय तो) ए सत्ता होय छे. आ विषय विशेष ने विशेष ज्ञातव्य छे एटले ए संबंधी वार्ता अत्र घणी छे, पण मुद्दासर जे कथ्य छे ते नीचे गाथा आपुं छुं. जुओ सत्ता प्रकरण (गाथा १२ मी)

तिन्नेग तिगं पणगं, पणगं पणगं च पणगमह दोन्नि ॥
दस तिन्नि दोन्नि मिच्छा, इगेसु जावोवसंतोत्ति (१२)

(अर्थ) मिथ्यादृष्टिथी उपशांत मोहनीय पर्यंत जीवस्थानकोमां प्रकृतिनी सत्ता आ प्रमाणे छे. (बहु संक्षेपमां जणावी छे. अवश्य लक्ष खेंचशो.) मिथ्यादृष्टि जीवस्थानके २८ प्रकृतिनी २७ नी ने २६ नी सत्ता छे. एटले कोई जीवने २८ नी तो कोईने २७ ने कोईने २६ नी छे. सास्वादान जीवस्थानके २८ नी सत्ता छे. मिश्र जीवस्थानके २८-२७ ने २४ नी सत्ता छे. एनी समजण आम छे के २८ नी सत्तावाळो जीव मिश्र जीवस्थानके आव्यो होय तो तेने २८ नो सत्ता छे. फरी मिथ्यादृष्टिभावमां जेणे सम्यक्त्वनी उद्वलना करी छे ने मिश्र जीवस्थानकमां मिश्रमोहनीयने प्राप्त थयो छे, ते आश्रयी ते जीवने २७ नी सता छे; ने २४ नी सत्तावाळा मिथ्यादृष्टि जीवने आश्रयी २४ नी सत्ता होय छे. अविरति सम्यग्दृष्टि जीवस्थानके २८-२४-२३-२२-२१ ए पांच प्रकृति सत्तानां स्थानो छे. त्यां औपशमिक सम्यग्दृष्टि अथवा क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवनी अपेक्षाए २८ नी सत्ता छे. २८ नी सत्तावाळा जीवने अनन्तानुबन्धी चतुष्कनो क्षय थतां २४ नी

सत्ता होय छे. क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवने ए चार प्रकृतिनो क्षय थया पछी मिथ्यात्व क्षीण थाय त्यारे २३ नी सत्ता होय छे. ते जीव ज्यारे मिश्र मोहनीयने क्षय करे, त्यारे २२ नी सत्ता होय छे, ने ज्यारे सम्यक् मोहनीयने क्षय करे, त्यारे २१ नी सत्ता होय छे. देशविरति जीवस्थानके एज प्रकारे पांच सत्तास्थानो छे. प्रमत्त जीवस्थानके तेमज छे ने अप्रमत्त जीवस्थानके पण तेमज जाणवुं. हवे २४ ने २१ आ बे प्रकृतिसत्तानां स्थान आठमा जीवस्थानके छे. त्यां उपशमश्रेणिप्राप्त जीवने २४ प्रकृतिनी सत्ता छे. क्षपक श्रेणिप्राप्त (क्षायक सम्यग्दृष्टि) जीवने २१ प्रकृतिनी सत्ता छे. नवमा जीवस्थानके २४–२१–१३–१२–११–५–४–३–२–१ आ दश प्रकृति सत्तास्थान छे. २४ प्रकृतिनी सत्ता जे कही, ते उपशम श्रेणिनी अपेक्षाए छे. ए सिवाय नव स्थान (२१ थी ते १ सुधी) रह्यां, ते सर्व क्षपक श्रेणी आश्रयी छे. दशमा जीवस्थानके २४–२१–२१ आ त्रण सत्तास्थान छे. एकादशमा जीवस्थानके २४ ने १ आ बे सत्तास्थान छे. ए प्रमाणे कही ग्रंथपक्षी एम कहे छे के चोथा जीवस्थानके २८ प्रकृतिनी सत्ता जेम छे, तेम केटलाक जीवो–जेओ क्षपक भावमां प्रवेश करे छे तेओ–ने २१ प्रकृतिनी सत्ता होय छे. सिद्धान्त पक्षी जोके २१ प्रकृतिनी सत्ता आठमा जीवस्थानके माने छे, पण अमारुं मानवुं ग्रंथकारना कहेवा प्रमाणे उपर मुजब छे. एटले चोथा जीवस्थानके क्षायक सम्यक्त्व शरु थाय छे, ए वस्तु बराबर छे.

अत्र एक वस्तु तटस्थ रीते जाणवा जेवी ए छे के सिद्धान्तकारथी ग्रंथकार जेम अलग थता गया छे, तेम ग्रांथिक आचार्यो पण परस्पर अलग थता गया छे. आ संबंधी कर्मप्रकृतिकार आचार्य पोते सत्ता प्रकरणमां लखे छे के–

संखीण दिट्ठि मोहे, केइ पणवीसइंपि इच्छन्ति
संजोयणाण पच्छा नासं तेसिं उवसमं च ।

(अर्थ) केटलाक आचार्यो २५ प्रकृतिओनुं सत्तास्थान इच्छे छे, एटले दर्शन मोह त्रीकनो प्रथम नाश के उपशम थाय पश्चात् संयोजना (अनन्तानुबन्धी) नो नाश के उपशम थाय छे. कर्मप्रकृति टीकाकार (मलयगिरि) कहे छे, बीजा आचार्यो भले तेम कहे, पण कर्मप्रकृतिकार आचार्य इच्छता नथी, ने ते कहे छे के दृष्टिमोहनो प्रथम नाश थाय छे तेम कहेवुं, ते पूर्वाचार्यना कथनथी विरुद्ध छे. त्यां चूर्णिकारनो टूकडो नोंधी बतावे छे के ' तं आरिसे न मिलइ तेण न इच्छिज्जए ' पूर्व ऋषिओना कथन साथे मळतुं न थाय ते इच्छवायोग्य नथी.

सिद्धान्त पक्षो कहे छे के, मारे अत्र हवे ए कथनीय छे के पूर्वर्षिओना कथन साथे जेम कथन मळतुं न आववाथी ते कथन अस्वीकार्य छे, तेम सिद्धान्तकारथी ग्रांथिक अभिप्रायो (कर्मप्रकृति पंचसंग्रह विशेषावश्यक विगेरेनां रहस्यो) ज्यारे भिन्न पडे छे, तो तेनो केवी रीते स्वीकार करवो ? सूत्रकार चोथाथी सातमा सुधीमां एकज मिश्रभाव–क्षयोपशमभाव कही रह्या छे, त्यारे उपर्युक्त ग्रंथकारो उपशम भाव, क्षप-

कभाव, क्षयोपशमभाव त्रणे भावो कही रह्या छे.

ग्रंथपक्षी कहे छे के, अहो सिद्धान्तपक्षी ! तमो तमारी बाजु माटे गमे तेम कहो, पण तेथी शुं ? में तमारी समक्ष मारा पक्षना ग्रंथोथी पूरावा मूक्या; तमारा पक्षना पूरावा एवा सबळ होय तो मूको. मुखनी मात्र उपरटपके वार्ता करवाथी कांई अर्थ नहि.

सिद्धान्त पक्षी कहे छे के, अहो ग्रंथपक्षी ! तमारे एवां प्रमाण जोईतां होय तो तैयार छे. महावीरे दीक्षा लीधी, त्यारे तेओए छट्ठा जीवस्थानकमां प्रवेश कर्यो. त्यां तेमनुं क्षायोपशमिक चारित्र चाल्युं छे, पण क्षायिक चारित्र तो नहि. (जो तीर्थंकरने क्षायोपशमिक भाव छे, तो पछी बीजा कोने क्षायिक भाव हशे !) जुओ ! आचारांग सूत्र अध्ययन चोविशमुं. सूत्र १०१९ मुं.(रवजीभाई देवराजनुं छपावेल,२३८ पृष्ठ)

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जव नाणे नामं णाणे समुप्पन्ने ॥

(अर्थ) 'क्षायोपशमिक सामायिक चारित्रने स्वीकारता श्रमण भगवान् महावीरने मनःपर्यव ज्ञान नामे ज्ञान प्राप्त थयुं.' महावीरे चारित्र स्वीकार्युं, पण क्षायोपशमिक, नहि के क्षायिक. एटला उच्च कोटिना पुरुषे सिद्धा चोथाथी एकदम छट्ठा सातमामां प्रवेश कर्यो. त्यां पण तेनो क्षायोपशमिक भाव सूत्रकारे जणाव्यो. तो हवे चोथा जीवस्थानकमां क्षायिक भाव बीजा कोईने होय ए केम मानी शकाय ? जो तेमने ते भाव

नहि हतो, एम सूत्रकारना कथनपर विश्वास होय तो पछी इतर जीवने त्यां क्षायक भाव थाय छे ए वार्ता केटली असंभवित छे ? हवे एम शंका थशे के क्षायिक चारित्र नहि, पण क्षायिक सम्यक्त्व तो होय. तो उत्तर ए छे के क्षायक सम्यक्त्व ए उपर्युक्त सात प्रकृतिनो क्षय थया सिवाय थाय नहि, एम उभय (ग्रंथकार–सिद्धान्तकार) नो अभिप्राय छे. हवे सिद्धान्तकार आठमा जीवस्थानके सात प्रकृति क्षय थाय छे एम कहे छे, तेनो पूरावो नीचे जुओः–

समवायांगना समवाय २१ मे(आगमोदयसमिति) पृष्ट ३९

निअट्टि बादरस्सणं, खवित सत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एकवीस कम्मंसा संत कम्मा प...त...

(अर्थ) निवृत्ति बादर (अपूर्वकरण) जीवस्थानक–ज्यां मोहनीय कर्मनी सात प्रकृतिओ क्षय थई छे,–तेने सत्तामां एकविश प्रकृतिओ कर्मांश सत्ता रूपे रही छे, ते आ....

सूत्रमां एकविश प्रकृतिओ नोंधी छे, पण अत्र ए लखवामां आवेल नथी.

सिद्धान्तपक्षी कहे छे के, अहो ग्रंथपक्षी ! उपर आपेला प्रमाणथी हवे तमोने खात्री थई हशे के सात प्रकृतिओनो क्षय आठमा(अपूर्वकरण) जीवस्थानके थाय छे, पण ते पहेला जीवस्थानके थतो नथी. आठमाथी अगियारमा सुधी उपशम भाव छे, ने आठमाथी (अगियारमा सिवाय) बारमा सुधी क्षपकभाव छे, तो त्यां सूत्रकारे बे श्रेणीओ कही. तेम ग्रंथकारे चोथाथी

सातमा सुधी जीवस्थानके त्रण भाव छे तो त्यां त्रण श्रेणीयो केम कही नहि होय ?

हवे आयुष्यनो बंध कया भावमां थाय ए संबंधी अत्र स्वरूप कथन छे. ग्रंथपक्षी कहे छे के चोथाथी सातमा जीवस्थानक सुधीमां गमे ते भावो होय, पण आयुष्यकर्मनो बंध जीवो त्यां करे छे, ने नरक गति देवगतिमां जाय छे.

सिद्धान्तपक्षी कहे छे के उपशम के क्षपक भावमां जीव आयुष्यनो बंध केवी रीते करी शके ? कारणके आयुष्यनो बंध पडे छे, ते प्रकृतिना उदय भावमां होय छे पण उपशम के क्षपक भावमां आयुष्यनो बंध पडी शकतो नथी. चोथा जीवस्थानके क्षयोपशम भावमां जीव होय, त्यां गमे ते गतिनो बंध करी जीव त्यां जाय ए सहज छे, पण जेणे अनन्तानुबन्धी विगेरेनो उपशम कर्यो होय वा क्षय कर्यो होय, ते जीव नरकमां जाय वा देवगतिमां जाय ए केम बनी शके ? नरकमां जवाने अनन्तानुबंधी प्रकृतिओ होवी जोईए, ने तेनो ते जीवे उपशम के क्षय कर्यो, तो आमां प्रत्यक्ष ए गुंचवाडो छे के जीवे प्रकृतिओने उपशमावी के क्षय करी ए सत्य छे के नरकमां आयुष्यनो बंध करी जाय ते सत्य छे ? आमां सत्य शुं ? वन्ध्या कहे मारे पुत्र छे, वा पुत्र कहे के मारी माता वन्ध्या छे ! आना जेवो ए संबंध जणाय छे. आ अभिप्रायने मळतुं पंचसंग्रहकार जे कांई कहे छे, तेमांथी स्वल्प भागनुं अवतरण मूकुं छुंः—

पंचसंग्रह, भाग ४, १३६९ पृष्ठ, (जामनगरनुं छापेलुं)

' सेसा उभय सेढीसुत्ति '

शेषाः शेषगुणस्थानकभंगा उभय श्रेण्योर्यथायोगं दृष्टव्याः ते चैवं 'दो चउसुत्ति' चतुर्षु अपूर्वकरणा निवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशान्तमोहेषु गुणस्थानकेषूपशमश्रेणिमधिकृत्य प्रत्येकं द्वो भंगौ. तद्यथा मनुष्यायुषउदयो मनुष्यायुषः सत्ता एष विकल्पः परभवायुर्बंधकालात् पूव. अथवा मनुष्यायुषउदयो देवमनुष्यायुषी सती एष परभवायुर्बंधोत्तरकालं. एते ह्यतिविशुद्धत्वात् परभवायुर्न बध्नन्ति. पूर्वबंधे चायुषि उपशमश्रेणिं प्रतिपद्यन्ते देवायुष्येव.(परंच) नान्यायुषि, तदुक्तं कर्मप्रकृतौ 'तिसु आयुगेसु बद्धेसु जेणसेढिं न आरुहइ' इति तत उपशमश्रेणिमधिकृत्य एतेषु द्वौ द्वावेव भंगौ. पूर्वबद्धायुष्कास्तु क्षपकश्रेणिं न प्रतिपद्यन्ते ततः क्षपकश्रेण्यामेतेषामेक एव भंगः तद्यथा मनुष्यायुष उदयो मनुष्यायुषः सत्ता ॥

पंचसंग्रहकार एम कहेवा इच्छे छे के उपशम ने क्षपक आ उभय श्रेणीओ अति विशुद्ध होवाथी परभवनुं आयुष्य बांधता नथी. पूर्वे–एटले श्रेणिपर चड्या पहेलां–जो जीवे आयुष्य बांध्युं होय तो ते पण देवनुं आयुष्य बांधेल होय, तो ते उपशम श्रेणिपर चडी शके. ते वार्ता कर्मप्रकृतिमां पण छे (पंचसंग्रह ने कर्मप्रकृति बन्नेना टीकाकार एकज छे, ने ते मलयगिरि) के 'नरक तिर्यंच ने मनुष्यनुं आयुष्य बांधेल

जीव उपशम श्रेणिपर चडी शकतो नथी.' एटले उपशम श्रेणिवाळा चार जीवस्थानकमां बे भंग होय छे. मनुष्य आयुष्यनो उदय ने तेनी सत्ता ए एक भंग; बीजो भंग—आयुष्य बांध्या पछी मनुष्य आयुष्यनो उदय ने मनुष्य देव आयुष्य सत्ता. आयुष्य बांधेल जीव क्षपक श्रेणिने पामी शकतो नथी, तेथी ते जीवने एकज भंग होय छे. मनुष्य आयुष्यनो उदय ने तेनी सत्ता.

आ उपरथी सिद्धान्त पक्षी कहे छे के उपशम क्षपक श्रेणिओ—जेओए प्रकृतिनो उपशम—क्षय कर्यो छे—ते अतिविशुद्ध होवाथी आयुष्यने बांधता नथी—तो ते उपर्युक्त भाववाळा चोथाथी सातमा स्थानक सुधीना जीवो परभवनुं आयुष्य केम बांधी शके? कारणके जे प्रकृतिनी सत्ता अपूर्वकरण आदि जीवस्थानकोमां छे—तेटलीज सत्ता क्षपकभावमां चोथाथी सातमा सुधीमां छे. मतलब ए छे के भाव ने प्रकृतिनी सत्ता उपरनां जीवस्थानकोमां छे, तेज सत्ता ने भाव नीचेना जीवस्थानकोमां छे. उपरनां जीवस्थानकमां स्थित जीवो आयुष्यने बांधता नथी, ने बांधे छे, तो ते उपशम श्रेणि पाम्या पहेलां देवगतिनुं आयुष्य बांधे छे. तेम आ जीवस्थानकोमां तेवा भाव छतां ते स्थितिनी विरुद्ध ग्रंथ पक्षी जाय छे, तो शुं खरेखर आ दुर्घट घटना छे एम नथी समजातुं? सूत्रकार आ विषे आम कहे छे के अनन्तानुबन्धी चतुष्कनो क्षय करे तो जीव नवीन कर्मने न न बांधे, ने तत्प्रत्ययित (तेना आश्रित) मिथ्यात्व—दर्शन मोहने साफ करे. उतराध्ययन, २९ मुं अध्ययन, प्रश्न १.

संवेगेण भन्ते जीवे किं जणयइ संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ ॥*

(अर्थ) संवेगथी जीव अनुत्तरा एवी धर्मश्रद्धाने उत्पन्न करे छे, ने तेथी जीव अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभनो क्षय करे छे. नवीन कर्मने बांधतो नथी, तत्प्रत्ययित (कषाय आश्रित) मिथ्यात्व–दर्शन मोह–ने साफ (नाश) करे छे, दर्शननो आराधक थाय छे, दर्शन अतिविशुद्ध होवाथी–सात प्रकृतिनो क्षय थवाथी केटलाको तेज भवमां मोक्ष जाय छे, शोधित× विशुद्ध होवाथी–सम्यक्त्व अत्यंत निर्मळ होवाथी जीव त्रीजा भवने उल्लंघता नथी.

सिद्धान्त पक्षी कहे छे के आटलां सूत्रनां प्रमाण आप्या पछी मारुं एज कहेवुं छे के सात प्रकृतिनो क्षय ने उपशम ज्यां थाय छे, त्यां उपशम ने क्षपक श्रेणिओ छे, त्यां जीवने अपूर्व करणनी शरुआत थाय छे. अपूर्व करण एटले जीवे क्यारे पण प्राप्त नहि करेल एवी ने क्यारे पण पतित नहि थनारी जग्या. जेमां जीव प्रवेश करतां क्षपक भावने क्षपक श्रेणिने पामे छे, तेज निवृत्ति बादर अष्टम जीवस्थानक छे. जीव त्यां

---

* सर्व पाठ त्यां जोवो.

× आ जग्याए केटलाक अर्थकारो उपशम सम्यक्त्व ना केटलाक क्षायक सम्यक्त्व होवानो आग्रह करे छे, पण सूत्रकारे उपशम क्षायक के क्षयोपशमनी कांई वार्ता करी नथी. क्षायक सम्यक्त्व नथी ए तो उपर्युक्त सूत्र ने पंचसंग्रहथी स्पष्ट छे. उपशम के क्षयोपशम होवा संभव छे.

क्षायक सम्यकूत्वने प्राप्त करे छे. मोह अंधारना अगाध प्रखर पटलो केवळ त्यां प्रलय पामवानी शरुआत करे छे. क्षीण मोह जीवस्थानक जता जीवने ते पटलो पूर्ण नाश पामे छे. आ अपूर्व करणमां आवतां जीव आयुष्यनो अबंधक थाय छे. त्यां मात्र जीवने मनुष्य आयुष्यनो उदय ने मनुष्य आयुष्यनी सत्ता शेष रहे छे.

आवश्यक विचार.

वाचको ! विशेषावश्यक, पंचसंग्रह, कर्मप्रकृति विगेरे विशाळने उच्च दार्शनिक पुस्तको छे. तेमां वस्तु ने तत्त्वो घणां विशाळ समायां छे. जेओने उपर्युक्त विषयो—आयुष्यकर्म ने क्षायक सम्यकूत्व विषे सारुं समजवुं होय, तेमणे जरुर ते पुस्तको दृष्टितळे विचारपूर्वक अवगाही जवां जोईए. जे जैन-समाज यथातथ्य वांच्या सिवाय वा गुरुदृष्टिथी के निर्मळ दृष्टिथी विचार्या सिवाय उलट सुलट वार्ता करे छे, तेमणे ए वार्ता ख्यालमां लेवी जोईए. एटले ते पुरुष कई बाजुमां वा कया मुद्दासर बोले छे, ते पोतेज पोतानी मेळे समजी जशे.

आ साथे मारे एक वार्ता अत्र कहेवी जोईए के आवां दार्शनिक उच्च पुस्तको मूळ आगमो उपरांत जैन दर्शन तत्त्वज्ञानने सारुं समजावी रह्यां छे, एटलुंज नहि पण जैनदर्शनपर घणो सारो प्रकाश आपी रह्यां छे, परन्तु दुःखनी वार्ता ए छे के ते दार्शनिक ग्रंथो मूळ आगमो—जे गणधर मुखथी विनिर्गम थया छे तेथी (उपरांत देवर्द्धि गणि क्षमा-

श्रमणादि आचार्यनी महासमितिथी संमत थई पत्रपर आरूढ थयेल छे तेथी) केटलीक वखते केटलीक बाबतोपर भिन्न पडे छे. हवे आ वस्तु समजी शकाती नथी के आपणे वाचकोए मूळ आगमो छे तेनापर प्रथम विश्वास मूकवो के जे उपर्युक्त ग्रंथो छे तेनापर विश्वास मूकवो ? मूळ आगमो छे ते गणधरमुखथी निर्गम थयेला छे, त्यारे ग्रंथो छे ते मूळ आगमोथी ने पूर्वगतनी वस्तुमांथी एकेक आचार्ये स्वतंत्र रीत्या उद्धृत करेला छे. आम छे तथापि घणां सारां दार्शनिक पुस्तकोना अभ्यासीओ दार्शनिक पुस्तकोपर खास भार आपी रह्या छे, त्यारे केटलाको सूत्रो–मूळ आगमोना यत्किंचित् अभ्यासीओ वा सारा अभ्यासीओ आगमोपर सर्व भार आपी रह्या छे. एटले परिणाम ए आव्युं छे के बन्ने पोते जे बाजुमां छे तेने पकडी रह्या छे ने बीजी बाजुने फेंकी देता होय एम जणाय छे.

आटलुं तो खरुं छे के वस्तुस्वरूप वखतना वहेवा साथे जेम पलटो करे छे, तेम विचारो पण काळना परिवर्तन साथे पलटो लेता होय छे. आम कहेवामां मतलब ए छे के आगमकाळमां जे विचारो हता, ते विचारो लांबो काळ जतां सुधी तेना ते तो न ज रह्या. निर्युक्तिकाळ आव्यो, त्यारे ते विचारोमां कांईक पण अंशे पलटो थयो होय. त्यारपछी सारां दार्शनिक पुस्तक थवानो काळ आव्यो, वा भाष्यादि बनाववानो काळ आव्यो, ते वखते ते विचारोमां निर्युक्तिकाळना करतां विशेष पलटो थयो होय एम लागे छे. त्यारपछी

हृत्तिकारनो काळ आवी पहोंच्यो, तेमां तो आपणे जोईशुं तो जणाशे के कोई कोई जग्याए यत्किंचित् अंतर छे ने कोई कोई जग्याए आसमान जमीन वच्चे अंतर होय तेटलुं अंतर छे. ए विषे आधुनिक विद्वानो घणा तर्कवितर्को करी रह्या छे. आम थवामां कारण जैन श्रेणिए विचारीए तो ज्ञानावरणीय के मोहनीय कर्मना पडदाओ होय एम जणाय छे.

बीजुं कहेवुं ए छे के समाजनो मोटो भाग उच्च–सत्य वस्तुथी हमेशां वंचित थतो जाय छे, ने सामान्य रीते उतरती वस्तुनो रसिक थतो जाय छे. मनुष्यबुद्धिने जेटलुं सेळभेळ–कचरावाळुं–सत्य प्रिय लागे छे, तेटलुं निर्मळ–शुद्ध सत्य प्रिय लागतुं नथी. एटले निर्मळ सत्य सामुं जेटलुं जोवुं जोईए, वा तेनी सामुं जेटलुं वधवुं जोईए तेना करतां सेळभेळ सत्य सामुं जैन समाज वधारे धसतो होय एम जणाय छे. दर्दीने आम्लादि (खटाश आदि) रसो प्रिय लागे छे, तेम सहज असत्यथी मिश्र वस्तु-विवेचनपर जैन समाजने रस आवे छे. आजे तमो जोशो तो मालूम पडशे के प्राचीन साहित्यनां दफतरो, अर्वाचीन–नव विचारोथी संकलित थयेलां दफतरोथी दबातां जाय छे. ए प्राचीन पुस्तकोमां केटलुं उंडाण छे वा केटलुं रहस्य छे, ए मनुष्यबुद्धिने आजे दुर्गम, दुःस्पर्शनीय, नीरस जणाय छे. आजे जनता वस्तुतत्त्वने समजवामां प्रकीर्ण पुस्तकोनो जेटलो आधार ले छे, तेटलो आधार मूळ पुस्तकोनो लेवा खुशी नथी.

आ संबंधी मारे कहेवुं जोईए के सत्यथी द्रव्य चक्षु–ने

भावचक्षु (शास्त्रो) छतां जनता केम खसती जाय छे, ए संबंधी जनता समजे ते माटे नीचे पूरावा आपुं छुं.

हमणां बृहत् (वेद) कल्प, अर्थ—भावार्थ साथे व्हार पड्युं छे, तेमां ने हिंदी अर्थ साथे बहार पड्युं छे तेमां जोशो. तेना पहेला सूत्रमां ताल प्रलम्ब छे, तेनो अर्थ 'केळां' कर्यो छे, एटले के सूत्रमां 'ताल'—'ताड' शब्द छे, छतां 'केळां' अर्थ कर्यो छे. ए जग्याए एवी समजण आपी छे, के ताड वृक्षनुं ताड-फळ कोई सारा मनुष्य वापरता नथी, ने तेमां केफ छे माटे तेनो अर्थ केळां समजवो. हवे आ जग्याए वाचके समजी जवुं जोईए के कांतो शास्त्रकारो ताड वृक्षना फळने ओळखता नहि हशे, के कांतो अर्थ करी व्हार पाडनारे कोई कोषमांथी ए ताड शब्दनो अर्थ केळां जोयो हशे.

उत्तराध्ययनना १८ मा अध्ययनमां संयत राजा मृग मारवा निकळ्यो छे. त्यां गाथार्थ ने वृत्त्यर्थ छे कांई, ने टबामां ने मुखथी अर्थ करे छे कांई! ते अध्ययननी पांचमी गाथार्थ— तस्सागए मिए पासं वहइ से नराहिवे ॥ ते मुनिना पार्श्वमां आवेला मृगोने ते नराधिप हणे छे—मारे छे. त्यारे तेनो अर्थ अज्ञ के सुज्ञ आम करे छे के, बाणथी विंधायेलो मृग मुनि पासे आवीने पड्यो! त्यां सातमी गाथामां अणगारो मणाहओ ॥ अणगार—मुनि, मणा—मनाक् (थोडा), हतः—हण्या. आम अर्थ छे, तेना बदलामां अज्ञ के सुज्ञ आम अर्थ करे छे के 'अणगारनो मृग हणायो.'

श्री महावीर पासे जमालीए भगवती सूत्रमां कह्युं के 'जेम तमारा शिष्यो छद्मस्थपणे गया तेम हुं गयो नथी; हुं केवळी थई भवत् पासेथी निकळ्यो छुं.' त्यारे हवे अर्थ अंदर जोया सिवाय के विचार्या सिवाय नीचे प्रमाणे करे छे. 'जेम तमारा शिष्यो छद्मस्थपणे गया ने छद्मस्थपणे आव्या तेम हुं आव्यो नथी. हुं केवळी थईने आव्यो छुं.' आमां केटलो उंडो फेर छे, ते वांचकोए विचारवानुं छे.

उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन ने चारित्रनो आराधना विषे भगवती सूत्र श० ८ ऊ० १० मा मां वार्ता चाली छे. तेनो अर्थ वृत्तिकारे एम लख्यो छे, के तेना विषे उत्कृष्ट आराधना एटले उत्कृष्ट प्रयत्न-उत्साह, संभाळ, ने मध्यम आराधना एटले मध्यम प्रयत्न, संभाळ विगेरे छे. त्यारे तेना विषे कांई जुदो ज अर्थ भिन्न भिन्न व्यक्तिओए लख्यो छे. आम अनेक स्थळे अनेक व्यक्तिओ पंडितो के पंडितंमन्यो भूलो करी रह्या छे, ने ते भूलो स्वछंदपणे तेओ मुखेथी करी रह्या छे, ने पुस्तकोपर लखी रह्या छे. विचारो जनवर्ग के जे केवळ अज्ञानाना वमळमां गुंथायो छे, ते शुं समजी शके के शुं पूछी शके ? शोक ए छे के ते विद्वानो के अविद्वानो (विश्वासु जनो) मूळमां के मूळने स्पर्श करता अर्थमां नीची दृष्टि करीने के स्वच्छंद रोकीने लेश पण जोता नथी. उद्धत दृष्टिथी के ममकार बुद्धिथी तेओ पोताना विचारोने चलावी रह्या छे. परिणाम ए आव्युं छे के समाज सत्यथी पराङ्मुख थई असत्यमां अज्ञताथी तणातो जाय छे.

सहज विज्ञापना.

वाचको ! तमारी समक्ष सामायिक, आयुष्यकर्म ने क्षायक सम्यक्त्व विषे यत्किंचित् विचारणा मूकवामां आवी छे. तमो पूर्ववादी हो के उत्तरवादी हो, पूर्व पक्षमां हो के उत्तर पक्षमां हो, ग्रन्थपक्षी हो के सिद्धान्तपक्षी हो, उभयमांथी गमे ते बाजुना विचारना हो, पण तमोने इष्ट लागे तेमां तमो उभा रहेजो. बन्ने बाजुनो विचार करवानो जो तमोने वखत मळे तो ए कार्य पेहलुं करजो. तमारो आत्मा, उपर्युक्त सर्व वांची विचारी गया पछी ने प्रमाण आपेल छे ते ग्रन्थो ने आगमोने जोया पछी, तमोने जे कहे ते स्वीकारजो. लखनार तमोने गमे ते बाजुनो लागतो होय, अथवा ते गमे ते बाजुनो होय, पण वाचको ! तमो हंसचंचुसम निर्मळ बुद्धिथी दुग्धसम सत्य वस्तु—तत्त्वने पकडी लेशो. पाणी सम निरुपयोगी वस्तुने ग्रहण नहि करशो, एटलुंज नहि पण ममत्व के कदाग्रहना पगथीयांपर चढतां अवश्य अटकी जजो.

विद्वानो समजी जशे, पण उरे वांची मदे डोलशे,
मानीने खलने य द्वेष उरमां आ लेख जोई थशे;
अज्ञानी जन सत्य के इतर छे ना ख्याल लेशे अहो !
थाशे फोकट लेख एम मनमां रे ख्याल आवी जतो.

